3 राजधानी
कंगना के खिलाफ पोस्ट की होगी जांच

6 अभिमत
अनंत प्रस्थान पर स्वामी स्मरणानंद

11 विदेश
चीन की सेना ने अमेरिका की आलोचना की

12 स्पोर्ट्स
राजस्थान रॉयल्स ने दिल्ली कैपिटल्स को हराया

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 141
नई दिल्ली, शुक्रवार, 29 मार्च, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

गलत काम करने वालों को कीमत चुकानी होगी

राष्ट्रीय-10

केजरीवाल की ईडी हिरासत बढ़ी, कोर्ट में खुद की पैरवी

पूछा, क्या चार गवाहों का बयान सीएम को गिरफ्तार करने के लिए काफी है

नई दिल्ली में राउज एवेन्यू कोर्ट में पेशी के बाद बाहर जाते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री और आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल

राजेश कुमार। नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बृहस्पतिवार को करोड़ों रुपये के शराब नीति घोटाले में उन्हें गिरफ्तार करने के प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकार क्षेत्र पर सवाल उठाया, जो कि घोटाले में शामिल कुछ के बयानों के आधार पर किया गया। केजरीवाल ने कोर्ट से पूछा कि क्या ये चार बयान एक मौजूदा मुख्यमंत्री को गिरफ्तार करने के लिए काफी हैं। केजरीवाल ने आरोप लगाया, आबकारी नीति मामले में चार गवाहों ने मेरा नाम लिया है। क्या चार बयान एक मौजूदा मुख्यमंत्री को गिरफ्तार करने के लिए पर्याप्त हैं? अदालत ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की हिरासत एक अप्रैल तक चार दिन के लिए बढ़ा दी। जांच एजेंसी ने आप प्रमुख की सात दिन की हिरासत मांगी थी, लेकिन अदालत ने कहा कि उन्हें एक अप्रैल को सुबह 11 बजे अदालत के सामने पेश करना होगा। एक दिन पहले उनकी पत्नी सुनीता के बयान के अनुसार, केजरीवाल को शुक्रवार को 'पर्दाफाश' करना था।

केजरीवाल ने कार्यवाही के दौरान खुली अदालत में कहा कि जांच एजेंसी द्वारा दर्ज किए गए गवाहों के बयान किसी भी तरह से उन्हें कथित अपराधों से नहीं जोड़ते हैं और मामले में उनकी गिरफ्तारी पर सवाल उठाया। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने कहा कि मामले में सरकारी गवाह सरथ रेड्डी को उनके खिलाफ बयान देने के बाद जमानत मिल गई, जिन्होंने खुद भाजपा को 55 करोड़ रुपये का दान दिया था। मुख्यमंत्री ने कहा, मेरे पास इसके सबूत हैं। मनी ट्रेल स्थापित हो गया है क्योंकि उन्होंने गिरफ्तार होने के बाद धनराशि दान की थी। केजरीवाल की दलीलों पर ईडी के वकील अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने कड़ी आपत्ति जताई, जिन्होंने यह भी सवाल किया कि भाजपा को आबकारी शुल्क नीति मामले से जोड़ने का प्रयास क्यों किया जा रहा है। राजू ने दलील दी थी कि ईडी की पूछताछ में केजरीवाल के बयान टालमटोल वाले रहे हैं। उन्होंने कहा, वह (केजरीवाल) गैलरी में खेलना चाहते हैं। उन्हें कैसे पता है कि ईडी के पास कितने दस्तावेज हैं? यह सब कल्पना है... आप को रिश्वत मिली थी जिसका इस्तेमाल उन्होंने गोवा चुनाव में किया था। इसकी एक स्पष्ट श्रृंखला है। .. जो पैसा वे कहते हैं कि भाजपा के पास आया, उसका शराब घोटाले से कोई लेना-देना नहीं है। इसमें कोई फायदा नहीं है... सीएम कानून से ऊपर नहीं हैं। वह एक साधारण आदमी हैं। हमारे पास यह दिखाने के लिए सामग्री है कि इसी व्यक्ति ने मांग की थी 100 करोड़ की रिश्वत।

ईडी ने अपने रिमांड आवेदन में कहा कि केजरीवाल से हिरासत में पूछताछ के दौरान पांच दिनों तक उनके बयान दर्ज किए गए, लेकिन वह 'गोलमोल जवाब दे रहे है।' केजरीवाल ने आरोप लगाया कि ईडी की जांच के दो उद्देश्य थे- एक, देश के सामने यह माहौल बनाना कि आम आदमी पार्टी भ्रष्ट है और उसने घोटाला किया है और दूसरा, पैसा इकट्ठा करने के लिए 'जबरन वसूली रैकेट' चलाना। केजरीवाल ने कहा, असली शराब घोटाला शुरू होता है ईडी की जांच के बाद। जब ईडी की जांच शुरू होती है। ईडी की जांच के दो मकसद हैं। एक स्मोकस्क्रीन क्रिएट करना पूरे देश के सामने कि आम आदमी पार्टी ने चोरी की है, आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचारी हैं, आम आदमी पार्टी ने शराब घोटाला किया। उसके पीछे जबरन वसूली रैकेट करना जिसका जरूरी है वो पैसे इकट्ठा कर रही हैं।

रेड्डी अरबिंदो फार्मा लिमिटेड के निदेशक और मामले में सह-आरोपी से सरकारी गवाह बने लोगों में से एक हैं। केजरीवाल ने कहा कि देश के सामने आम आदमी पार्टी के भ्रष्ट होने की झूठी कहानी रची गई है और वह ईडी की जांच का सामना करने के लिए तैयार हैं। आप के राष्ट्रीय संयोजक ने आज व्यक्तिगत रूप से दिल्ली की अदालत में अपना पक्ष रखा तथा अपने वकीलों के मौजूद होने के बावजूद अदालत से अनुमति लेने के बाद हिंदी में तर्क दिए। उन्होंने ईडी के रिमांड विस्तार अनुरोध का विरोध नहीं किया। केजरीवाल ने अदालत से कहा, हम ईडी की रिमांड का विरोध नहीं कर रहे हैं। जितने दिन चाहे वो मुझे हिरासत में रख ले। पर ये घोटाला है। कार्यवाही शुरू होने के तुरंत बाद आप के राष्ट्रीय संयोजक ने अदालत से अनुमति लेने के बाद हिंदी में अपनी बात रखी, हालांकि उनके वकील वहां मौजूद थे। उन्होंने खचाखच भरी अदालत में कहा, सीबीआई ने अब तक इस मामले में 31,000 पन्नों की रिपोर्ट कोर्ट में दाखिल की है और 294 गवाहों से इस मामले में पूछताछ की जा चुकी है। ईडी ने अब तक 162 लोगों की जांच की है और 25,000 पन्नों की रिपोर्ट दाखिल की है। इन सभी दस्तावेजों और रिपोर्टों को मिलाकर, मुझे क्यों गिरफ्तार किया गया है? मेरा नाम केवल चार बयानों में है। अपने नाम का उल्लेख करने वाले चार बयानों के बारे में विस्तार से बताते हुए केजरीवाल ने कहा कि पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया के सचिव सी अरविंद ने एक बयान दिया था। इसके मुताबिक, मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास में उनकी (केजरीवाल की) मौजूदगी में सिसौदिया ने सी अरविंद को कुछ आबकारी शुल्क नीति संबंधी दस्तावेज सौंपे। उन्होंने केवल इतना कहा है कि मनीष सिसौदिया ने सी अरविंद को कुछ दस्तावेज दिए थे। मैडम, कई विधायक, मंत्री और गणमान्य व्यक्ति अपने सचिवों के साथ मेरे घर आते हैं। वे साइड-बातचीत करते हैं और एक-दूसरे को दस्तावेज़ सौंप देते हैं। मुझे कैसे पता चलेगा कि कौन किसे क्या दे रहा है? क्या यह बयान मौजूदा मुख्यमंत्री को गिरफ्तार करने का पर्याप्त कारण है?

दूसरे बयान का विवरण देते हुए जिसमें उनका नाम आया है, केजरीवाल ने कहा कि मगुंटा श्रीनिवास रेड्डी (आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री) जगन मोहन रेड्डी की पार्टी (वाईएसआरसीपी) से सांसद हैं। केजरीवाल ने कहा, मगुंटा श्रीनिवास रेड्डी 16 मार्च, 2021 को शाम 4.30 बजे मेरे कार्यालय आए। उन्होंने मेरे कार्यालय को एक ई-मेल भेजा था कि वह एक सांसद हैं और मुझसे मिलना चाहते हैं। मेरे कार्यालय ने उन्हें 10 दिनों के बाद मुझसे मिलने का समय दिया था। (शेष पेज 9)

टिकट न मिलने पर आत्महत्या की कोशिश करने वाले सांसद की मौत

पायनियर समाचार सेवा। चेन्नई

मरुमलार्ची द्रविड़ मुनेत्र कषगम (एमडीएमके) पार्टी के नेता और इरोड से सांसद ए. गणेशमूर्ति का बृहस्पतिवार को सुबह कोयंबटूर के एक अस्पताल में निधन हो गया। उन्होंने हाल ही में कथित तौर पर आत्महत्या करने की कोशिश की थी। सांसद के निधन पर दुख व्यक्त करते हुए तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने कहा कि गणेशमूर्ति ने द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) से अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की तथा जिला सचिव के पद सहित विभिन्न पदों पर अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। बाद में वह वाइको के नेतृत्व वाले एमडीएमके में शामिल हो गए थे।

स्टालिन ने एक बयान में कहा, उनके निधन से गहरा दुख हुआ है। वह एक बेहतरीन नेता थे। मैं द्रमुक, एमडीएमके के सदस्यों, उनके परिवार और दोस्तों के प्रति अपनी गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करता हूं। वाइको ने गणेशमूर्ति के अकास्मिक निधन पर दुख व्यक्त किया और कहा कि उन्होंने गणेशमूर्ति के बेटे कपिलन और बेटी तमिलपिरिया से मुलाकात की और उनके प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त की। पुलिस के अनुसार, 77 वर्षीय गणेशमूर्ति ने 24 मार्च को यहां अपने घर पर कुछ जहरीली गोलियां खाकर कथित तौर पर आत्महत्या करने की कोशिश की थी। उन्हें यहां एक अस्पताल में भर्ती कराया गया, फिर उन्हें कोयंबटूर के एक अन्य निजी अस्पताल ले जाया गया था। इरोड टाउन पुलिस ने पहले आत्महत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया था। उन्होंने कहा कि अब इसे आत्महत्या से (शेष पेज 9)

बांदा के सरकारी अस्पताल के बाहर तैनात सुरक्षाकर्मी। इसी अस्पताल में पूर्वी उप्र का माफिया मुख्तार अंसारी भर्ती था। जिसकी इलाज के दौरान मौत हो गयी

खत्म हुआ मुख्तार अंसारी का किस्सा

पूर्वांचल के माफिया की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश की बांदा जेल में बंद पूर्वांचल के बाहुबली माफिया व पूर्व विधायक मुख्तार अंसारी की गुरुवार देर रात दुर्गावती मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान मौत हो गई। बताया जा रहा है की जेल की बैरक में अचानक मुख्तार की तबीयत बिगड़ी और वह बेहोश हो गया। इसके पश्चात उसे एंबुलेंस से दुर्गावती मेडिकल कॉलेज बांदा पहुंचाया गया। मेडिकल कॉलेज की ओर से जारी बुलेटिन के अनुसार रात लगभग 8:25 बजे सिद्धदोष विचाराधीन बंदी 63 वर्षीय मुख्तार अंसारी को जेल कार्मिकों द्वारा रानी दुर्गावती मेडिकल कालेज बांदा के आकस्मिक विभाग में उल्टी की शिकायत एवं बेहोशी की हालत में लाया गया। मरीज को 9 डॉक्टरों की टीम द्वारा तत्काल चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध करायी गयी परंतु भरसक प्रयासों के बावजूद दिल की धड़कन रुकने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। इससे पहले मंगलवार सुबह करीब चार बजे मुख्तार अंसारी को पेट दर्द, पेशाब और शौच में समस्या के चलते अस्पताल में भर्ती कराया गया था, इलाज के बाद अंसारी को छुट्टी दे दी गई थी।

मुख्तार की मौत के बाद पूरे प्रदेश और विशेष कर बांदा मऊ और गाजीपुर में विशेष अलर्ट करते हुए धारा 144 लागू कर दी गई है। मुख्तार के खिलाफ उत्तर प्रदेश, पंजाब, नई दिल्ली और कई अन्य राज्यों में लगभग 60 मामले लंबित थे। इस बीच, मुख्तार अंसारी की मौत के मद्देनजर राज्य सरकार ने पूरे राज्य में दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लगा दी है। (शेष पेज 9)

भारत-चीन सीमा विवाद हल करने के प्रयास जारी रखने को सहमत

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत और चीन के बीच नए दौर की वार्ता के दौरान राजनयिक और सैन्य चैनलों के माध्यम से सीमा विवाद हल करने के अपने प्रयासों को जारी रखने पर दोनों पक्षों सहमत हुए हैं। यह बातचीत पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर पिछले चार वर्षों से जारी तनाव की पृष्ठभूमि में हुई। विदेश मंत्रालय (एमईए) ने बृहस्पतिवार को यहां कहा, भारत-चीन सीमा मामलों (डब्ल्यूएमसीसी) पर परामर्श और समन्वय के लिए 29वीं बैठक के दौरान दोनों पक्षों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर पूर्ण शांति और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शेष मुद्दों को कैसे हल किया जाए, इस पर दोनों पक्षों ने एक दूसरे से विचारों का आदान-प्रदान किया। एक बयान में कहा गया कि मुख्य बैठक 27 मार्च को बीजिंग में हुई। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव (पूर्वी एशिया) ने किया। बयान में कहा गया है कि चीनी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व चीनी विदेश मंत्रालय के सीमा और महासागरीय विभाग के महानिदेशक ने किया। इसमें कहा गया, दोनों पक्ष राजनयिक और सैन्य चैनलों के माध्यम से नियमित संपर्क बनाए रखने और मौजूदा द्विपक्षीय समझौतों और प्रोटोकॉल के अनुसार सीमावर्ती क्षेत्रों में जमीन पर शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर सहमत हुए।

इस बीच, चीनी विदेश मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को एक बयान में कहा, दोनों पक्षों ने अगले चरण के लिए चीन-भारत सीमा क्षेत्र में स्थिति के प्रबंधन और नियंत्रण में हुई प्रगति का सकारात्मक मूल्यांकन किया और विचारों का स्पष्ट और गहन आदान-प्रदान किया। इसमें

कहा गया, दोनों पक्ष सीमा पर जमीनी स्तर पर प्रासंगिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने, जल्द से जल्द दोनों पक्षों को स्वीकार्य समाधान तक पहुंचने और सीमा की स्थिति को नियंत्रण और प्रबंधन के सामान्य चरण में बदलने को बढ़ावा देने पर सहमत हुए। मंत्रालय ने एक बयान में कहा, भारत-चीन सीमा मामलों पर परामर्श और समन्वय के लिए कार्य तंत्र की 28वीं बैठक पिछले साल 30 नवंबर को हुई थी। विदेश मंत्रालय के सीमा और महासागर मामलों के विभाग के महानिदेशक होंग लियांग और भारतीय विदेश मंत्रालय के पूर्वी एशिया प्रभाग के संयुक्त सचिव गौरांगलाल दास ने चीनी विदेश मंत्रालय की 29वीं बैठक की सह-अध्यक्षता की।

बैठक में दोनों देशों के विदेश मामलों, रक्षा, आव्रजन और अन्य विभागों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वार्ता में दोनों पक्ष राजनयिक और सैन्य चैनलों के माध्यम से संचार बनाए रखने, बातचीत और परामर्श के लिए तंत्र में सुधार करने और जल्द से जल्द कोर कमांडर-स्तरीय वार्ता का एक नया दौर आयोजित करने पर सहमत हुए। दोनों पक्षों ने दोनों पक्षों के बीच हुई जरूरी आम समझ के समझौतों और मार्गदर्शक (शेष पेज 9)

भाजपा से टिकट न मिलने के बाद वरुण ने पीलीभीत से जुड़ी यादें संजोयी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पीलीभीत लोकसभा सीट से टिकट नहीं मिलने की घोषणा के एक दिन बाद वर्तमान सांसद वरुण गांधी ने बृहस्पतिवार को पीलीभीत के लोगों को एक भावनात्मक खुला पत्र लिखा और उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनकी सेवा करना जारी रखेंगे। उन्होंने कहा है कि पीलीभीत के लोगों के साथ उनका रिश्ता आखिरी सांस तक रहेगा। सुल्तानपुर से भाजपा की मौजूदा सांसद मेनका संजय गांधी के बेटे वरुण ने भाजपा द्वारा आगामी लोकसभा चुनावों में उम्मीदवारों की सूची से बाहर किए जाने के बाद पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी है। एक्स पर पत्र साझा करते हुए उन्होंने कहा, पीलीभीत के साथ उनका रिश्ता प्यार और विश्वास का है जो किसी भी राजनीतिक गणना से कहीं ऊपर है। भाजपा ने वरुण की जगह उत्तर प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद को पीलीभीत से मैदान में उतारा है। वरूण महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दे पर कई बार अपनी ही सरकार के खिलाफ मुखर रहे हैं। प्रसाद ने बुधवार को इस सीट पर अपना नामांकन दाखिल किया था।

पहले माना जा रहा था कि वरुण पीलीभीत से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ सकते हैं लेकिन बुधवार को नामांकन प्रक्रिया के अंतिम दिन भी

उन्होंने पर्चा दाखिल नहीं किया, जिसके बाद उनके इस सीट से चुनाव लड़ने की तमाम अटकलों पर विराम लग गया। उन्होंने पीलीभीत वासियों को लिखे पत्र में इस क्षेत्र से अपने जुड़ाव का जिक्र करते हुए कहा, आज जब मैं यह पत्र लिख रहा हूं तो यादों ने मुझे भावुक कर दिया है। मुझे तीन साल का छोटा सा वह बच्चा याद आ रहा है जो अपनी मां की उंगली पकड़कर 1983 में पहली बार पीलीभीत आया था। उसे कहां पता था कि एक दिन यह धरती उसकी कर्म भूमि और यहां के लोग उसका परिवार बन जाएंगे।

भाजपा सांसद ने पत्र में कहा, महज एक सांसद के तौर पर ही नहीं बल्कि एक व्यक्ति के तौर पर भी मेरी परवरिश और मेरे विकास में पीलीभीत से मिले आदर्श, सरलता और सहृदयता का बहुत बड़ा योगदान है। आपका प्रतिनिधि होना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सम्मान रहा है और मैंने हमेशा अपनी पूरी क्षमता से आपके हितों के लिए आवाज उठाई है। वरुण ने पत्र में आगे कहा कि एक सांसद के तौर पर उनका कार्यकाल भले समाप्त हो रहा हो, पर पीलीभीत से उनका रिश्ता अंतिम सांस तक खत्म नहीं हो सकता। उन्होंने लिखा सांसद के रूप में नहीं तो बेटे के तौर पर ही सही, मैं आजीवन आपकी सेवा के लिए प्रतिबद्ध (शेष पेज 9)

इलेक्शन किंग पद्मराजन चुनावी जंग से हटने को तैयार नहीं

कुमार चेलप्पन। त्रिशूर

जिला कलेक्टर और रिटर्निंग आफिसर वीआर कृष्ण तेजा ने बृहस्पतिवार को त्रिशूर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा चुनाव के लिए नामांकन पत्र स्वीकार करना शुरू किया, कुन्हाम्बु नायर पद्मराजन (64) पहला नामांकन पत्र दाखिल करने के लिए उपस्थित थे। चूंकि सभी कागजात सही थे, इसलिए रिटर्निंग ऑफिसर ने इसे स्वीकार कर लिया। इसके बाद पद्मराजन अपने पैतृक घर जाने और कुलदेवता की पूजा करने कन्नूर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंच गए। त्रिशूर फिल्म अभिनेता से नेता बने सुरेश गोपी की बदौलत राष्ट्रीय सुर्खियों में आया। गोपी भाजपा उम्मीदवार के रूप में यहां से किस्मत आजमाने जा रहे हैं। लेकिन एक दिन के लिए, लोग स्टार उम्मीदवार और उनको चुनौती देने वाले के मुरलीधरन (कांग्रेस) और वीएस सुनील कुमार (सीपीआई) को भूल गए तथा उनका पूरा ध्यान पद्मराजन पर था। पद्मराजन को पूरी दुनिया में इलेक्शन किंग के नाम से जाना जाता है और त्रिशूर से उनका चुनाव लड़ना उनकी 240वीं बैलेट लड़ाई है। केरल में भाजपा नेताओं के बारे में कहा जाता है कि वे हारने के लिए ही चुनाव लड़ते हैं, लेकिन पद्मराजन एक मिशन वाले व्यक्ति हैं।

पिछले हफ्ते उन्होंने तमिलनाडु के धर्मपुरी लोकसभा क्षेत्र से नामांकन पत्र दाखिल किया था जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

मेट्टूर में सड़क किनारे टायर बेचने वाली एक दुकान के मालिक और अंशकालिक होमियो मेडिकल प्रैक्टिशनर पद्मराजन उन लोगों में से नहीं हैं जो चुनाव पर पैसा बर्बाद करते हैं। नामांकन दाखिल करने के बाद पद्मराजन ने पायनियर से कहा, 'मैं चाहता हूं कि दुनिया मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जाने जिसने चुनाव प्रक्रिया को लोकतांत्रिक बनाया। मेरे प्रयासों के लिए धन्यवाद, राजनीतिक संगठनों द्वारा प्रायोजित नहीं किए गए उम्मीदवारों को भी सम्मान मिला।' वह 1988 से चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा, मैंने छह राष्ट्रपति चुनाव और इतनी ही संख्या में उपराष्ट्रपति चुनाव लड़ा था। चुनाव संबंधी खर्चों पर 1.5 करोड़ रुपये से अधिक खर्च करने वाले पद्मराजन ने कहा, लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में मेरा नाम दो बार आया है, जबकि गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में मेरा नाम एक बार आया है। राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति चुनाव के लिए (शेष पेज 9)

लोकसभा चुनाव: गौतमबुद्ध नगर में नामांकन प्रक्रिया शुरू

सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम, सीसीटीवी से निगरानी, 26 अप्रैल को होगा मतदान

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

गौतम बुद्ध नगर में द्वितीय चरण में 26 अप्रैल को मतदान होना है जिसको लेकर नामांकन की प्रक्रिया 28 मार्च से प्रारंभ हो गई है। इसको लेकर जिला कलेक्ट्रेट पर सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। जगह-जगह पर बैरिकेड लगाये गए। जिला निर्वाचन अधिकारी गौतम बुद्ध नगर मनीष कुमार वर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि गौतम बुद्ध नगर लोकसभा सामान्य निर्वाचन क्षेत्र के लिए नामांकन प्रक्रिया 28 मार्च बृहस्पतिवार से प्रारंभ होगी।

उन्होंने बताया कि निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार द्वितीय चरण के लिए 28 मार्च बृहस्पतिवार को निर्वाचन की अधिसूचना के साथ ही नामाकंन प्रकिया प्रारम्भ हो जाएगी। आयोग द्वारा द्वितीय चरण के लिए नाम निर्देशन करने के लिए अंतिम तिथि 4 अप्रैल 2024 दिन बृहस्पतिवार नाम निर्देशनों की संवीक्षा के लिए तिथि 05 अप्रैल 2024 दिन शुक्रवार, नाम वापसी के लिए अंतिम तिथि 08 अप्रैल 2024 दिन सोमवार निर्धारित की गई है। उन्होंने बताया कि द्वितीय चरण का मतदान 26 अप्रैल 2024 दिन शुक्रवार तथा 4 जून 2024 दिन मंगलवार को मतगणना सम्पन्न होगी। 06 जून 2024 दिन बृहस्पतिवार से पूर्व निर्वाचन प्रक्रिया पूर्ण कर ली जायेंगी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि जनपद गौतम बुद्ध नगर में लोकसभा सामान्य निर्वाचन नामांकन प्रक्रिया जिलाधिकारी न्यायालय कक्ष संख्या 105 कलेक्ट्रेट सूरजपुर ग्रेटर नोएडा में सुबह 11:00 बजे से शाम 3:00 बजे तक संपन्न कराई जाएगी।

उन्होंने बताया कि गाड़ी की पार्किंग के लिए एलजी चैक एवं दुर्गा टॉकीज चैराहा सूरजपुर निर्धारित किया गया है। प्रत्याशियों को नामाकंन के दौरान पार्किंग स्थल तीन वाहन लाने की अनुमति होगी। सिविल कोर्ट एवं पुलिस मुख्यालय पर बैरिकेडिंग की जाएगी। वहां से प्रत्याशी एवं प्रस्तावकों को नामांकन के लिए पैदल आना होगा। नामांकन प्रक्रिया के दौरान नामांकन कक्ष में उम्मीदवार सहित पांच लोग को अंदर जाने की अनुमति होगी। उन्होंने बताया कि नामांकन के लिए सामान्य वर्ग के प्रत्याशी को जमानत राशि के रूप में 25000 रुपए एवं एससी.एसटी वर्ग के प्रत्याशी को जमानत राशि के रूप में 12500 रुपए की धनराशि जमा करनी होगी।

नोएडा सीट पर डॉ महेन्द्र नागर को मिला सपा का चुनाव चिन्ह

- प्रत्याशी बदलने की अटकलों को लगा विराम
- भाजपा के उम्मीदवार और मौजूदा सांसद महेश शर्मा से होगा सीधा मुकाबला

नोएडा। नोएडा गौतमबुद्धनगर लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी सपा के घोषित प्रत्याशी डॉ महेन्द्र नागर को पार्टी का सिम्बल दे दिया गया है। अब नोएडा सीट पर सपा के प्रत्याशी के तौर डॉ महेन्द्र नागर ही चुनाव लड़ेंगे। अब नोएडा सीट से सपा के प्रत्याशी बदलने की सारी संभावनाएं समाप्त हो गई हैं। सपा के लखनऊ कार्यालय में बृहस्पतिवार को दोपहर को नोएडा सीट के लिए सपा का सिम्बल दे दिया गया है। यह सिम्बल पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने खुद डॉ महेन्द्र नागर को दिया है। इससे पहले हमने आपको बताया था कि नोएडा गौतमबु नगरद्ध लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी तथा कांग्रेस गठबंधन ने अपना प्रत्याशी एक बार फिर बदल दिया है। एक बार फिर मिल्क लच्छी गांव के रहने वाले डॉ महेंद्र नागर को नोएडा सीट से समाजवादी पार्टी से प्रत्याशी बनाया गया है। यह दूसरा मौक़ा है जब समाजवादी पार्टी ने नोएडा सीट से अपना प्रत्याशी बदल दिया है। समाजवादी पार्टी ने पहले मिल्क लच्छी गाँव के रहने वाले डॉक्टर महेन्द्र सिंह नागर को नोएडा सीट से प्रत्याशी घोषित किया था। उसके तुरंत बाद राहुल अवाना को नोएडा सीट से प्रत्याशी बना दिया गया था। अब एक बार फिर समाजवादी पार्टी ने नोएडा की सीट से अपना प्रत्याशी बदलते हुए डॉक्टर महेन्द्र नागर को प्रत्याशी घोषित कर दिया है ।

आपको बता दें की नोएडा गौतमबुद्ध नगर लोकसभा सीट भारतीय जनता पार्टी का गढ़ मानी जाती है। भाजपा नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ महेश शर्मा लगातार दो बार से नोएडा की सीट पर चुनाव जीत रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर डॉक्टर महेश शर्मा को नोएडा से चुनावी मैदान में उतारा है। दूसरी तरफ बहुजन समाज पार्टी ने ठाकुर समाज से आने वाले राजेंद्र सोलंकी को अपना प्रत्याशी बनाया है। समाजवादी पार्टी ने राहुल अवाना का टिकट काटकर एक बार फिर डॉक्टर महेंद्र नागर को नोएडा सीट से प्रत्याशी बना दिया है। डॉक्टर महेंद्र नागर को टिकट दिलवाने में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजकुमार भाटी का महत्वपूर्ण योगदान बताया जा रहा है। राजकुमार भाटी शुरू से ही महेंद्र नागर को नोएडा से प्रत्याशी बनाने के पक्ष में थे। बीच में कुछ लोगों ने जोड़.तोड़ करके राहुल अवाना को प्रत्याशी बनवा दिया था। अब राजकुमार भाटी के प्रयास से नोएडा की सीट से एक बार फिर डॉक्टर महेंद्र नागर को समाजवादी पार्टी का प्रत्याशी बना दिया गया है।

संक्षिप्त समाचार

तीन वाहन चोर गिरफ्तार, कब्जे से 2 मोटरसाइकिल व अवैध हथियार बरामद।

`अश्लील वीडियो बनाने के आरोपी में तीन गिरफ्तार

नोएडा। होली के मौके पर अश्लील वीडियो बनाकर वायरल हुई स्कूटी सवार दो युवतियों और स्कूटी सवार युवक को थाना सेक्टर-113 पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस उन्हें न्यायालय में पेश कर रही है। पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह के मीडिया प्रभारी ने बताया कि थाना सेक्टर 113 क्षेत्र के वेदवन पार्क के पास होली वाले दिन स्कूटी पर सवार एक युवक और दो युवतियों ने अश्लील वीडियो बनाई तथा उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद कई यूजर्स ने यूपी पुलिस और नोएडा पुलिस को टैग करते हुए उनके खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। उन्होंने बताया कि थाना सेक्टर 113 में तैनात उपनिरीक्षक ओमवीर सिंह ने इनके खिलाफ धारा 279, 290, 294, 336, 337 के तहत मुकदमा दर्ज करवाया। मामले की जांच कर रही थाना सेक्टर 113 पुलिस ने आज अश्लील वीडियो बनाने वाली प्रीति, विनीता और पीयूष को गिरफ्तार कर लिया है।

सड़ी हालत में मिला युवक का शव

नोएडा। नोएडा से एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। जहां नोएडा थाना फेस-3 क्षेत्र के सेक्टर-71 स्थिति डंपिंग ग्राउंड से एक युवक का सड़ा गला शव बरामद हुआ है। नोएडा के इस शव के मिलने से हड़कंप मच गया है। शव की जानकारी मिलके के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की शिनाख्त करवाई है, जिसकी पहचान भी कर ली गई है। इस बारे में जानकारी देते हुए नोएडा थाना फेस 3 प्रभारी विजय सिंह ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली कि सेक्टर 71 के डंपिंग ग्राउंड में एक युवक का शव पड़ा हुआ है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की शिनाख्त कराई तो उसकी पहचान कानपुर निवासी मुकेश दिवाकर के रूप में हुई मुकेश दिवाकर हाल में मामूरा गांव में रह रहा था। उन्होंने बताया कि सब 5.6 दिन पुराना होने के कारण सड़ गल गया है। मुकेश दिनों से लापता था लेकिन उसके परिजनों ने उसकी गुमशुदगी भी दर्ज नहीं कराई। मौत के कारणों का पता लगाने के लिए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

व्यापारी ने गोली मारकर की आत्महत्या

नोएडा। नोएडा के सेक्टर 47 में रहने वाले चीनी व्यापारी ने अपने घर में लाइसेंसी रिवाल्वर से गोली मार कर आत्महत्या कर ली। मौके से पुलिस को कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। प्रारंभिक जांच में नोएडा पुलिस को पता चला है कि व्यवसाई पिछले कुछ दिनों से मानसिक तनाव में थे। थाना सेक्टर 49 प्रभारी अनुज सैनी ने बताया कि सेक्टर 47 के डी ब्लॉक में अनिल कपूर 56 वर्ष अपने परिवार के साथ रह रहे थे। बीती रात्रि वह खाना खाने के बाद अपने कमरे में चले गए। कुछ देर बाद परिजनों को गोली चलने की आवाज सुनाई दी। परिजन तुरंत दौड़कर अनिल कपूर के कमरे में पहुंचे तो वह लहूलुहान पड़े हुए थे।

शुभ मुहूर्त में नामांकन करेंगी कांग्रेस प्रत्याशी डॉली शर्मा

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

कांग्रेस इलेक्शन कमेटी की बैठक में गाजियाबाद लोकसभा सीट पर डॉली शर्मा के कांग्रेस कैंडिडेट होने पर पार्टी ने मुहर लगा दी है। अब साफ है कि भाजपा प्रत्याशी अतुल गर्ग और कांग्रेस कैंडिडेट डॉली शर्मा का मुकाबला लोकसभा चुनाव में गाजियाबाद सीट पर होगा। डॉली शर्मा शुभ मुहूर्त में अपना नामांकन दाखिल करेंगी।

उनके पिता एवं पूर्व महानगर अध्यक्ष नरेन्द्र भारद्वाज ने बताया कि इसके लिए विद्वान पंडितों से जानकारी कराई जा रही है। जल्द ही तारीख डॉली शर्मा के नामांकन की तारीख की घोषणा की जाएगी। काबिलेगौर है कि डॉली शर्मा इससे पूर्व सन 2019 में गाजियाबाद से ही लोकसभा चुनाव लड़ चुकी हैं। पिछली बार मजबूती के साथ चुनाव लड़ते हुए वे तीसरे नंबर पर रही थीं। चुनाव में उन्हें 111944 वोट मिले थे। चुनाव के दमदार आधार पर उन्हें पार्टी ने प्रवक्ता नियुक्त किया था। कांग्रेस का पक्ष रखते हुए वे लगातार टीवी चैनल्स पर नजर आती थीं। साथ ही उन्हें पार्टी की ओर से तेलंगाना में हुए विधानसभा चुनाव में पार्टी के प्रचार.प्रसार की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इस बार उनके नाम पर फिर से कांग्रेस हाईकमान ने मुहर लगाई है। पिता नरेन्द्र भारद्वाज ने बताया कि पार्टी प्रत्याशी घोषित होने के बाद से ही डॉली शर्मा को बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है। उन्होंने बताया कि पुत्री डॉली शर्मा का नामांकन शुभ मुहूर्त में विधिवत तरीके से कराया जाएगा। नामांकन से पूर्व उनके आवास पर हवन और अनुष्ठान होगा। उसके बाद से नामांकन करने पहुंचेंगी।

वीके सिंह का टिकट कटने से क्षत्रिय समाज में उबाल

- बैठकों का दौर जारी, किसी बड़े निर्णय की तैयारी में

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

लोकसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवार बदले जाने को लेकर तरह तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। ठाकुर समाज ने तो एक तरह से मोर्चा ही खोल दिया है। बीते दो दिन में गाजियाबाद में दो बड़ी बैठके हो चुकी हैं।

समाज का युवा वर्ग अपनी नाराजगी खुल कर जता रहा है। ठाकुर समाज की पहली बैठक नेहरू नगर स्थित महाराणा प्रताप भवन में हुई। इसमें समाज के प्रबुद्ध लोग एकत्र हुए। इस बैठक में गाजियाबाद, साहिबाबाद, धौलाना आदि इलाकों के लोग भी मौजूद रहे। वक्ताओं ने कहा कि गाजियाबाद में पांच विधायक, दो एमएलसी, एक राज्यसभा सांसद, एक लोकसभा सांसद, चार ब्लाक प्रमुख, इतने ही पालिका चेयरमेन, एक मेयर हैं। मगर इनमें से किसी पद पर कोई ठाकुर नहीं हैं। अब लोकसभा चुनाव के लिए भी ठाकुर को टिकट नहीं देकर भाजपा ने समाज को दरकिनार किया है।

दूसरी बैठक शक्ति खंड इंदिरापुरम में हुई। इसमें दिल्ली एनसीआर के क्षत्रिय समाज के प्रतिनिधियों के साथ बैठक का आयोजन किया। गाजियाबाद की परंपरागत सीट से भी क्षत्रिय समाज के व्यक्ति को टिकट नहीं दी गई। इस मामले में अभी कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ है लेकिन इस बार क्षत्रिय समाज बड़े से बड़ा कदम उठाने के लिए बेचैन है। फिलहाल सभी पार्टियों के राजनीतिक अध्यक्षों को संस्था द्वारा इस संबंध में एक ज्ञापन भेजा गया है जिसमें गाजियाबाद, नोएडा के लोग शामिल रहे।

युवक ने पीटकर की पिता की हत्या

गाजियाबाद। गाजियाबाद के थाना नंदग्राम के हरबंस नगर में एक युवक ने अपने पिता की बुधवार रात बेरहमी से पिटाई कर दी। इसके बाद वह अस्पताल भी लेकर नहीं गया। गुरुवार की सुबह जब पड़ोसियों को पता चला तो उन्होंने पुलिस को सूचना दी।

पुलिस ने आरोपी बेटे को गिरफ्तार कर लिया है। एसीपी नंदग्राम रवि कुमार सिंह ने बताया की थाना क्षेत्र के हरबंस नगर में 65 वर्षीय लाली अपने 35 वर्ष के पुत्र गोलू के साथ रहता है। गोलू राजमिस्त्री का काम करता है। मूल रूप से यह परिवार मध्य प्रदेश के छतरपुर का रहने वाला है। एसीपी के मुताबिक बुधवार देर रात गोलू ने किसी बात पर अपने पिता लाली की लात घूंसों से पिटाई कर दी। इस पिटाई में लाली गंभीर हो गए। लेकिन गोलू उनको अस्पताल लेकर नहीं गया।

Karnataka Bank Ltd. 100
Your Family Bank. Across India.

क्षेत्रीय कार्यालय: दिल्ली
प्लॉट नं. 8-बी, प्रथम तल, राजेंद्र पार्क, पूसा रोड, नई दिल्ली-110060
फोन: 011-40591567,63
ईमेल: del.ro@ktkbank.com
वेबसाइट: www.karnatakabank.com
सीआईएन: L85110KA1924PLC001128

क्षेत्रीय कार्यालय: दिल्ली

1. मैसर्स भगवती एंटरप्राइजेज, इसके प्रोपराईटर श्री सुमित कंसल द्वारा प्रतिनिधित्व, पताः ए-40, वजीरपुर औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110052 और: एजी-249, प्रथम तल, शालीमार बाग, दिल्ली-110085
2. श्रीमती शीला देवी पत्नी श्री राम निवास मकान नं. 113, ब्लॉक एएल, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
3. श्री राम निवास, मकान नं. 113, ब्लॉक एएल, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 और : एजी-249, प्रथम तल, शालीमार बाग, दिल्ली-110085

महोदय,
(i) पीएसओडी खाता सं. 194700600034601 दिनांक 28-01.2016, रुपये 4,00,000/- हेतु (ii) पीएसटीएल खाता सं. 1947001800021101 दिनांक 28-08-2020, रुपये 4,50,000.00 हेतु (iii) पीएसटीएल खाता सं. 1947001800022401 दिनांक 31-03-2021, रुपये 20,00,000.00 हेतु (iv) पीएसटीएल खाता सं. 1947001800022501 दिनांक 31-03-2021, रुपये 2,55,000.00 हेतु आप नंबर-1 **भगवती एंटरप्राइजेज, इसके प्रोपराईटर श्री सुमित कंसल द्वारा प्रतिनिधित्व**, आवेदक, आप नंबर-2 श्रीमती शीला देवी पत्नी श्री राम निवास, और आप नं. 3 श्री राम निवास, गारंटर ने दिल्ली लक्ष्मीनगर शाखा द्वारा सुविधाएं प्राप्त की है, जिन्हें 30.03.2021 से 29.07.2023 को गैर-निष्पादित परिसंपत्ति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। और संबंधित पक्षों को दिनांक 26.02.2024 को बैंक के अधिकृत अधिकारी द्वारा वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित अधिनियम 2002 को लागू करने की धारा 13(2) और (3) के तहत एक विस्तृत मांग नोटिस जारी करके सरफेसी अधिनियम के तहत कार्रवाई शुरू की गई है। स्पीड पोस्ट द्वारा भेजे गए उक्त मांग नोटिस उपर्युक्त पतों पर पावती के साथ भेजे गए थे, बिना सुपुर्द किए वापस कर दिए गए हैं। इसलिए, हमने सरफेसी अधिनियम 2002 में निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए इस नोटिस के माध्यम से डिमांड नोटिस की सामग्री प्रकाशित की है। दिनांक 23-02-2024 को शेष राशि अर्थात रु. 30,72,219.30 (रुपये तीस लाख बहत्तर हजार दो सौ उन्नीस और पैसे तीस मात्र) अर्थात (i) रु. 4,37,256.00 PSOD खाता सं. 194700600034601 के तहत साथ में दिनांक 01.02.2024 से भविष्य के ब्याज, (ii) रु. 2,15,561.30 PSTL खाता सं. 1947001800021101 के तहत साथ में दिनांक 01.02.2024 से भविष्य के ब्याज, (iii) रु. 21,45,405.00 PSTL खाता सं. 1947001800022401 के तहत साथ में दिनांक 30.01.2024 से भविष्य के ब्याज (iv) रु. 2,73,997.00 PSTL खाता सं. 1947001800022501 के तहत दिनांक 30.01.2024 से भविष्य के ब्याज के साथ, आपको इस पेपर प्रकाशन की तारीख से 60 दिनों के भीतर भुगतान करने के लिए कहा जाता है।

अचल सम्पत्ति का विवरण

रिहायशी सम्पत्ति (फ्लैट) का वह समस्त भाग एवं अंश जिसका क्षेत्रफल 70.00 वर्ग मी., सम्पूर्ण प्रथम तल (बिना छत के अधिकार के) जोकि सम्पत्ति नं. 113 और 144, ए एल ब्लॉक, शालीमार बाग, रिहायशी स्कीम, दिल्ली-110088 में स्थित, यह सम्पत्ति श्रीमती शीला देवी के नाम पर है।
कृपया ध्यान दें कि मैं सुरक्षित लेनदार बैंक का प्राधिकृत अधिकारी इस प्रकाशन की तारीख से 60 दिनों की समाप्ति पर या उससे पहले अपनी देनदारियों का पूर्ण निर्वहन करने की विफलता की स्थिति में उपरोक्त प्रतिभूतियों को लागू करने का इरादा रखता हूं।

स्थान : दिल्ली
दिनांक: 28.03.2024
हस्ता/- कर्नाटका बैंक लि.
मुख्य प्रबंधक और प्राधिकृत अधिकारी

सार्वजनिक सूचना

आम जनता को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री जतिन भगत पुत्र मधु भगत निवासी सी-902 प्लैटिनम टावर्स, एमजी रोड, गुड़गांव, हरियाणा-122002 ने अपने साथ सभी व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक संबंधों को अस्वीकार/विच्छेद/बंद कर दिया है। माँ - श्रीमती मधु भगत ने अपने लगातार कदाचार, क्रूरता, शोषण, हाथापाई, पिटाई, दुर्व्यवहार के कारण मेरे मुवक्किल और उसकी पत्नी से अवैध मांगें की और उन्होंने उसे मेरी चल और अचल संपत्तियों में किसी भी प्रकृति के किसी भी अधिकार, हिस्सेदारी, शीर्षक चिंता का दावा करने से भी वंचित कर दिया है। उपरोक्त से निपटने वाला कोई भी व्यक्ति अपने जोखिम और जोखिम पर काम करेगा और मेरा मुवक्किल किसी भी तरीके या चिंता के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

शंकर विज
एडवोकेट

ओके प्ले इंडिया लिमिटेड
सीआईएन नं. L28219HR1988PLC030347
पंजी. कार्यालय: 17-18, रोज- का-मेओ इंडस्ट्रियल एस्टेट, तहसील नूंह, जिला मेवात, हरियाणा-122103
वेबसाइट: www.okplay.in ईमेल: info@okplay.in
फोन: 011 46190000 फैक्स: 011 46190090

सूचना

सेबी (सूचीबद्धता दायित्व और प्रकटीकरण आवश्यकताएं) विनियम, 2015 के विनियम 47 के साथ पठित नियम 29 के अनुसरण में, नोटिस दिया जाता है कि कंपनी के निदेशक मंडल की बैठक सोमवार, 08 अप्रैल, 2024 को निश्चित की गई है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ, 31 मार्च, 2024 को समाप्त तिमाही और वर्ष हेतु कंपनी के लेखापरीक्षित वित्तीय परिणामों (स्टैंडअलोन और समेकित) पर विचार और अनुमोदन करना।

कृते ओके प्ले इंडिया लिमिटेड
हस्ता/-
दिनांक: 28.03.2024
स्थान: नई दिल्ली
मीनू गोस्वामी
कंपनी सचिव

THE PIONEER CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, **Mohammed Imran** S/o Mohammed Idrees R/O K-166/31, Near Khaddey wali Masjid, Gautam Vihar, Delhi-110053 hereby declare that Mohammed Imran and Mohd Imran both are one and same person.
PD(322)C

I, **Ruqaiya Khatoon** W/o Mohammad Imran R/O K-166/31, Near Khaddey wali Masjid, Gautam Vihar, Delhi-110053 hereby declare that Mohammad Imran and Mohd Imran both are one and same person.
PD(323)C

I, **Mohammad Faizan** S/o Mohammad Imran R/O K-166/31, Near Khaddey wali Masjid, Gautam Vihar, Delhi-110053 hereby declare that Mohammad Faizan and Mohd Faizan Ansari both are one and same person.
PD(324)C

सार्वजनिक सूचना

श्री प्रतीक जैन पुत्र श्री नीरज जैन, संपत्ति संख्या ए-4/25, कृष्ण नगर, ग्राम घोंडली इलाका शाहदरा, दिल्ली-110051 पर निर्मित बिना छत के अधिकार वाले ग्राउंड फ्लोर, माप 227.5 और 1/3 भाग 75.83 वर्ग गज के मालिक हैं। आम जनता को सूचित किया जाता है कि एक मूल त्याग विलेख दिनांक 03.06.2010, दस्तावेज संख्या 9975, के साथ 03.06.2010 का एसआर-आठवीं, दिल्ली पंजीकृत है। वह एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड के पक्ष में बंधक बनाने का इरादा रखता है। उल्लिखित दस्तावेज रखने वाले या उक्त संपत्ति में अधिकार, शीर्षक या हित का दावा करने वाले किसी भी व्यक्ति से मूल विलेख वापस करने या लिखित रूप में आपत्तियां/दावा प्रस्तुत करने का अनुरोध किया जाता है। उपरोक्त संपत्ति के संबंध में दस्तावेजी साक्ष्य के साथ अधिवक्ता विक्रम सॉ, 4ई/9, दूसरी मंजिल, झंडेवालान एक्सटेंशन दिल्ली-110055 फोन नं. 011-41255022 या ईमेल vikshalegal@gmail.com पर, इस सूचना के प्रकाशन से 7 दिनों के भीतर भेजें।

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client that Mrs. Rajbala is the owner of Residential Property bearing No. C-170 and C-171, area measuring 205.44 sq. yds., out of Khasra No. 69, situated at Panchwati Colony, Block-C, in the area of Village Mehma Sarai alias Koat, Paragana Loni, Tehsil and District Ghaziabad, U.P., who acquired vide GPA, Will & ATS dated 26.04.2007 executed by Mrs. Sudha Sharma. All persons are hereby informed that above mentioned owner want to sell the said property to a person who intends to obtain loan from our client against the said property, if anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its sale/mortgage/litigation, & any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 07 days of the present.
Kumar & Associates (Advocates & Consultants)
200, IInd Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, N. Delhi-15
Ph : 011-41112527-28 legal@knalegal.com

PUBLIC NOTICE

To be known to all that we **SMT. BHAGWATI W/O LATE SHRI K.L. ARORA AND RAJEEV KUMAR ARORA S/O LATE SH. K.L.ARORA R/O B2B-192, NEAR CHHOTI SABZI MANDI, JANAKPURI,NEW DELHI-110058.(BOTH ARE OWNER / PROPERTY HOLDER)** of above said residence. The original **DDA** Documents **(1)** DEMAND LETTER**(2)** POSSESSION LETTER **(3)** DDA NOC, ELECTRIC **&** WATER CONNECTION **(4)** SITE POSSESSION SLIP have been **lost/ Misplaced.** An FIR to this effect has been lodged in Police Station, New Delhi, vide NCR /LR No 1573968/2024 dated 22/03/2024. If anyone found please contact: **9717532416** within 15 days from the date of publication of this notice.

Public Notice

This is to inform the general public that **Mrs. Shamila** is the owner of Third Floor Front Side with roof rights area measuring 76 sq. yds. built on Property No. 8 out of Khasra No. 468/1 situated in village Khoda Pargana Loni Tehsil & District Ghaziabad U.P. She acquired the above floor through Sale Deed dated 04.10.2023 vide doc. No.10557 executed by Mohd. Vakeel in favour of Mrs. Shamila.

Mrs. Sharmila intends to transfer the ownership by way of Sale Deed of aforementioned floor to Mrs. Sajda Khatoon and Mohd. Chand Alam. Subsequently, Mrs. Sajda Khatoon and Mohd. Chand Alam is in the process of mortgaging the said floor SMFG India Home Finance Co. Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 07 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 07-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.

If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 07-day period by contacting **Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301; Landline(s): +910120-3101683; e-mail: accounts@lvnorth.in**

सार्वजनिक सूचना

श्री अभिनव शर्मा पुत्र श्री अरविंद कुमार शर्मा निवासी फ्लैट नं-1002, टी 26, लोटस बुलवर्ड, अपोजिट स्टर्लिंग मॉल, सेक्टर-100, नोएडा, गौतम बुध नगर, उ0प्र0 एवं सुश्री रंजना रॉय पुत्री श्री आसीस रंजन रॉय निवासी 4/2 के/ एसआर /20, सर्सुना, स्टेलाइट टाउनशिप, 127, ठाकुरपुकुर, सर्सुना, साउथ -24, परगना, सर्सुना, वेस्ट बंगाल- 70061, ने विशेष विवाह अधिनियम 1954 के अंतर्गत विवाह करने हेतु आवेदन किया है। इस संबंध में आपत्ति धारी व्यक्ति अपनी आपत्ति/ आपत्तियां अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में दिनांक 12.04.2024 तक किसी भी कार्य दिवस में प्रस्तुत कर सकता है।
प्र0 नगर मजिस्ट्रेट/ विशेष विवाह अधिकारी गौतम बुद्ध नगर।

सार्वजनिक सूचना

कृपया श्री इंदरजीत भंडोला पुत्र श्री सोहन लाल निवासी जी-414, जलवायू टावर्स, विहार, सेक्टर-47, नोएडा, गौतमबुद्धनगर के प्रार्थना पत्र (छायाप्रति संलग्न) का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें। श्री इंदरजीत भंडोला द्वारा अवगत कराया गया है कि उनका पुत्र अनुभव भंडोला अविवाहित है और जर्मनी में शादी करना चाहता है। उनके द्वारा अपने पुत्र के लिये Marriage ability certificate जारी किये जाने का अनुरोध किया गया है।

अतः उपरोक्त प्रार्थना पत्र की छायाप्रति संलग्न कर इस आशय से प्रेषित है कि श्री अनुभव भंडोला को Marriage ability certificate जारी किये जाने के संबंध में परीक्षण कर अपनी संस्तुति सहित आख्या एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। संलग्नक उपरोक्तानुसार।

नगर मजिस्ट्रेट
गौतमबुद्धनगर।

AXIS BANK LTD.

स्वर्ण आभूषणों सहित गिरवी रखी आस्तियों की ई-नीलामी हेतु सार्वजनिक सूचना

विशेष रूप से उधारकर्ताओं और सामान्य रूप से जनता को सूचित किया जाता है कि नीचे दिए गए खातों में गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों की सार्वजनिक नीलामी एक्सिस बैंक द्वारा नीचे उल्लिखित शाखा में आयोजित करने का प्रस्ताव है। नीचे उल्लिखित उधारकर्ताओं ने सुरक्षा हेतु बैंक के पक्ष में सोने के आभूषणों (''स्वर्ण ऋण सुविधा'') को गिरवी रखकर एक्सिस बैंक लिमिटेड से क्रेडिट सुविधा का लाभ उठाया है। उधारकर्ताओं/गारंटरों को मांग नोटिस जारी किए गए थे, जिसमें उधारकर्ताओ/ग्गारंटरों को प्राप्त स्वर्ण ऋण सुविधा के लिए उनकी बकाया राशि का भुगतान करने के लिए कहा गया था। चूंकि उधारकर्ता/गारंटर बकाया ऋण राशि चुकाने में विफल रहे हैं, बैंक गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों की ई-नीलामी बिक्री करने के लिए विवश है और विशेष रूप से दिनांक **08-04-2024** को दोपहर 12:30 बजे से 03:30 बजे तक ''जैसा है जहां है'', ''जैसा है जो है, ''जो कुछ भी है'' और '' बिना कोई सहारे के आधार पर अनुसूची में वर्णित गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों की ई-नीलामी बिक्री करने के लिए विवश है।

उधारकर्ताओं और बकाया राशि का विवरण

क्र. सं.	ग्राहक का नाम	ऋण खाता नं.	बकाया राशि (रु. में)	पुनःस्मरण सूचना की तिथि	सकल वज़न	निवल वज़न
	शाखाः अशोक कुमार, नई दिल्ली (दिल्ली)					
1	शिखा मिंगलानी	XXXXXXXXXXX1828	₹ 565,709.00	09-11-2023	176.600	163.700
	शाखाः फरीदाबाद (हरि.)					
2	राज सिंह	XXXXXXXXXXX7757	₹ 271,644.85	28-12-2023	136.200	132.700
	शाखाः पालम विहार, गुड़गाँव (हरि)					
3	अंकित कटारिया	XXXXXXXXXXX1204	₹ 72,656.00	15-02-2024	20.400	20.000
4	अंकित कटारिया	XXXXXXXXXXX1217	₹ 141,260.00	15-02-2024	41.300	41.000
	शाखाः आर के मिशन, नई दिल्ली (दिल्ली)					
5	मोहम्मद शकील	XXXXXXXXXXX7747	₹ 701,134.00	15-02-2024	199.400	189.500
	शाखाः सैक्टर-14, गुड़गाँव (हरि.)					
6	पप्पू अली	XXXXXXXXXXX7730	₹ 292,618.70	15-02-2024	71.400	71.400
	शाखाः सैक्टर-16, फरीदाबाद (हरि.)					
7	अर्चना पांडे	XXXXXXXXXXX9505	₹ 27,136.00	28-12-2023	8.300	7.890
8	पंकज	XXXXXXXXXXX3170	₹ 83,186.00	15-02-2024	22.600	21.700
	शाखाः शाहदरा, दिल्ली (दिल्ली)					
9	मोनु	XXXXXXXXXXX2782	₹ 248,861.34	15-02-2024	71.200	67.800
	शाखाः गाजियाबाद (यू.पी.)					
10	एसपी सिंह	XXXXXXXXXXX1815	₹ 2,51,910.00	09-11-2023	75.100	69.800

एक्सिस बैंक लिमिटेड-बिना किसी पूर्व सूचना के खाते को हटाने/नीलामी की तारीख बदलने का अधिकार रखता है। नीलामी ऑनलाइन **https://gold.samil.in** दोपहर 12.30 बजे से 03.30 बजे के बीच आयोजित की जाएगी।
विस्तृत नियम और शर्तों के लिए, कृपया दी गई वेबसाइट https://gold.samil.in पर लॉग इन करें।
स्थान : दिल्ली,
तिथि : 29.03.2024
हस्ता/- प्राधिकृत अधिकारी,
एक्सिस बैंक लिमिटेड

Karnataka Bank Ltd. 100
Your Family Bank. Across India.

क्षेत्रीय कार्यालय: दिल्ली
प्लॉट नं. 8-बी, प्रथम तल, राजेंद्र पार्क, पूसा रोड, नई दिल्ली-110060
फोन: 011-40591567,63
ईमेल: del.ro@ktkbank.com
वेबसाइट: www.karnatakabank.com
सीआईएन: L85110KA1924PLC001128

क्षेत्रीय कार्यालय: दिल्ली

1. मैसर्स अम्बे सीमेंट, इसके प्रोपराईटर द्वारा प्रतिनिधित्व, श्री रामनिवास, पताः 3459, हंसा पुरी त्रि नगर, दिल्ली-110035
2. श्रीमती शीला देवी पत्नी श्री राम निवास मकान नं. 113, ब्लॉक एएल, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
3. श्री सुमित कंसल पुत्र श्री राम निवास मकान नं. 113, ब्लॉक एएल, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

महोदय,
(i) पीएसटीएल खाता सं. 1947001800022201 दिनांक 30-03.2021, रुपये 8,06,480.00 हेतु (ii) पीएसटीएल खाता सं. 1947001800022301 दिनांक 30-03-2021, रुपये 85,000.00 हेतु आपके नंबर-1 मैसर्स अंबे सीमेंट इसके प्रोपराईटर श्री राम निवास द्वारा प्रतिनिधित्व, आवेदक, आप नंबर-2 श्रीमती शीला देवी पत्नी श्री राम निवास, और आप नं. 3 श्री सुमित कंसल पुत्र श्री राम निवास, गारंटर ने दिल्ली लक्ष्मीनगर शाखा द्वारा सुविधाएं प्राप्त की है, जिन्हें 30.03.2021 से 29.07.2023 को गैर-निष्पादित परिसंपत्ति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। और संबंधित पक्षों को दिनांक 26.02.2024 को बैंक के अधिकृत अधिकारी द्वारा वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित अधिनियम 2002 को लागू करने की धारा 13(2) और (3) के तहत एक विस्तृत मांग नोटिस जारी करके सरफेसी अधिनियम के तहत कार्रवाई शुरू की गई है। स्पीड पोस्ट द्वारा भेजे गए उक्त मांग नोटिस उपर्युक्त पतों पर पावती के साथ भेजे गए थे, बिना सुपुर्द किए वापस कर दिए गए हैं। इसलिए, हमने सरफेसी अधिनियम 2002 में निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए इस नोटिस के माध्यम से डिमांड नोटिस की सामग्री प्रकाशित की है। दिनांक 20-02-2024 को शेष राशि अर्थात रु. 9,55,100.00 (रुपये नौ लाख पचपन हजार एक सौ मात्र) अर्थात (i) रु. 8,68,737.00 PSTL खाता सं. 1947001800022201 के तहत साथ में दिनांक 30.01.2024 से भविष्य के ब्याज, (ii) रु. 86,363.00 PSTL खाता सं. 1947001800022301 के तहत साथ में दिनांक 30.01.2024 से भविष्य के ब्याज, आपको इस पेपर प्रकाशन की तारीख से 60 दिनों के भीतर भुगतान करने के लिए कहा जाता है।

अचल सम्पत्ति का विवरण

रिहायशी सम्पत्ति (फ्लैट) का वह समस्त भाग एवं अंश जिसका क्षेत्रफल 70.00 वर्ग मी., सम्पूर्ण प्रथम तल (बिना छत के अधिकार के) जोकि सम्पत्ति नं. 113 और 144, ए एल ब्लॉक, शालीमार बाग, रिहायशी स्कीम, दिल्ली-110088 में स्थित, यह सम्पत्ति श्रीमती शीला देवी के नाम पर है।
कृपया ध्यान दें कि मैं सुरक्षित लेनदार बैंक का प्राधिकृत अधिकारी इस प्रकाशन की तारीख से 60 दिनों की समाप्ति पर या उससे पहले अपनी देनदारियों का पूर्ण निर्वहन करने की विफलता की स्थिति में उपरोक्त प्रतिभूतियों को लागू करने का इरादा रखता हूं।

स्थान : दिल्ली
दिनांक: 28.03.2024
हस्ता/- कर्नाटका बैंक लि.
मुख्य प्रबंधक और प्राधिकृत अधिकारी

सांकेतिक कब्जे की सूचना

ICICI Bank
शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, प्लॉट नंबर- 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005

जबकि
अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में तथा प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए नीचे वर्णित कर्ज़दारों को माँग सूचनाएँ निर्गमित की थीं, जिसमें उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर सूचना में वर्णित राशि का प्रतिभुगतान करने को कहा गया था।
कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार/ज़मानतदार राशि का प्रतिभुगतान करने में विफल रहे हैं, अतएव एतद् द्वारा कर्ज़दार तथा जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरदाता द्वारा सांकेतिक अधिग्रहण किया गया है जो कि उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत नियम 8 में दर्शाया गया है। संपत्ति तथा अधिग्रहण की तिथि नीचे दर्शाई गई है। एतद् द्वारा विशेष रूप से कर्ज़दार एवं जनसाधारण को संपत्ति के संव्यवहार नहीं करने के लिए सचेत किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभार के अधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार/ सह-कर्ज़दार का नाम/ ऋण खाता क्र.	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्ज़े की तिथि	डिमांड नोटिस की तिथि/ डिमांड नोटिस में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	अभिषेक पॉल/ मीरा पॉल/ LBDEL00005326322	फ्लैट/ यूनिट बियरिंग नंबर 2924/ एसकेए ग्रीन आर्च, 28वीं मंजिल, टॉवर ट्यूलिप, प्लॉट नंबर जीएच 05 बी, सेक्टर 16 बी, जीबी नगर, ग्रेटर नोएडा- 201310/ मार्च 26, 2024	नवंबर 22, 2023 रु. 36,43,374/-	दिल्ली/ एनसीआर/ कानपुर
2.	अवधेश कुमार मौर्य/ पुष्पा देवी/ LBNOD00005121311/ LBNOD00003601625/ LBNOD00005119860	फ्लैट/ दुकान नंबर एससी-224, दूसरी मंजिल, गैलेक्सी डायमंड प्लाजा, वाणिज्यिक प्लॉट नंबर सी-1 ए, सेक्टर 4, ग्रेटर नोएडा (पश्चिम)- 201307/ मार्च 26, 2024	नवंबर 29, 2023 रु. 16,51,121/-	दिल्ली/ एनसीआर

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णतः नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : मार्च 28, 2024
स्थान : दिल्ली/एनसीआर
प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लि.

कंगना के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट की होगी जांच

● उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा से विस्तृत जांच रिपोर्ट मांगी है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

एलजी विनय सक्सेना

भाजपा प्रत्याशी कंगना

कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत का विवादित पोस्ट का मामला अब दिल्ली पुलिस तक पहुंच गया है। उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने श्रीनेत के सोशल मीडिया अकांउट से अभिनेत्री और हिमाचल प्रदेश के मंडी लोकसभा क्षेत्र से भाजपा की उम्मीदवार कंगना रनौत के खिलाफ अपमानजनक पोस्ट की पुलिस आयुक्त से विस्तृत जांच रिपोर्ट मांगी है।

भाजपा नेता बांसुरी स्वराज ने एलजी को पत्र लिख श्रीनेत के खिलाफ एक महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाने के लिए जांच और कार्रवाई करने का निर्देश दिया है उपराज्यपाल ने पूरे प्रकरण के पीछे की सच्चाई सामने लाने और श्रीनेत द्वारा इस मामले में अपनी संलिप्तता से इंकार करते हुए, उनके किए गए दावों के पीछे की सच्चाई का पता लगाने का भी निर्देश दिया है। एलजी ने पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा से इस बात की भी जांच करने को कहा है कि उक्त अपमानजनक पोस्ट किसने किया था। साथ ही उस मोबाइल फोन डिवाइस की का भी पता लगाने को कहा जिसका इस्तेमाल उक्त पोस्ट को करने के लिए किया गया था। सक्सेना ने पुलिस को श्रीनेत के दावों की पुष्टि करने का भी निर्देश दिया है, जिसमें उन्होंने उक्त पोस्ट करने से इंकार किया है और इसके लिए कुछ व्यक्तियों को दोषी ठहराया है, जिनकी पहुंच उनके सोशल मीडिया अकाउंट तक है।

इसके अलावा, पुलिस इस बात की भी जांच करेगी कि करीब दो घंटे बाद पोस्ट को किसने डिलीट किया और इसे डिलीट करने के लिए किस डिवाइस का इस्तेमाल किया गया। विवाद बढ़ने के बाद श्रीनेत ने अपने सभी सोशल मीडिया अकाउंट से विवादास्पद टिप्पणी को हटा दिया। उन्होंने यह दावा किया कि विवादास्पद पोस्ट उनके द्वारा नहीं, बल्कि किसी और के द्वारा की गई थी, जिनकी उनके अकाउंट तक पहुंच थी। उपराज्यपाल को अपनी शिकायत में, बांसुरी स्वराज ने आरोप लगाया है कि श्रीनेत द्वारा की गई अपमानजनक पोस्ट ने एक महिला की गरिमा को ठेस पहुंचाई।

इस प्रकार, श्रीनेत के खिलाफ आईपीसी (भारतीय दंड संहिता) की धारा 509 के तहत अपराध बनता है। इसके मुताबिक, उन्होंने श्रीनेत के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की। इससे पहले चुनाव आयोग ने भी महिलाओं के सम्मान और प्रतिष्ठा के खिलाफ अपमानजनक और आक्रामक टिप्पणियों के लिए सुप्रिया श्रीनेत को कारण बताओ नोटिस जारी किया था। श्रीनेत के अलावा ममता बनर्जी पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने के लिए बीजेपी नेता दिलीप घोष को भी चुनाव आयोग ने नोटिस जारी किया है।

क्या है पूरा मामला

लोकसभा उम्मीदवारों की पांचवीं सूची में भाजपा ने कंगना रनौत को हिमाचल प्रदेश की मंडी लोकसभा सीट से उम्मीदवार बनाया है। इसके बाद सुप्रिया श्रीनेत के सोशल मीडिया अकाउंट से कंगना को लेकर एक बेहद आपत्तिजनक ट्वीट किया गया। हालांकि कांग्रेस नेता ने सफाई देते हुए कहा था कि उनके सोशल मीडिया का एक्सेस कई लोगों के पास है और उनमें से ही किसी ने यह पोस्ट किया। उन्होंने कहा कि जैसे ही उन्हें इसकी जानकारी लगी उन्होंने वह पोस्ट हटा दिया।

उपराज्यपाल के बयान पर मुख्यमंत्री केजरीवाल बोले, जनता देगी जवाब

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली की सरकार जेल से न चलने देने के उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना के बयान के एक दिन बाद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इसे राजनीतिक साजिश करार देते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि लोग (इसका) जवाब देंगे। एक अदालत में पेश किए जाने से कुछ समय पहले केजरीवाल से सक्सेना के बयान के बारे में पूछा गया। मुख्यमंत्री ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा, यह एक राजनीतिक साजिश है। जनता इसका जवाब देगी।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली आबकारी नीति से जुड़े धनशोधन मामले में 21 मार्च को आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल को गिरफ्तार किया था और बाद में यहां एक अदालत ने मुख्यमंत्री को 28 मार्च (आज) तक एजेंसी की हिरासत में भेज दिया था। आप नेताओं ने कई मौकों पर केजरीवाल के इस्तीफे से इनकार किया और जोर देकर कहा कि वह (केजरीवाल) जेल के अंदर से अपनी सरकार चलाएंगे। उपराज्यपाल सक्सेना ने बुधवार को कहा था, मैं दिल्ली के लोगों को आश्वस्त कर सकता हूं कि सरकार जेल से नहीं चलेगी।

केजरीवाल को परेशान किया जा रहा: सुनीता

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि मुख्यमंत्री की तबीयत ठीक नहीं है और उन्हें बहुत परेशान किया जा रहा है। केजरीवाल को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली बृहस्पतिवार को दिल्ली की एक अदालत ने मुख्यमंत्री की ईडी हिरासत एक अप्रैल तक बढ़ा दी। केजरीवाल के मामले की सुनवाई के दौरान सुनीता भी अदालत में मौजूद थीं। सुनीता ने संवाददाताओं से कहा, उनकी तबीयत ठीक नहीं है। उनके शर्करा स्तर (शुगर लेवल) में उतार-चढ़ाव हो रहा है। उन्हें बहुत परेशान किया जा रहा है। यह अत्याचार नहीं चलेगा, जनता जवाब देगी।

पिटाई का बदला लेने के लिए की थी रेस्तरा मालिक की हत्या, 3 गिरफ्तार

रेस्तरा मालिक की हत्या के आरोपी पुलिस हिरासत में।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

न्यू उस्मानपुर इलाके में एक रेस्तरा मालिक की गोली मारकर हुई हत्या के मामले का क्राइम ब्रांच की टीम ने दो लोगों को गिरफ्तार किया है। स्पेशल सीपी शालिनी सिंह ने बताया दोनों आरोपी और संजय से उनकी निजी दुश्मनी थी। संजय स्थानीय अपराधी था और हत्या के एक मामले में उसकी पिछली आपराधिक संलिप्तता थी।

संजय और उसका भाई दोनों के साथ गाली-गलौज करते थे। 8 मार्च को छोटे भाई संजय ने सुमित उर्फ मोनू को बिना किसी कारण पीटा दिया। संजय का दीपक उर्फ मोहित से पहले भी झगड़ा हुआ था। बदला लेने के लिए उन्होंने पहले संजय की हत्या की योजना बनाई। सुमित उर्फ मोनू ने दीपक उर्फ मोहित और एक अन्य साथी के साथ मिलकर हत्या की योजना बनाई। उसने अपने स्रोतों से दो पिस्तौल और गोलियां खरीदीं। उन्होंने संजय को अकेला पाकर उसकी हत्या कर दी। गौरतलब है की न्यू उस्मानपुर के गली नंबर 2 में रहने वाले संजय ने कुछ समय पहले ही गोवा बार के नाम से एक रेस्टोरेंट खोला था। बदमाशों ने करीब 8 से 10 राउंड गोलियां चलाई जिसमें 6 गोलियां संजय को लगी थी। पुलिस को जांच में यह भी पता चला था कि कई साल पहले रविंद्र नाम के एक युवक की हत्या हुई थी। जिसमें संजय पर भी आरोप लगा था। पुलिस उस एंगल से भी जांच कर रही थी।

पंजाब में ऑपरेशन लोटस चला रही है भाजपा : सौरभ

● लोकसभा सदस्य सुशील कुमार रिंकू के भाजपा में शामिल होने पर साधा निशाना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रेस वार्ता के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज। फोटो: रंजन डिमरी

पंजाब में आम आदमी पार्टी के एकमात्र लोकसभा सदस्य सुशील कुमार रिंकू के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने के एक दिन बाद वरिष्ठ आप नेता सौरभ भारद्वाज ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि राज्य में ऑपरेशन लोटस चलाया जा रहा है। विपक्षी दल जब भाजपा पर राज्यों की सरकारों को गिराने के लिए विधायकों की खरीद-फरोख्त का आरोप लगाते हैं तो इसे ऑपरेशन लोटस करार देते हैं।

भारद्वाज ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पंजाब में आप विधायकों ने बुधवार को कहा था कि उनमें से कई को फोन आ रहे हैं और भाजपा में शामिल होने के लिए पैसा, वाई श्रेणी की सुरक्षा तथा लोकसभा चुनाव में टिकट देने की पेशकश की जा रही है। उन्होंने कहा, भाजपा ऑपरेशन लोटस चला रही है। भारद्वाज ने रिंकू के भाजपा में जाने के फैसले पर भी सवाल उठाया।

उन्होंने कहा, पंजाब विधानसभा चुनाव (2022) में भाजपा का नंबर आप, शिरोमणि अकाली दल और कांग्रेस के बाद चौथा था। सवाल यह है कि रिंकू भाजपा में क्यों शामिल हुए। लोकसभा सांसद के रूप में उनका कार्यकाल भी समाप्त हो गया है। जालंधर लोकसभा चुनाव में भी भाजपा चौथे स्थान पर रहेगी। रिंकू को आम आदमी पार्टी ने इस बार भी जालंधर लोकसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया था लेकिन वह जालंधर पश्चिम से पार्टी के विधायक शीतल अंगुराल के साथ बुधवार को भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा उन्हें जालंधर से अपना प्रत्याशी घोषित कर सकती है।

रिंकू पिछले साल कांग्रेस छोड़कर आप में शामिल हुए थे और जालंधर लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में जीते थे। प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस के प्रमुख गुरपतवंत सिंह पन्नू के इन कथित दावों पर कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने 2014 में न्यूयॉर्क में संगठन के प्रतिनिधियों से मुलाकात की थी, भारद्वाज ने कहा कि यह शर्मनाक है कि भाजपा और उसके ट्रोल एक आतंकवादी के आरोपों को पूर्ण सत्य मान रहे हैं। आप नेता ने कहा, यह दिखाता है कि भाजपा राष्ट्र-विरोधी है। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र अमेरिका और जर्मनी की सरकारों द्वारा भारत में लोकतंत्र पर चिंता व्यक्त करने और केजरीवाल के लिए निष्पक्ष सुनवाई की मांग करने से परेशान है।

केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद अमेरिका और जर्मनी की सरकारों के बयान के बाद केंद्र सरकार ने दोनों देशों के राजनयिकों को तलब किया था। खबरों के मुताबिक, अमेरिकी विदेश विभाग के एक अधिकारी ने कहा था कि वाशिंगटन मुख्यमंत्री केजरीवाल के खिलाफ एक निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध कानूनी प्रक्रिया चाहता है।

आप की वरिष्ठ नेता आतिशी ने चुनावी बॉण्ड संबंधी आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि भाजपा को केंद्रीय एजेंसियों की जांच का सामना कर रहीं 41 कंपनियों से मिले पैसे का इस्तेमाल परोपकार कार्यों के लिए करना चाहिए।

जांच से क्यों भाग रही है आम आदमी पार्टी : कपूर

नई दिल्ली। आम अदमी पार्टी ने पंजाब में भाजपा पर ऑपरेशन लोट्स चलाने का आरोप लगाया। इस पर प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने पटलवार करते हुए कहा है की जब भी आम आदमी पार्टी आरोपों घिर जाती है या इसके नेता कार्यकर्ता पार्टी छोड़ने लगते हैं तो आप नेता आप्रेशन लोटस की कहानियाँ गढ़ने लगते हैं।

उन्होंने कहा कि अगर आप नेताओं के पास भाजपा के खिलाफ कोई सबूत है तो उसको सार्वजनिक करे और पुलिस में शिकायत दर्ज कराएं। गत 3 फरवरी को दिल्ली भाजपा अध्यक्ष एवं अन्य नेताओं ने इस संदर्भ में पुलिस आयुक्त से मिलकर शिकायत सौंपी और आप के आरोपों की जांच की मांग की पर जब पुलिस ने जांच करनी चाही तो मुख्य मंत्री एवं आप नेताओं ने नोटिस नहीं लिया और जांच से भाग रहे हैं।

मेट्रो स्टेशन के खंभे पर खालिस्तान समर्थक नारे लिखे मिले, केस दर्ज

नई दिल्ली। पंजाबी बाग मेट्रो स्टेशन के एक खंभे खालिस्तान से संबंधित नारे लिखे गए हैं। इस मामले में दिल्ली पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पंजाबी बाग मेट्रो स्टेशन के खंभे पर नारे लिखे होने को लेकर सुबह करीब साढ़े नौ बजे जानकारी मिली थी। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस ने मौके का निरीक्षण किया तो देश के खंभे पर काले रंग से दिल्ली बनेगा खालिस्तान लिखा हुआ था। नारे के आप-पास के एरिया को पीले रंग से रंगा गया था। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मेट्रो स्टेशन के खंभे पर राहगीरों ने पीले रंग से दिल्ली बनेगी खालिस्तान के नारे लिखे देखे थे। मौके पर पहुंची पुलिस ने नारे को मिटाया। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज को भी कब्जे में लेकर आरोपियों की पहचान करने की कोशिश कर रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि ये किसी शरारती तत्व की हरकत है,जो शहर की शांतिभंग करने की फिराक में हैं। इससे पहले जी-20 सम्मेलन से पहले मेट्रो स्टेशनों पर खालिस्तान नारे लिखे गए थे।

आप कार्यकर्ताओं ने 'मैं भी केजरीवाल' के बांटे कार्ड

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं ने आईटीओ मेट्रो स्टेशन और साकेत मेट्रो स्टेशन के बाहर लोगों को अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बारे में पर्चे भी बांटे।

आईटीओ मेट्रो स्टेशन पर विरोध प्रदर्शन कर रहे आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं को पुलिस ने हिरासत में ले लिया और प्रदर्शन करने से रोक दिया। आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने गले में मैं भी केजरीवाल के फ्लैक्स डाल रखे थे और हाथों में मैं भी केजरीवाल के पर्चे ले रखे थे। साकेत मेट्रो स्टेशन के बाहर आप की डॉक्टर विंग ने विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन में डॉक्टर विंग की अध्यक्ष निम्मी रस्तोगी भी मौजूद रहीं।

वहीं, गोल मार्केट सीएनजी पंप परऑटो विंग ने विरोध प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में ऑटो विंग के अध्यक्ष हैदर अली मौजूद रहे। विरोध प्रदर्शन करने के अलावा कार्यकर्ताओं ने लोगों को रामलीला मैदान में 31 मार्च को होने वाली इंडिया गठबंधन के बैनर तले महारैली में लोगों को पहुंचने के लिए आह्वान भी किया।

भाजपा ने केजरीवाल से मांगा इस्तीफा

● वीरेंद्र सचदेवा और मनोज तिवारी ने केजरीवाल पर साधा निशाना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की दिल्ली इकाई ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के इस्तीफे की बृहस्पतिवार को मांग की और आरोप लगाया कि राष्ट्रीय राजधानी संवैधानिक संकट का सामना कर रही है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने आबकारी नीति मामले में केजरीवाल को गिरफ्तार किया है।

भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और पार्टी सांसद मनोज तिवारी ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कहा कि केजरीवाल को हिरासत में लिए जाने के बाद आम आदमी पार्टी (आप) में से किसी को भी मुख्यमंत्री बनाया जा सकता था। तिवारी ने कहा, दिल्ली संवैधानिक संकट में है। यदि आपके मन में दिल्ली के उन लोगों के प्रति जरा भी सम्मान है, जिन्होंने आपको चुना है, तो आप किसी को भी आम आदमी पार्टी से मुख्यमंत्री बना सकते हैं। केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी पर निशाना साधते हुए सचदेवा ने कहा कि मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए आप में अंदरूनी खींचतान चल रही है।

उन्होंने एक जांच एजेंसी की हिरासत से सरकार चलाने की संवैधानिक वैधता पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा, हमें पूरी दुनिया में जेल से सरकार चलाने वाले किसी व्यक्ति का एक उदाहरण दिखाइए। यदि आपमें थोड़ी भी नैतिकता बची है तो इस्तीफा दे दीजिए।

सचदेवा ने पूछा कि यदि जेल से काम करना वैध है तो पार्टी ने मनीष सिसोदिया और सत्येन्द्र जैन से इस्तीफा क्यों लिया। ईडी ने आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल को 21 मार्च को दिल्ली आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में गिरफ्तार किया था।

अंबेडकर अस्पताल में यौन उत्पीड़न का मामला

महत्वपूर्ण मुद्दे पर कोई भी फाइल मुख्यमंत्री के माध्यम से सौंपा जाए : वीके सक्सेना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

रोहिणी स्थित बाबा साहेब अंबेडकर मेडिकल कॉलेज की एमबीबीएस छात्रा के साथ यौन उत्पीड़न के मामले में उपराज्यपाल ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने बीएसए मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल को हटाने की फाइल 14 फरवरी से रोक रखी है। राष्ट्रीय राजधानी सिविल सेवा प्राधिकरण (एनसीसीएसए) के सदस्य सचिव द्वारा इसमें तेजी लाने के लिए दिए रिमांइडर के बावजूद, मुख्यमंत्री जो कि इसके अध्यक्ष हैं, 45 दिनों से फाइल को दबाए बैठे हैं। एलजी ने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज भले ही बाबा साहेब अंबेडकर मेडिकल कॉलेज में कथित यौन उत्पीड़न मामले को लेकर हंगामा कर रहे हैं और इसके प्रिंसिपल को हटाने की मांग कर रहे हैं, लेकिन उनके ट्रांसफर की फाइल खुद मुख्यमंत्री ने रोक रखी है।

उपराज्यपाल कार्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि एलजी को 20 मार्च को लिखे एक नोट में, सौरभ भारद्वाज ने डॉ. ईश्वर सिंह को उनके पद से तत्काल हटाने की मांग की थी। इसमें आरोप लगाया गया था कि वह इस मामले में पीड़ित छात्राओं के साथ सहयोग नहीं कर रहे थे और उन्होंने इस मामले को आगे बढ़ाने को लेकर छात्राओं को हतोत्साहित कि या था। लेकिन एक बात जो सरकार की मंशा पर संदेह पैदा करती है, वह यह है कि बाबा साहेब अंबेडकर मेडिकल कॉलेज से आरोपी डॉ. ईश्वर सिंह को हटाने, ट्रांसफर की फाइल 14 फरवरी 2024 से मुख्यमंत्री केजरीवाल के पास लंबित है, जबकि इस पर फैसला एनसीसीएसए को करना है, जिसके वह अध्यक्ष हैं। इसके सदस्य सचिव ने मुख्यमंत्री को 7.मार्च 2024 और 13 मार्च को इस मामले में तेजी लाने के लिए रिमांइडर भी भेजा था, लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ।

उपराज्यपाल ने मुख्यमंत्री को लिखे एक नोट में इस तथ्य को सामने लाते हुए अफसोस जताया है कि मुख्यमंत्री की ओर से निष्क्रियता के कारण न तो ट्रांसफर, पोस्टिंग और न ही संवेदनशील मामलों पर सतर्कता कार्रवाई शुरू की जा सकी है। उपराज्यपाल ने 21 मार्च को गिरफ्तारी से पहले मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को नोट भेजा था।

मामले की गंभीरता को देखते हुए उपराज्यपाल पहले ही दिल्ली पुलिस को आपराधिक कार्यवाही में तेजी लाने का निर्देश दे चुके हैं। उन्होंने मुख्य सचिव को मामले में अनुशासनात्मक कार्यवाही में तेजी लाने का भी निर्देश दिया है। उपराज्यवाल विनय कुमार सक्सेना ने कहा कि यह बताना उचित लगता है कि स्वास्थ्य मंत्री ने मुख्य सचिव को लिखे वर्तमान नोट और पिछले किए पत्राचार में, मौजूदा प्रिंसिपल और फार्माकोलॉजी विभाग के प्रमुख के तत्काल ट्रांसफर का अनुरोध किया है।

ये मामला एलजी के अधीन है : सौरभ

नई दिल्ली। स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि आरोपियों को बचाने के लिए मुख्य सचिव बना रहे बहाने। मेडिकल कॉलेज की छात्राओं के साथ हुआ अश्लील व्यवहार स्वास्थ्य सचिव ने मंत्री से बात छिपाई। ये मामला उपराजयपाल के अधीन है। मंत्री ने कार्यवाही के आदेश दिये तो मुख्य सचिव ने स्वास्थ्य सचिव की वकालत की स्वास्थ्य विभाग में दर्जनों डॉक्टरों को दूसरी जगह भेजा जाता है। एनसीसीएसए की मीटिंग एक बहाना है। अपराधियों को बचाने के लिए मुख्य सचिव और उपराज्यपाल कार्यालय कर रहा है बहाने स्वास्थ्य मंत्री की वजह से लड़कियों को न्याय मिलेगा।

संपत्ति कर विभाग 30 व 31 को भी खुलेंगे

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद के संपत्ति कर, वाणिज्यिक, संपदा विभाग और कैश काउंटर 30 और 31 मार्च को भी खुले रहेंगे। एनडीएमसी क्षेत्र में रहने वाले उपभोक्ता बकाया संपत्ति कर, बिजली और पानी के बिल और सम्पदा बकाया जमा कर सकते हैं।

एनडीएमसी कर, संपदा, वाणिज्यिक विभाग और कैश शाखा वित्तीय वर्ष 2023-2024 के समापन के कारण शनिवार और रविवार को खुले रहेंगे संपत्ति कर और बिलों के संग्रह के लिए रात्रि 8 बजे तक और गोल मार्केट में शहीद भगत सिंह प्लेस, संसद मार्ग पर पालिका केंद्र पर स्थित सभी कलेक्शन काउंटर भी शाम 6.00 बजे तक खुले रहेंगे।

आप का दावा: फोन पर दी जा रही है धमकी

● संदीप पाठक बोले- दबंगाई से देश को हो रहा है नुकसान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) संदीप पाठक ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि आप के विधायकों को फोन कर पार्टी छोडने या परिणाम भुगतने के लिए कहा जा रहा है।

पाठक ने यह टिप्पणी मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को बृहस्पतिवार को एक अदालत में पेश किए जाने से पहले की है। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा कि भाजपा 'गुंडागर्दी' कर रही है और इससे देश को नुकसान होगा। आप नेता ने कहा, हर जगह आम आदमी पार्टी के विधायकों को फोन किया जा रहा है। (फोन करने वाले) कह रहे हैं जो चाहिए, बोलो, मिल जाएगा, नहीं आए तो तुम्हारी खैर नहीं।

उन्होंने कहा, दिल्ली और पंजाब की जनता ने इतनी उम्मीद से केजरीवाल को चुना है, और यह जनता का अधिकार है। भाजपा यह गुंडागर्दी किसी पार्टी से नहीं कर रही है बल्कि देश के साथ कर रही है। इसका नुक़सान किसी पार्टी को नहीं है बल्कि देश को होगा। पाठक को एक्स पर जवाब देते हुए भाजपा प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने उन्हें उस भाजपा नेता का नाम बताने की चुनौती दी जिसने किसी आप विधायक को फोन कर प्रलोभन दिया हो। उन्होंने आरोप लगाया, सच यह है कि अरविंद केजरीवाल के भ्रष्टाचार के किस्सों के चलते आप का कुनबा बिखर रहा है। केजरीवाल को प्रवर्तन निदेशालय ने रद्द की जा चुकी आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में 21 मार्च को गिरफ्तार किया था। वह 28 मार्च तक एजेंसी की हिरासत में हैं।

अपनी पोस्ट में पाठक ने यह भी कहा कि देश को तोड़ने के लिए पहले भी ऐसे कई प्रयास अंग्रेजों, मुग़लों द्वारा किए गए हैं और इसका इतिहास गवाह है कि वे सारे प्रयास असफल हुए। उन्होंने कहा, भाजपा का भी यह प्रयास असफल होगा।

बदमाशों की मांग पर हथियार बेचने वाले 4 तस्कर गिरफ्तार

● नासिर और छेनू गैंग को करते थे सप्लाई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अपराध शाखा ने हथियारों को ऑन डिमांड बनाकर गैंगस्टरों तक सप्लाई करने वाली एक बड़ी चैन को तोड़र चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान ओसामा उर्फ आशु, शाकिब उर्फ मुल्ला, नोशाद अंसारी और आमिर के रूप में हुई है।

जिनके कब्जे से एक 12 बोर बन्दूक, दो सात पिस्टल,बीस कारतूस और हथियार बनाने का सामान बरामद किया है। गैंग छेनू और नासिर गैंग के गुर्गो को सप्लाई किया करते थे। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि पिछले कुछ समय से शाखा की टीम दिल्ली/एनसीआर में विशेष रूप से ट्रांस-यमुना इलाके में अवैध हथियार खरीदने व बेचने वाले गैंग के बारे में पता करने की कोशिश कर रही है। एएसआई प्रवीण की एक जानकारी के बाद एसआई देवेंद्र, एसआई अरविंद दांगी, एएसआई प्रवीण, एएसआई जितेंद्र, एएसआई महेंद्र, हेड कांस्टेबल महताप, सूर्या,सोहित कांस्टेबल अनिल और दीपक को आरोपी को पकड़ने का जिम्मा सौंपा गया।

हरियाणा में भाजपा के लिए माहौल शानदार, दसों सीटें जीतना तय : डा. सतीश पूनिया

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

2024 के लोकसभा चुनाव को ऐतिहासिक बनाने की कवायद में जुटी भाजपा का दूसरे दिन भी गुरुग्राम में बैठकों का दौर जारी रहा। गुरुवार को भी यहां पार्टी कार्यालय में प्रदेश लोकसभा चुनाव प्रभारी सतीश पूनिया की अध्यक्षता में दो महत्वपूर्ण बैठकें हुईं। पहली बैठक में कलस्टर इंचार्ज, लोकसभा प्रभारी, लोकसभा संयोजक एवं लोकसभा विस्तारक शामिल हुए, जबकि दूसरी बैठक मोर्चा पदाधिकारियों के साथ हुई।

बैठक में डा. सतीश पूनिया, प्रदेश लोकसभा चुनाव सह प्रभारी सुरेन्द्र नागर, चुनाव प्रबंधन समिति संयोजक सुभाष बराला, संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा आदि वरिष्ठ नेताओं ने आगामी दिनों में

भाजपा की दो दिनों में पांच बैठकें, बनी अभेद रणनीति

होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की। बैठक में आगामी दिनों में लोकसभा और विधानसभा स्तर पर होने वाली रैलियों की तिथियों पर भी चर्चा हुई। बैठकों के बाद डा. सतीश पूनिया ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि बैठकों में सभी विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। दो दिनों तक लगातार हरियाणा के पदाधिकारियों की बैठक लेने के बाद लोकसभा चुनाव प्रभारी डा. पूनिया ने दावा किया कि हरियाणा में 10 की 10 लोकसभा सीटें भारतीय जनता पार्टी जीतने जा रही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में

गुरुग्राम भाजपा कार्यालय में कलस्टर इंचार्ज, लोकसभा प्रभारी, लोकसभा संयोजक एवं लोकसभा विस्तारक की बैठक में मौजूद पदाधिकारी।

भाजपा के प्रति शानदार माहौल है। चुनाव प्रभारी ने बैठकों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इन बैठकों में लोकसभा प्रत्याशियों से चुनाव को लेकर होने वाले आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा हुई है।

डा. पूनिया ने बताया कि पार्टी के सभी विभागों के साथ चुनाव प्रबंधन को लेकर भी सारगर्भित चर्चा हुई है। उन्होंने कहा कि चुनाव में संगठन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है और हरियाणा में संगठनात्मक रूप से भाजपा मजबूत है। डा. सतीश पूनिया ने कहा कि हरियाणा के लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चाहते हैं और डबल इंजन की सरकार के कामों से संतुष्ट हैं। मोर्चों की भूमिका पर बोलते हुए डा. पूनिया ने कहा कि भाजपा के छह मोर्चे हैं और सभी मोर्चों की अपनी-अपनी अहमियत है। डा. पूनिया ने कहा कि मिशन 370 और मिशन 400 पार के लिए हरियाणा संकल्पित है और निश्चित तौर पर दस की दस लोकसभा सीटें जीताकर हरियाणा की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास भेजेगी। उन्होंने कहा कि मोदी और नायब सरकार के कार्य धरातल पर दिखाई दे रहे हैं। सेवा, सुशासन, सुरक्षा और गरीब कल्याण के लक्ष्य को लेकर डबल इंजन की सरकार काम कर रही है। पिछले 10 सालों में मोदी सरकार की योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव के सभी वर्गों के लोगों को मिल रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत का सम्मान विश्व में बढ़ा है।

प्रेमी संग मिल रची पति की हत्या की साजिश, प्रेमी ने की हत्या

पुलिस की गिरफ्त में हत्या की साजिश रचने वाली पत्नी व हत्यारोपी पत्नी की प्रेमी।

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

पुलिस ने मृतक की पत्नी व पत्नी के प्रेमी को किया गिरफ्तार

यहां सेक्टर-10 पुलिस थाना के अंतर्गत बसई एनक्लेव पार्ट-2 में एक व्यक्ति की हत्या का पुलिस ने खुलासा करते हुए एक महिला व एक व्यक्ति को काबू किया है। पूछताछ के बाद सामने आया है कि यह हत्या प्रेम प्रसंग के चलते उनकी पत्नी ने अपने प्रेमी से कराई थी। एसीपी क्राइम वरुण कुमार ने गुरुवार को बताया कि दोनों को बसई एनक्लेव से ही काबू किया गया है।

जानकारी के अनुसार 27 मार्च 2024 को सेक्टर-10 पुलिस थाना में शिकायत मिली थी कि बसई एनक्लेव पार्ट-2 में किसी व्यक्ति का शव पड़ा हुआ है। इस सूचना पर पुलिस ने मौके पर जाकर जांच-पड़ताल की। पुलिस की सीन ऑफ क्राइम टीम, एफएसएल व फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट को मौके पर बुलाया गया व गहनता से जांच की गई। मृतक के भाई ने पुलिस टीम को शिकायत देकर कहा कि उसका भाई मुकेश निवासी गांव बहबलपुर, जिला कन्नौज उत्तर-प्रदेश अपने परिवार सहित गुरुग्राम में रहता था। 27 मार्च को उसे सूचना मिली कि उसके भाई मुकेश की गला दबाकर हत्या कर दी गई है। सेक्टर-10 थाना प्रबंधक निरीक्षक संदीप की देखरेख में पुलिस टीम ने हत्यारोपियों तक पहुंचने के लिए जांच शुरू की।

पूछताछ के आधार पर पुलिस को कुछ सुबूत मिले। पुलिस ने गुरुवार को बसई एनक्लेव से मुकेश की पत्नी सीमा और उसके प्रेमी शेखर को काबू कर लिया। शेखर राजस्थान के जिला धौलपुर के गांव बाड़ी का रहने वाला है। फिलहाल वह बसई एनक्लेव में ही रहता था। वह कैब ड्राइवर का काम करता है। आरोपी से पुलिस पूछताछ में पता चला है कि मृतक मुकेश हत्यारोपी शेखर का दूर के नाते में मामा लगता था। मृतक मुकेश अपनी पत्नी के साथ बसई एन्क्लेव में किराए रहता था। आरोपी शेखर भी उनके नजदीक ही किराए पर रहता था। उसका मुकेश के पास आना-जाना रहता था। इसी दौरान मुकेश की पत्नी के साथ आरोपी शेखर अवैध संबंध बन गए। इनके अवैध सम्बन्धों का पता मुकेश (मृतक) को चल गया था। जिसके कारण मुकेश अपनी पत्नी को अपने गांव छोड़ आया था। आरोपी शेखर व मुकेश की पत्नी सीमा के साथ मिलकर मुकेश को रास्ते से हटाने के लिए उसकी हत्या करने की योजना बनाई। 27 मार्च को करीब 10 बजे उसने मौका पाकर मफलर से मुकेश का गला घोंटकर हत्या कर दी।

सैनिक से उद्यमी बनकर खड़ी की सालाना 4000 करोड़ के कारोबार वाली कंपनी

सेवानिवृत मेजर डा. टीसी राव ने अनेक क्षेत्र में अपने बिजनेस का किया है प्रसार

बंकर से बिलिनेयर-एक सैनिक की सफलता की कहानी पुस्तक में है जीवन के अनुभव

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

एक सैनिक के रूप में देश की सेवा करना और फिर सेवानिवृत के बाद सामान्य तौर पर फौजी अपना कोई छोटा सा व्यवसाय शुरू करता है। या फिर कहीं निजी या सरकार उपक्रम में नौकरी करता है। हम एक ऐसे सैनिक, फौजी के जीवन का फलसफा बता रहे हैं, जिसने सेवानिवृति के बाद खुद को बिजनेस के रूप में एक साम्राज्य खड़ा किया। आज वे 4000 करोड़ सालाना कारोबार की कंपनी के मालिक बन गए हैं।

हम बात कर रहे हैं सेवानिवृत मेजर डॉ. टीसी राव की। रेवाड़ी जिला के छोटे से गांव कैलाशपुर

सेवानिवृत मेजर डा. टीसी राव की आत्मकथा बंकर से बिलिनेयर-एक सैनिक की सफलता की कहानी पुस्तक का विमोचन करते सेनाध्यक्ष जनरल मनोज पांडे।

ढाणी जाटूसाना में 7 जुलाई 1957 को जन्म डा. टीसी राव की मां गृहिणी थी और पिता राव रामचंद्र सूबेदार पद से सेवानिवृत थे। उनकी शिक्षा की बात करें तो अंग्रेजी, सैन्य विज्ञान और श्रम अध्ययन में उन्होंने मास्टर डिग्री है। उन्होंने औद्योगिक संबंध एवं कार्मिक प्रबंधन में पीजी डिप्लोमा और पीएचडी (रक्षा अध्ययन) किया। बचपन से ही खेल और नए प्रयोगों में रुचि रखने वाले डा. राव ने सेना से सेवानिवृति के बाद ऐसा प्रयोग किया कि आज वे बंकर से बिलिनेयर तक पहुंचने वाले सैनिक कहलवा रहे हैं।

ग्यारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करके खेल कोटे से मिली थी नौकरी : ग्यारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद 16 सितंबर, 1976 को वे खेल कोटा के माध्यम से भारतीय सेना में शामिल हुए थे। सेना से सेवानिवृति के बाद डा. राव ने गुरुग्राम में स्काईलार्क नाम से अपनी कंपनी शुरू की। डॉ. टीसी राव के मुताबिक उनके व्यवसाय का कई क्षेत्रों में फैलाव है। सुरक्षा सेवाओं (मुख्य कंपनी) से लेकर टोल संग्रह, राजमार्ग निर्माण, रेलवे लाइन बिछाने, रेलवे स्टेशनों का निर्माण, ओवरहेड टैंक, जल आपूर्ति लाइनें बिछाने का काम करती है। विभिन्न क्षेत्रों में काम करते हुए डा. टीसी राव अब सालाना 4000 करोड़ के कारोबार वाली कंपनी के मालिक बन गए हैं। मल्टी-ब्रांड कार सेवा केंद्र, खनन, अफ्रीकी देशों से लकड़ी का निर्यात और पांच अलग-अलग देशों में भी उनकी कंपनी स्काईलार्क की उपस्थिति है।

सेनाध्यक्ष मनोज पांडे ने भी डा. राव के सफर को सराहा : सेनाध्यक्ष (सीओएएस) जनरल मनोज पांडे ने डा. टीसी राव की आत्मकथा बंकर से बिलिनेयर-एक सैनिक की सफलता की कहानी नामक पुस्तक का अनावरण करते हुए कहा कि वे हर सैनिक और हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उनका यह सफर मेहनत की पराकाष्ठा है। कर्नल महाबीर यादव, कर्नल अनिल यादव ने भी उनके इस सफर को सराहा।

डा. टीसी राव ने कहा कि सेनाध्यक्ष से मुलाकात के दौरान उन्होंने पूर्व सैनिकों के पुनर्वास से संबंधित अपने अनुभवों और पहलों पर भी चर्चा की। विशेष रूप से अग्निवीरों के प्रस्तावित पुनर्वास पर जोर दिया। उन्होंने शारीरिक रूप से अक्षम पूर्व सैनिकों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला और उनकी स्थितियों में सुधार के लिए सरकारी समर्थन के महत्व पर जोर दिया। इसके अलावा डॉ. राव ने हरियाणा सरकार द्वारा उठाए गए सक्रिय कदमों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। जैसे सरकारी स्कूलों का नाम शहीदों के नाम पर रखना और अनुग्रह राशि को बढ़ाकर एक करोड़ करना। उन्होंने हमारे सशस्त्र बलों के बलिदानों का सम्मान करने और उनके परिवारों का समर्थन करने के लिए भारत सरकार के अन्य राज्यों द्वारा भी इसी तरह की प्रथाओं को अपनाने की वकालत की।

भाजपा चुनावों के लिए तैयार कांग्रेस की कोई टिकट लेने को नहीं तैयार : नवीन गोयल

अन्य दलों से भाजपा का लगातार दामन थाम रहे हैं नेता

गुरुग्राम। व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा हरियाणा के प्रदेश संयोजक नवीन गोयल ने एक तरफ तो कहा कि भारतीय जनता पार्टी लोकसभा चुनावों के लिए पूरी तरह से तैयार है, दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी में लोकसभा की टिकट लेने के लिए कोई नेता तैयार नहीं हो रहा। हरियाणा में कांग्रेस आपसी कलह में उलझी हुई है। संगठन रहित इस दल का नेतृत्व भी मजबूत नजर नहीं आ रहा। उन्होंने कहा कि भाजपा ने गुरुवार को 10 राज्यों में चुनाव प्रभारियों की नियुक्ति करके संगठन को संबंधित क्षेत्रों में मजबूती देने का काम किया है।

लोकसभा चुनावों के लिए प्रभारी बनाए गए भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश धनखड़ (दिल्ली), निवर्तमान सांसद संजय भाटिया (उत्तर प्रदेश सह-प्रभारी), पूर्व मंत्री कैप्टन अभिमन्यु (असम) को दी बधाई देते हुए नवीन गोयल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी संगठन में हर कार्यकर्ता को उचित मान और सम्मान मिलता है। संगठन में शामिल लाखों सदस्यों को कोई ना कोई जिम्मेदारी देकर समाज सेवा के क्षेत्र में पार्टी से सक्रिय किया है। नवीन गोयल ने कहा कि भारतीय जनता

नवीन गोयल।

पार्टी वैसे तो पहले से ही चुनावी मोड में है, अब संगठन ने चुनावी तैयारियों को और अधिक तेज कर दी हैं। लोकसभा चुनावों को लेकर कांग्रेस का अभी कोई अता-पता नहीं है। वहां नेता टिकट लेने से बच रहे हैं। कोई भी टिकट लेने के लिए आगे नहीं आना चाहता। हर कोई एक-दूसरे पर टाल रहा है।

भाजपा में सभी वरिष्ठ नेता चुनावों को लेकर बैठकें करके संगठन के कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों में जोश का संचार कर रहे हैं। भाजपा पार्लियामेंट्री बोर्ड की सदस्या एवं केंद्रीय चुनाव समिति की सदस्या डा. सुधा यादव, केंद्रीय राज्य मंत्री एवं गुरुग्राम लोकसभा से भाजपा उम्मीदवार राव इंद्रजीत सिंह के नेतृत्व में भी संगठन और सरकार के स्तर पर खूब कार्य हुए हैं। संगठन में हर नेता, हर कार्यकर्ता मजबूती से काम कर रहा है।

संक्षिप्त समाचार

छह अप्रैल को कार्यकर्ता अपने घरों पर लगाएंगे भाजपा का झंडा

लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति, लोकसभा प्रभारी, कलस्टर प्रभारी और सभी छह मोर्चों के अध्यक्षों के साथ बैठक में बोलते सुभाष बराला।

गुरुग्राम। लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति संयोजक एवं राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने कहा कि लगातार दो दिनों से हो रही बैठकों में आगामी दिनों में होने वाले अलग-अलग कार्यक्रमों को तय किया गया है। लोकसभा चुनाव को लेकर विधानसभा स्तर पर होने वाली रैलियों पर बैठक में चर्चा हुई है। उन्होंने कहा कि भाजपा के स्थापना दिवस पर 6 अप्रैल को सभी कार्यकर्ता अपने-अपने घरों पर पार्टी का झंडा लगाएंगे। 14 अप्रैल बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जयंती पर भी प्रदेश में अलग-अलग कार्यक्रम होंगे। सुभाष बराला ने कहा कि बैठकों में लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति, लोकसभा प्रभारी, कलस्टर प्रभारी और सभी छह मोर्चों के अध्यक्षों के साथ हुई बैठक में जिम्मेदारियां तय की गई है। विधानसभा स्तर पर रैलियां तय हुई जिनमें 20 से 22 विधानसभाओं में मुख्यमंत्री नायब सैनी और पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल व अन्य वरिष्ठ नेता जाएंगे। बराला ने कहा कि मोर्चा अध्यक्षों को भी अपने-अपने वर्गों में काम करने का टारगेट दिया गया है।

नूंह जिले की अनाज मंडियों में शुरू हुई आवक

नूंह। नूंह जिला हरियाणा में सरसों उत्पादन में दूसरे नंबर पर है। सरसों की फसल की आवक मंडियों में शुरू हो चुकी है। अनाज मंडी नूंह तथा अनाज मंडी पुनहाना में सबसे ज्यादा सरसों की खरीद होती है। इस बार सरकार ने प्रति क्विंटल 5650 सरकारी रेट निर्धारित किया है। किसान अनाज मंडी में लाकर अपनी फसलों को सुखाने में लगा हुआ है। मार्केट कमेटी नूंह के द्वारा अनाज मंडी नूंह में किसानों के लिए बिजली, पानी, शौचालय सहित तमाम सुविधाएं की गई हैं। मार्केट कमेटी नूंह सचिव शिरीन कुमार ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि 26 मार्च से ही सरसों की आवक अनाज मंडी में शुरू हो गई है। इससे पहले भी प्राइवेट आढ़तियों के द्वारा तकरीबन 5000 - 10000 क्विंटल सरसों की खरीद की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि खरीद एजेंसी के अधिकारियों - कर्मचारियों की कमी के साथ - साथ सरसों की फसल में नमी की वजह से अभी तक सरकारी रेट पर सरसों की फसल की खरीद नहीं हुई है, लेकिन एक - दो दिन में ही जैसे ही नमी दूर होगी तो 5650 रुपए प्रति क्विंटल के दर से किसानों की सरसों की फसल को खरीदा जाएगा। उन्होंने कहा कि 26 मार्च से सरकारी खरीद शुरू होने की घोषणा की गई है और आगामी 15 मई तक सरकारी खरीद होने की संभावना है। कुल मिलाकर अनाज मंडी में अब सरसों की ढेरी चारों तरफ दिखाई दे रही हैं और पल्लेदार उस फसल में काम करते हुए दिखाई पड़ रहे हैं। इस बार सरसों की अच्छी फसल होने की उम्मीद है और भाव भी किसानों को अच्छा मिल रहा है। इससे किसानों के जीवन में खुशहाली आने से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन नमी की वजह से खरीद में हो रही देरी से किसान थोड़ा चिंता में जरूर है। मार्केट कमेटी सचिव ने बताया कि अगर पिछले साल की बात करें तो तकरीबन 11000 क्विंटल प्राइवेट तथा 4000 क्विंटल से अधिक सरसों की खरीद सरकारी रेट पर की गई थी।

सीएम नायब सैनी, पूर्व सीएम मनोहर लाल ने पूर्व जिलाध्यक्ष के पिता के निधन पर परिवार को दी सांत्वना

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष भूपेंद्र चौहान के पिता अनिमेष चौहान के निधन पर गुरुवार को मुख्यमंत्री नायब सैनी और पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल उनके अवास पर वजीरपुर पहुंचे। दोनों नेताओं ने स्वर्गीय अनिमेष के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। परिजनों से मिलकर सांत्वना दी। मुख्यमंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने और शोक संतृप्त परिवारों को यह दुःख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की।

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि स्व. अनिमेष चौहान सामाजिक कार्यों में सदैव सक्रिय रहे हैं। उन्होंने समाज की चिंता करने वाले व्यक्तित्व थे, जिन्होंने जीवन पर समाज की सेवा की। नायब सैनी कहा कि स्व. अनिमेष चौहान के दिखाए मार्ग पर चलते हुए उनके पुत्र भूपेंद्र चौहान भी

गांव वजीरपुर में भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष भूपेंद्र चौहान के पिता अनिमेष चौहान के निधन पर शोक प्रकट करने पहुंचे सीएम नायब सैनी व पूर्व सीएम मनोहर लाल।

समाज हित में लगातार सक्रिय होकर काम कर रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने भी कहा कि स्वर्गीय अनिमेष जी एक बेहतर व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने जीवन भर समाज की भलाई के बारे में सोचा।

इस मौके पर अशोक चौहान, मनोज चौहान शैलेंद्र चौहान, मनमीत चौहान, राजपूत महासभा के अध्यक्ष तिलकराज चौहान, पूर्व अध्यक्ष सत्येंद्र चौहान, नंबरदार विजय चौहान, धर्म सिंह चौहान, गजेंद्र चौहान, राजकुमार तोमर, नरेश राघव, नीरज राघव, प्रमोद चौहान, जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष कल्याण चौहान, महेश चौहान, भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अनिल गंडास, परीक्षित भारद्वाज, स्वतंत्रता सेनानी संगठन के प्रदेश अध्यक्ष महावीर भारद्वाज, ईश्वर तंवर, नवीन चौहान, मिंटू चौहान, सतीश सैनी, नंदू सैनी एवं परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

भाजपा को जड़ से उखाड़ने का काम करेगी इंडिया गठबंधन की महारैली :पंकज डावर

सभी 36 बिरादरी के लोग एकजुट होकर भारी से भारी संख्या में आगामी 31 मार्च को दिल्ली के रामलीला मैदान में पहुंचें

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

आगामी 31 मार्च को दिल्ली के रामलीला मैदान में होने जा रही इंडिया गठबंधन की महा रैली इतिहास रचने का काम करेगी यह रैली भाजपा को जड़ से उखाड़ फेंकने का भी काम करेगी यह कहना है कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पंकज डावर का।

पंकज डावर ने कहा कि 31 मार्च को होने वाली रैली देश में शांति और सौहार्द का संदेश देने का काम करेगी। आज देश में किस तरह आम जनता की आवाज को सलाखों के पीछे

पंकज डावर।

पहुंचाया जा रहा है यह सब जनता के सामने उजागर हो रहा है। भाजपा सत्ता के नशे में चूर होकर किस तरह विपक्ष के नेताओं को सरकारी एजेंसियों के जरिए परेशान कर रही है और बेवजह उन्हें जेल में डाल रही है। यह सब जनता देख रही है देश की जनता अब भाजपा के इस शासन से तंग आ चुकी है। इसलिए उनकी अपील है कि सभी देशवासी सभी 36 बिरादरी के लोग एकजुट होकर भारी से भारी संख्या में आगामी 31 मार्च को दिल्ली के रामलीला मैदान में पहुंचें, जिससे कि इस सरकार को सबक सिखाने में सफलता मिल सके।

पंकज डावर ने कहा कि आज देश की जनता बेरोजगारी के दलदल में फंसती जा रही है। युवाओं के पास ना तो कोई रोजगार है और ना ही रोजगार मिलने की संभावनाएं। इसी तरह महंगाई ने भी देश के आम नागरिकों की कमर तोड़कर रख दी है। इन सब समस्याओं से देश के नागरिकों को छुटकारा दिलाने के लिए पूरे देश के विपक्ष ने महागठबंधन किया है। अब महागठबंधन दिल्ली के रामलीला मैदान में अपनी ताकत दिखाएगा। पंकज डावर ने कहा कि 31 मार्च को वह खुद सैकड़ो वाहनों में कार्यकर्ताओं के साथ दिल्ली के रामलीला मैदान में पहुंचेंगे और महारैली को सफल बनाने में अपना पूर्ण योगदान देंगे।

प्लास्टिक्स रीसायक्लिंग एक्सपो, भारत के प्लास्टिक रीसायक्लिंग उद्योग के तीव्र विकास पर रोशनी डालेगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अग्रणी विश्वस्तरीय इवेंट आयोजनकर्ता मीडिया फ्यूजन एण्ड क्रेन कम्युनिकेशन्स ने प्लास्टिक्स रीसायक्लिंग शो इंडिया 2024 (पीआरएसआई 2024) के पहले संस्करण की घोषणा की है, जिसका आयोजन 4-6 दिसम्बर 2024 के बीच मुंबई के बॉम्बे एक्जहीबिशन सेंटर में किया जाएगा। पीआरएसआई 2024 के साथ विश्वस्तर पर विख्यात प्लास्टिक रीसायक्लिंग शो ब्राण्ड भारत में प्रवेश करेगा। 2023 में भारत का कुल मार्केट वॉल्युम 9.9 मिलियन टन था, उम्मीद है, कि यह 2024 से 2032 के बीच 9.86 फीसदी की दर से बढ़कर 2032 तक 23.7 मिलियन टन तक पहुंच जाएगा। पीआरएसआई उद्योग जगत के हितधारकों के लिए मुख्य आयोजन होगा। कार्यक्रम के महत्व पर बात करते हुए श्री ताहेर पटरावाला, मैनेजिंग डायरेक्टर, मीडिया फ्यूजन ने कहा, ''आज पूरी दुनिया स्थायी प्रथाओं की ओर रूख कर रही है। ऐसे में जरूरी है, कि देश प्लास्टिक प्रदूषण की बढ़ती समस्या को हल करे। भारत सरकार के सक्रिय प्रयास जैसे सिंगल-यूज प्लास्टिक पर रोक और एक्सटेंडेड प्रोड्युसर रिस्पॉन्सिबिलिटी (ईपीआर) विनियम, प्लास्टिक व्यर्थ प्रबन्धन के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।'' पीएसआरआई का लॉन्च इस समस्या को हल करने की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मध्य पूर्व और यूरोप में सफल संस्करणों के बाद इस शो को भारत लाने से देश सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप प्लास्टिक एवं व्यर्थ का जिम्मेदाराना प्रबन्धन करते हुए स्थायी भविष्य के निर्माण की दिशा में अग्रसर होगा।

तीन दिवसीय प्रदर्शनी और उच्च स्तरीय प्लास्टिक रीसायक्लिंग एवं सस्टेनेबेल पैकेजिंग सम्मेलन-प्रतिनिधियों, विचारकों, इनोवेटर्स और तकनीक प्रदाताओं को एक ही मंच पर लाएगा। यह शो आपसी साझेदारियों तथा स्थायी भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगा। उद्योग जगत के आपूर्तिकर्ता, निर्माता, टेक्नोलॉजी विशेषज्ञ, व्यर्थ प्रबन्धक, कन्सलटेन्ट और उभरते प्लेयर्सएक ही मंच पर कारोबार के अवसरों के साथ जुड़ने का मौका पा सकेंगे।

शो के साथ आयोजित होने वाले सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ प्लास्टिक सेक्टर एवं हरित भविष्य से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे जैसे सर्कुलर इकोनोमी के सिद्धान्त, स्थायी पैकेजिंग, विनियम, चुनौतियां, अवसर, इनोवेशन, तकनीकें एवं रूझान। पीआरएसआई 2024 का अनावरण के बाद मुंबई में एक गोलमेज सम्मेलन हुआ, जहां उद्योग जगत के विचारकों ने प्लास्टिक रीसायक्लिंग की चुनौतियों एंव अवसरों पर विचार प्रस्तुत किए।

लैंक्सेस को वित्त वर्ष 2024 में अर्निंग्स में सुधार की उम्मीद

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

वित्त वर्ष 2023 में स्पेश्यिलिटी केमिकल्स कंपनी लैंक्सेस ने विक्रय में 6,714 बिलियन यूरो का आँकड़ा पार किया, जो पिछले वर्ष के 8.088 बिलियन यूरो से तुलना में 17.0 कम था। पूर्व अपवादात्मक ईबीआईटीडीए पिछले वर्ष के 930 मिलियन यूरो की तुलना में 44.9 प्रतिशत तक की गिरावट के साथ 512 मिलियन यूरो पर दर्ज हुआ। पूर्व अपवादात्मक ईबीआईटीडीए मार्जिन 7.6 प्रतिशत रहा, जबकि इसके पिछले वर्ष में यह 11.5 प्रतिशत था।

वित्त वर्ष 2023 में बिक्री 17.0 प्रतिशत की सालाना गिरावट के साथ 6.714 बिलियन यूरो रही

कमजोर माँग और बिक्री के वॉल्यूम में सम्बद्ध गिरावट तथा उच्च निष्क्रिय लागतों के कारण अर्निंग्स में महत्वपूर्ण गिरावट आई, जो मुख्य रूप से स्पेश्यलिटी ऐडिटिव्स और ऐडवांस्ड इंटरमीडिएट्स सेग्मेंट्स में यह गिरावट अधिक स्पष्ट थी। इसके अलावा, इन दो सेगमेंट्स में कच्चे माल और ऊर्जा के लिए न्यून अधिप्राप्ति कीमतों से बिक्री की कीमतें प्रभावित हुईं। उपभोक्ता संरक्षण सेगमेंट में अर्निंग्स में बस अपेक्षाकृत मध्यम गिरावट दर्ज हुई। इसमें जुलाई 2022 की शुरूआत में आईएफएफ से प्राप्त माइक्रोबियल कण्ट्रोल बिजनेस का योगदान सकारात्मक था।

लैंक्सेस के सीईओ, मैथियास जैशर्ट ने कहा कि, ''इस दौर से यथासंभव मजबूती के साथ उबरने और फिर से समय सुधरने पर सबसे बेहतरीन स्थिति में पहुंचने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रख रहे हैं। अपनी ''फॉरवर्ड'' कार्य योजना के साथ हमने आरंभिक चरण में सही कदम उठाये हैं।'' जर्मन केमिकल इंडस्ट्री के लिए वर्ष 2023 अनेक ग्राहक उद्योगों और बाजार के क्षेत्रों में कमजोर माँग के साथ-साथ ग्राहकों द्वारा इन्वेंटरी में कमी, जर्मनी में ऊर्जा की ऊँची कीमतें, और भू-राजनैतिक तनावों के साथ अनेक संकटों का साल था। लैंक्सेस के लिए भी वित्त वर्ष 2023 ऐसा ही गुजरा। लेकिन वर्तमान वर्ष के लिए ग्रुप को अर्निंग्स में मध्यम वृद्धि की उम्मीद है।

वर्ष 2023 में 443 मिलियन यूरो के आँकड़े के साथ शुद्ध आय पिछले साल के 250 मिलियन यूरो से काफी ज्यादा थी। यह विशेष रूप से एन्वेलियर के गठन के लिए सौदे के फलस्वरूप ऐडवेंट इंटरनेशनल से लैंक्सेस को मिली राशि के कारण था। माइनस 843 मिलियन यूरो पर, चालू परिचालनों से प्राप्त शुद्ध आय पिछले वर्ष के 184 मिलियन यूरो से काफी कम रही। यह गिरावट मुख्य रूप से परिचालनगत अर्निंग्स के विकास और अधिग्रहणों से साख के नुकसान का नतीजा थी।

'जन्मजात विकारों को पहचान कर जिला अस्पताल के डीईआईसी सेंटर में संपर्क करें'

माताओं को प्रजनन के दौरान पर्याप्त पौष्टिक आहार लेना चाहिए

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

जिला नागरिक अस्पताल पलवल के डिलीवरी कक्ष, एसएनसीयू व राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यरत डॉक्टरों द्वारा स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्रों में स्क्रीन किए गए बच्चों को जिला नागरिक अस्पताल पलवल के डीईआईसी सेंटर में उपचार हेतु रेफर किया जाता है।

एसएमओ डॉक्टर अजय माम ने बताया कि जन्मजात विकार जैसे कि हृदय विकार, न्यूरल ट्यूब डिफेक्ट, रीढ़ की हड्डी पर फोड़ा, जन्मजात मोतियाबिंद, कटे होंठ व कटा तालु, पैर के पंजों का अंदर की तरफ मुड़ा होना यानि टेढ़े मेढे पैर, डाउन सिंड्रोम, जन्मजात बधिरता, डिस्लोकेशन का हिप यानि कूल्हे की हड्डी का खिसकना, रेटिनोपैथी का प्रीमेच्योरिटी, सिर का आकार बड़ा होना व उसमें लिक्विड भरा होना आदि जन्मजात विकार हैं। जिनका इलाज नागरिक अस्पताल के डीईआईसी सेंटर के माध्यम से जिला नागरिक अस्पताल पलवल, स्वास्थ्य विभाग के पैनल पर तृतीय स्तर पर श्री सत्य साईं अस्पताल बघोला, फरीदाबाद, दिल्ली व हिसार आदि हायर सेंटरों में यानि सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों में किया जाता है।

नवजात शिशु की जांच

डॉ. अजय माम ने बताया कि एक बाल रोग विशेषज्ञ आपके बच्चे के जीवन के पहले कुछ दिनों में सुनने की समस्याओं, हृदय की स्थिति, रक्त, चयापचय और हार्मोन संबंधी विकारों की जांच करते हैं, जिसे नवजात शिशु की जांच कहा जाता है। ऐसी समस्याओं का शीघ्र पता लगाने से अक्सर उन्हें अधिक गंभीर शारीरिक, बौद्धिक, देखने या सुनने की विकलांगता बनने से रोका जा सकता है।

उन्होंने बताया कि जन्मजात विकारों को रोकने व दूर करने के लिए माताओं को प्रजनन के दौरान पर्याप्त मात्रा में विटामिंस, खनिज, फोलिक एसिड युक्त आहार लेना चाहिए। गर्भवती होने से पहले तथा गर्भावस्था की पहली तिमाही में फोलिक एसिड की खुराक लेना चाहिए। उन्हें शराब, धूम्रपान और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए, ताकि भ्रूण को नुकसान होने से बचाया जा सके। कीटनाशकों व रसायनों के संपर्क से बचें व संपूर्ण टीकाकरण करवाएं।

अलग-अलग सड़क हादसों में दो की मौत, एक घाायल

टेंपो ने स्कूटी को ठोका, मजदूरी के रुपये लेने जा रहे थे

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। संबंधित थाना पुलिस ने मृतकों के परिजनों की शिकायतों पर केस दर्ज कर शवों का नागरिक अस्पताल में पोस्टमार्टम कराने के बाद उनके परिजनों को सौंप दिया।

कैंप थाना प्रभारी दिनेश कुमार के अनुसार नया गांव फजलपुर निवासी सुमित कुमार ने दी शिकायत में कहा है कि उसका भतीजा प्रमोद निजी कार्य से पलवल शहर की तरफ जा रहा था। लेकिन जब प्रमोद स्कूटी पर रेलवे फ्लाईओवर से नीचे उतरा, तभी सामने से आ रहे एक मिनी ट्रक ने सीधी टक्कर मार दी।

टक्कर मारने के बाद टेंपो चालक मौके से टेंपो को लेकर भाग गया। दुर्घटना में उसके भतीजे को गंभीर चोटें आईं, जिसे वह राहगीरों की मदद से उपचार के लिए जिला नागरिक अस्पताल लेकर पहुंचा। उपचार के दौरान उसके भतीजे की दुर्घटना में लगी चोटों के कारण मौत हो गई। कैंप थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर शव को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों के हवाले कर दिया।

वहीं, चांदहट थाना प्रभारी दलबीर सिंह के अनुसार, इस्लामाबाद निवासी राजू ने दी शिकायत में कहा है कि वह और उसका भाई नंदकिशोर मेहनत-मजदूरी करते हैं। उसका भाई नंद किशोर सिहोल गांव अपनी मजदूरी के पैसे लेने के लिए बाइक पर अपने दोस्त विशाल के साथ जा रहा था। जब उनकी बाइक पलवल-अलीगढ़ रोड पर जीवन ज्योति स्कूल के पास पहुंची, तभी सामने से आ रही एक महेंद्रा कंपनी की एक्सयूवी गाड़ी ने बाइक में सामने से टक्कर मार दी। जिससे दोनों को गंभीर चोटें आईं, लेकिन गाड़ी चालक मौके से गाड़ी को लेकर फरार हो गया। राहगीरों ने दोनों को उपचार के लिए जिला नागरिक अस्पताल पहुंचा दिया, जहां से नंद किशोर की हालत नाजुक देखते हुए ट्रोमा सेंटर के लिए रेफर कर दिया। ट्रामा सेंटर दिल्ली में उपचार के दौरान नंद किशोर की मौत हो गई, जबकि विशाल का उपचार चल रहा है।

गर्मी शुरू होते ही रोजाना होने लगी बिजली कटौती

बिजली कटौती के साथ शुरू हुई पानी की किल्लत, लोग परेशान

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

शहर में गर्मी शुरू होते ही बिजली कटौती का खेल शुरू हो गया है। अलग-अलग इलाकों में रोजाना चार से पांच घंटे बिजली कटौती की जा रही है। जिससे कूलर, पंखे नहीं चल पा रहे हैं। पेयजल आपूर्ति प्रभावित हुई है। सबसे ज्यादा दिक्कत ग्रेटर फरीदाबाद क्षेत्र में देखने को मिली है। होली के बाद से ही खेड़ीपुल, तिलपत आदि इलाकों में बिजली की समस्या रही। जिससे लोग काफी परेशान हैं।

गर्मी बढ़ने के साथ ही घरों में एसी, कूलर, पंखे, फ्रीज आदि चलने लगे है। जिससे शहर में बिजली की मांग बढ़नी शुरू हो गई है। इससे फाल्ट, ब्रेक डाउन की समस्या भी बढ़ गई। शहर के तिलपत, खेड़ीकलां, सेक्टर-2, 3, 7, 8, 22, 23, 24,, राजीव कॉलोनी, भगत सिंह कॉलोनी आदि इलाकों में अलग-अलग अंतराल में करीब पांच घंटे बिजली आपूर्ति ठप रही। बिजली नहीं होने से घरों में पेयजल आपूर्ति भी प्रभावित रही। सप्लाई का पानी नहीं आने से लोगों को प्राइवेट टैंकरों से पानी खरीद कर काम चलाना पड़ा। वहीं, चार दिन पहले आई तेज आंधी और हल्की बारिश से अलग-अलग इलाकों में फाल्ट और ब्रेक डाउन हो गया था। पाली सबडिवीजन क्षेत्र में अंडरग्राउंड केबल में फाल्ट हुआ था। जिससे नंगला, गाजीपुर क्षेत्र, डबुआ, पाली गांव सहित आसपास के दो दर्जन इलाकों में बिजली आपूर्ति ठप हो गई थी। इससे लोगों को काफी दिक्कत हुई।

वहीं बिजली कटौती के चलते लोगों को पानी की किल्लत का भी सामना करना पड़ रहा है। कॉलोनियां ही नहीं, पॉश सेक्टरों में भी जलापूर्ति का बुरा हाल है। लोगों को रात रातभर जागकर पानी भरना पड़ रहा है, बावजूद इसके पानी नसीब नहीं हो रहा है। नगर निगम टैंकरों से पानी की आपूर्ति करने की बात कह रहा है, लेकिन वो भी पूरे नहीं पड़ रहे हैं। इससे लोगों में रोष पनपने लगा है। इसका फायदा पानी माफिया उठा रहे हैं। लोगों को बाहर से पानी खरीद कर पीना पड़ रहा है। इससे उनके बजट पर भी असर पड़ रहा है। कई इलाकों में तो एक हजार रुपये के हिसाब से टैंकर माफिया पानी की सप्लाई कर रहा है। गर्मी बढ़ने के साथ ही टैंकरों से पानी सप्लाई का समय भी बढ़ गया है। पहले जहां आधे घंटे में टैंकर मिल जाता था, अब वही टैंकर दो-दो घंटों बाद लोगों के पास पहुंच रहे हैं। एनआइटी एक निवासी रंजीत आहूजा, सोनी भाटिया व जगत का कहना है कि पानी का संकट गहराया हुआ है। शिकायत करने के लिए अधिकारियों को फोन करों तो वे फोन नहीं उठाते हैं। दिन में पानी न आने के कारण वे रात-रात भर जागकर पानी भरने को मजबूर हैं। एनआइटी पांच निवासी रमेश भाटिया ने बताया कि निगम अधिकारियों को बिजली निगम के पावर कट शेड्यूल के हिसाब से पानी देने का समय निर्धारित करना चाहिए। जब बिजली होती है तो पानी नहीं आता और जब पानी आने का समय होता है तो बिजली चली जाती है। इससे लोगों के बिजली बिलों पर भी असर पड़ रहा है। पानी के चक्कर में सारा दिन मोटर चलती रहती है।

इन स्थानों पर है पेयजल संकट

पर्वतीय कॉलोनी, कपड़ा कालोनी, गौंछी, मुजेसर, आदर्श नगर, जनता कॉलोनी, गांधी कॉलोनी, डबुआ कॉलोनी, भूड़ कॉलोनी, एनआइटी एक, दो, तीन, पांच, एसजीएम नगर, जवाहर कॉलोनी, नंगला एंकलेव, प्रेम नगर, बल्लभगढ़ क्षेत्र में पानी की समस्या बनी हुई है।

बिजली की समस्या काफी हद तक ठीक हो गई है। फाल्ट और ब्रेक डाउन की शिकायतों का मौके पर निपटारा कराया गया।

– नरेश कक्कड़, अधीक्षण अभियंता, बिजली निगम

चुनाव में होगा अधिक से अधिक मतदान का प्रयास : नेहा सिंह

मुख्य निर्वाचन अधिकारी हरियाणा ने वीसी से दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

मुख्य निर्वाचन अधिकारी हरियाणा अनुराग अग्रवाल ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान करवाने का पूरा प्रयास किया जाए। सीईओ हरियाणा अनुराग अग्रवाल ने प्रदेश के समस्त जिला निर्वाचन अधिकारियों के साथ वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से जुड़कर चुनाव संबंधी जरूरी दिशा-निर्देश दिए।

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त नेहा सिंह ने सीईओ हरियाणा को आश्वस्त करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव में जिला पलवल में अत्याधिक मतदान करवाने पर फोकस रखा जाएगा। इसके लिए जिला भर में मतदाता जागरूकता अभियान स्वीप नाम से चलाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि जिला में बच्चों को अपने अभिभावकों से मतदान करवाने की प्रेरणा देने के लिए जागरुकता अभियान चलाया जाएगा। अभिभावक वोट डालकर आएंगे तो उनकी उंगली पर लगी नीली लकीर के साथ बच्चे फोटो खिंचवाएंगे। इन फोटो को चुनाव आयोग के सी-विजिल एप पर अपलोड किया जाएगा।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि जिन मतदान केंद्रों पर 1500 से अधिक वोटर हैं, वहां उप मतदान केंद्र बनाए जा रहे हैं, ताकि पोलिंग बूथ पर अधिक भीड़ एकत्रित न होने पाए। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग के निर्देशानुसार कुछ मतदान केंद्रों पर निगरानी रखने के लिए वेबकास्ट कैमरों से जोड़ा जाएगा। वीडियो कांफ्रेंस में एसडीएम नरेंद्र कुमार, एसडीएम रणवीर सिंह, एसडीएम संदीप अग्रवाल, नगराधीश अप्रतिम सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार बघेल, नायब तहसीलदार चुनाव कुलदीप सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

एसडी कॉलेज में फैकल्टी डवलपमेंट कार्यक्रम का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कॉलेज पलवल में पांच दिवसीय फेकल्टी डवलपमेंट कार्यक्रम कराया जा रहा है। इस कार्यक्रम में स्वपोषित विभाग के हिंदी, इंग्लिश, कंप्यूटर, वाणिज्य, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, गणित के प्राध्यापकों ने हिस्सा लिया है। इस कार्यक्रम के मुख्य विषय सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के शिक्षण कौशल पर प्रस्तुति करना, इंटरनेट का उपयोग करके यूट्यूब के माध्यम से वीडियो को शेयर करना सीखना, इलेक्ट्रॉनिक ब्रोशर एवं फ्लायर्स का निर्माण करना, इलेक्ट्रॉनिक सर्टिफिकेट को तैयार करना, गूगल ऐप को समझना और सीखना, इन सभी विषयों पर चर्चा की जा रही है। इन विषयों पर चर्चा करके शिक्षण को प्रभावित बनाया जाता है। कंप्यूटर विभाग की प्राध्यापिका डॉ. भावना, कनिका, कंचन ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के विषय पर चर्चा की और सभी प्राध्यापकों को बताया कि हमें अपने आजकल के आधुनिक टीचिंग स्किल को अपनाना है। सभी विद्यार्थियों को पीपीटी के जरिए पढाना ही है। उन्होंने पीपीटी बनाना सिखाया, किस तरीके से पीपीटी डिजाइन की जाती है, उस विषय में चर्चा की। 29 मार्च की रिसोर्स पर्सन डॉ. रितू सचदेवा मानव रचना यूनिवर्सिटी फरीदाबाद से आएंगी। उनका विषय इलेक्ट्रॉनिक सर्टिफिकेट रहेगा।

स्कूल जा रही छात्रा पर बंदरों ने किया हमला, घायल

फरीदाबाद। गांव मच्छगर में पिछले कुछ दिनों से बंदरों के झुंड से ग्रामीण काफी परेशान हैं। बंदरों का झुंड सुबह व शाम के समय ग्रामीणों के घरों में घुसकर खाने-पीने के सामान को बिखेर देते हैं। बंदर गांव के कई बच्चों व बुजुर्गों पर भी हमला कर चुके हैं। स्कूल जा रही 15 साल की छात्रा पर बंदरों ने हमला कर दिया। इस दौरान छात्रा के पैर पर काफी गंभीर चोट आई है। गांव के हालात यह है कि लोग जब भी घर से बाहर निकलते हैं तो वह हाथों में डंडा लेकर चलते हैं।

गांव मच्छगर पहले पंचायत के अंदर आता था, लेकिन अब यह नगर निगम के अंदर आ गया है। इसके चलते अब गांव के लोगों को मूलभूत सुविधाओं के लिए जूझना पड़ रहा है। गांव के रहने वाले राम प्रकाश ने बताया कि गांव में बंदरों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पहले दो से तीन बंदर ही गांव में नजर आते थे, लेकिन अब यह संख्या बढ़कर 10 से 15 हो गई है। सुबह के समय जब बच्चों को स्कूल जाना होता है, बंदरों का झुंड बच्चों पर हमला कर देता है। छात्रा छाया पर बंदरों ने हमला कर दिया।

मतदान केंद्रों पर मूलभूत सुविधाएं करवाएं सुनिश्चित

प्रदेश के मुख्य इलेक्टोरल अधिकारी ने दिए वीसी के माध्यम से जिला निर्वाचन अधिकारियों को दिशा-निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

हरियाणा प्रदेश के मुख्य इलेक्टोरल अधिकारी अनुराग अग्रवाल ने जिला निर्वाचन अधिकारियों को विडियो कांफ्रेंस के जरिये दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि मतदान केंद्रों पर भारत निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार बिजली, पानी, रैंप सहित तमाम मूलभूत सुविधाएं सुनिश्चित करें।

मुख्य इलेक्टोरल अधिकारी अनुराग अग्रवाल वीसी के जरिये भारत निर्वाचन आयोग की हिदायतों के अनुसार मतदान केंद्रों सहित 18वीं लोकसभा चुनाव के बेहतर क्रियान्वयन के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निर्देश दे रहे थे।

वहीं जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग की ओर से मतदाताओं के लिए बनाए जाने वाले मतदान केंद्रों पर मतदाताओं व पोलिंग अधिकारियों को मतदान केंद्रों पर आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने बारे दिशा-निर्देश दिए गए हैं। साथ ही मतदान में सहायता प्रदान करने वाले स्वयंसेवकों के लिए भी विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अलावा हरियाणा चुनाव आयुक्त को जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि 18वीं लोकसभा चुनाव के लिए चुनाव खर्च, एमसीएमसी कमेटी, मतदान केंद्रों पर मूलभूत सुविधाएं करवाएं।

दुर्घटनाओं में कमी लाने की दिशा में न बरती जाए कोताही : जिला उपायुक्त

सड़कों का सर्वे कर अधिक दुर्घटनाएं होने वाले स्थानों को चिन्हित कर तैयार करें सूची

पायनियर समाचार सेवा। पलवल

जिला उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि जिला से होकर गुजर रहे सभी हाईवे पर से अवैध कटों को बंद किया जाए। इसके लिए जरूरत पड़ने पर पुलिस प्रशासन की तरफ से भी सहयोग लिया जाए। जिला उपायुक्त नेहा सिंह जिला सचिवालय के सभागार में सड़क सुरक्षा समिति तथा सुरक्षित वाहन पॉलिसी की मासिक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दे रहीं थीं। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों से अब तक की गई कार्रवाई की भी समीक्षा की।

उन्होंने संबंधित विभागों को कहा कि वे अपनी-अपनी सड़कों का सर्वे कर अधिक दुर्घटनाएं होने वाले स्थानों को चिन्हित कर उनकी सूची तैयार करें और उन स्थानों पर पुलिस विभाग के साथ गठित टीम के संग संयुक्त रूप से निरीक्षण करें, ताकि दुर्घटनाओं में कमी लाने की दिशा में कार्य किया जा सके। उन्होंने सभी रोड एजेंसियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे अपनी-अपनी सड़कों पर कटों को बंद करवाएं। इसके अतिरिक्त उन्होंने सड़कों से अतिक्रमण को तुरंत प्रभाव से हटवाने के लिए भी निर्देश दिए। वहीं उन्होंने टोल प्लाजा पर इमरजेंसी लाइन की व्यवस्था तुरंत करने के लिए भी निर्देश दिए। हाईवे के पास बन रहे अवैध ढाबों को भी तुरंत प्रभाव से हटवाने के लिए निर्देश दिए गए। उन्होंने पुलिस को भी सड़क पर नियमों की पालना सुनिश्चित न करने वाले वाहनों के भी लगातार चालान काटने की कार्रवाई जारी रखने के लिए कड़े निर्देश दिए।

उन्होंने संबंधित अधिकारियों से कहा कि वे अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में स्थित स्कूलों के वाहनों को चैक करें और सरकार की ओर से जारी सभी हिदायतों का अनुपालन सुनिश्चित करवाएं। स्कूल वाहनों में कैमरे, लेडी अटेंडेंट, प्राथमिक उपचार किट, अग्नि शामक आदि सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित होनी चाहिए। सड़क सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों का चालान किया जाए।

उन्होंने कहा कि दुर्घटना स्थलों पर एंबुलेंस को निर्धारित रिस्पोंस टाइम पर पहुंचने, राष्ट्रीय राजमार्ग सहित मुख्य मार्गों पर अवैध कटों को बंद करने, मॉडल स्ट्रैच, यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहनों का चालान करने, शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग सहित अन्य मुख्य मार्गों से होर्डिंग्स को हटवाने इत्यादि की समीक्षा की।

बैठक में आरटीए शशि वसुंधरा ने सड़क सुरक्षा के लिए किए जा रहे कार्यों, प्रबंधों तथा सुरक्षित वाहन पॉलिसी के कार्यान्वयन के संदर्भ में आवश्यक जानकारी व विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अतिरिक्त उपायुक्त डॉ. ब्रह्मजीत सिंह रांगी, एसडीएम नरेंद्र कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार बघेल सहित नगर परिषद, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण व अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को किया सम्मानित

फरीदाबाद। कड़ी मेहनत और परिश्रम के द्वारा ही सफलता की ऊंचाईयों को छुआ जा सकता है। इसके लिए छात्र-छात्राओं को अनुशासन में रहकर अपने गुरूजनों के मार्गदर्शन में ही भविष्य को उज्ज्वल बनाया जा सकता है। यह बात जवाहर कॉलोनी स्थित श्रीराम मॉडल हाई स्कूल कमेटी की सचिव गुरप्रीत कौर ने प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कही। स्कूल के प्रिंसिपल विक्रम सिंह राठौर ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि वे शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में नैतिक गुणों का समावेश करवाने के लिए संकल्पित हैं, ताकि बच्चे पाठ्य पुस्तकों के अलावा हमारी भारतीय वैदिक संस्कृति से भी रूबरू हो सके। उन्होंने कहा कि जो बच्चे आज परीक्षाओं में अच्छे नंबर लाकर पुरस्कार के हकदार बने हैं, वैसे ही अन्य छात्र भी कड़ी मेहनत कर अपने आपको प्रतिभावान छात्रों की श्रेणी में ला सकते हैं। इसके लिए अभिभावकों को भी जागरूक रहने की आवश्यकता है। स्कूल की चेयरपर्सन डॉ. अमृता ज्योति ने भी सभी सफल छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। वाइस प्रिंसिपल ज्योति कोहली ने आगामी सत्र के लिए बच्चों और अभिभावकों को प्रेरित करते हुए कहा कि उन्हें वर्ष के शुरू में ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संकल्प लेना होगा। इस अवसर पर हेमंत, पुनीता, रेखा, चंचल, अंजना, शिखा, दीपिका और रश्मि ने भी छात्र-छात्राओं को नए टिप्स दिए।

विवाहिता संदिग्ध हालात में लापता

पलवल। रूंधी गांव से संदिग्ध हालत में 27 वर्षीय विवाहिता लापता हो गई। विवाहिता के पति व उसके परिजनों ने काफी तलाश किया, लेकिन कहीं कोई सुराग नहीं लग सका। पति ने पत्नी की लापता होने की सूचना सदर थाना की दीघोट पुलिस चौकी को दी। पुलिस ने केस दर्ज कर विवाहिता की तलाश शुरू कर दी है। अभी कोई सुराग नहीं लग सका है। सदर थाना प्रभारी मनोज कुमार के अनुसार, रूंधी गांव निवासी केशव कुमार ने दी शिकायत में कहा है कि उसकी पत्नी 27 वर्षीय रजनी शाम के करीब छह बजे तक घर पर थी, लेकिन अचानक लापता हो गई। देर शाम तक जब उसकी पत्नी घर नहीं लौटी तो उसने तलाश शुरू कर दी, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। उसने अपनी सभी रिश्तेदारियों व ससुराल में भी अपनी पत्नी के बारे में पता किया, लेकिन कहीं से कोई सुराग नहीं लगा। इससे परेशान होकर पति ने अपनी पत्नी के लापता होने की शिकायत सदर थाना पलवल की दीघौट पुलिस चौकी में दी। सदर थाना पुलिस ने पति की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर उसकी पत्नी की तलाश शुरू कर दी है। केशव कुमार ने बताया कि उसकी पत्नी ने काले रंग की साड़ी व काले रंग का ब्राउज तथा पैरों में हवाई चप्पल पहन रखी है।

एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आया युवक, मौके पर मौत

फरीदाबाद। ओल्ड फरीदाबाद रेलवे स्टेशन पर एक युवक एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आ गया। मौजूद लोगों की मानें तो युवक लघुशंका के लिए ट्रैक पर उतरा था, वापस प्लेटफार्म पर आते हुए ट्रेन से कटकर युवक की मौत हो गई। जीआरपी सब इंस्पेक्टर ने बताया कि ओल्ड फरीदाबाद स्टेशन पर ट्रैक पार करते हुए 30 वर्षीय युवक की ट्रेन हादसे में मौत हो गई। युवक की पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस ने शव को बीके अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए रखवाया है। स्टेशन पर फुटओवर ब्रिज बना हुआ है, फिर भी लोग ट्रैक पार करते हैं, ऐसी लापरवाही जान पर भारी पड़ रही है।

जन्मजात रोगों के बारे में आशा व नर्सों को दिया प्रशिक्षण

पलवल। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दूधौला में सिविल सर्जन डॉक्टर नरेश कुमार गर्ग व डिप्टी सिविल सर्जन एवं नोडल अधिकारी डॉ. रामेश्वरी के मार्गदर्शन एवं एसएमओ डॉ. संतोष के नेतृत्व में जन्मजात रोगों के बारे में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। डिप्टी सिविल सर्जन डॉ. रामेश्वरी ने बताया हर वर्ष तीन मार्च को विश्व जन्म दोष दिवस के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत निवारक उपायों और उपचार विकल्पों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जागरूक करना जरूरी है। डॉ. प्रीति गर्ग ने बताया कि लगभग छह प्रतिशत बच्चे किसी न किसी प्रकार के जन्म दोष के साथ पैदा होते हैं। जिला पलवल में भी ऐसे बहुत से ऐसे बच्चे हैं, जो विभिन्न प्रकार के जन्म दोषों का सामना कर रहे हैं। यदि इन बच्चों को जीवन की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जाए तो वह अपने परिवार व समुदाय के लिए अत्यधिक खुशी और प्रेरणा लेकर आते हैं। डॉ. रवि विहान ने बताया कि जागरूकता के इस महीनेभर चलने वाले उत्सव के दौरान आरबीएसके कार्यक्रम द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रारंभिक जांच, निदान व समय पर रेफरल, हस्तक्षेप व उपचार के महत्व पर प्रकाश डालना बहुत महत्वपूर्ण है। एक सक्रिय दृष्टि अपनाते हुए किसी भी बच्चे के जीवन में शुरुआती जन्म दोषों की पहचान कर उसका समाधान किया जा सकता है। ऐसे जन्म दोष वाले बच्चों की उचित समय पर चिकित्सा और सहायता सुनिश्चित की जा सकती है। डिप्टी सिविल सर्जन डॉ. रामेश्वरी ने बताया कि इस अभियान द्वारा ऐसे बच्चों को अच्छा व सही पालन पोषण करने के लिए परिवारों की सही जानकारी और संसाधनों के साथ सशक्त बनाया जा रहा है। आरबीएसके कार्यक्रम के ठोस प्रयासों के माध्यम से जिला पलवल के प्रत्येक बच्चे को वह देखभाल और ध्यान मिले, जिसके वह हकदार हैं। इस अवसर पर आयुष मेडिकल ऑफिसर डॉ. रवि विहान, डॉ. प्रीति गर्ग, एएनएम, जीएनएम व आशा वर्कर उपस्थित रहीं।

एक अप्रैल से छह मंडियों में होगी सरकारी गेहूं की खरीद

फरीदाबाद। एक अप्रैल से रबी खरीद सीजन के तहत जिले की छह मंडियों में गेहूं की खरीद शुरू कर दी जाएगी। खरीद को लेकर मंडियों में सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। विभिन्न एजेंसियों के लिए खरीद के दिन भी तय कर दिए गए हैं और बारदाना (बोरी) भी पर्याप्त संख्या में मंडियों में पहुंच चुका है। अधिकारियों की खरीद के दौरान मंडियों में ड्यूटियां भी लगाई जा चुकी हैं। जिले के किसानों ने गेहूं की कटाई का कार्य शुरू कर दिया है। वहीं, कई किसानों के फसल को पकने में अभी 10 से 15 दिनों का समय लगेगा। एक अप्रैल से जो भी पंजीकृत किसान मंडी में गेहूं लेकर आएगा, उसकी फसल सरकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य 2275 रुपये प्रति क्विंटल के तहत खरीद की जाएगी। इसको लेकर एजेंसी की ओर से परचेज ऑफिसर की नियुक्ति की गई है। जिले की छह मंडियों में एक अप्रैल से खरीद शुरू हो जाएगी। इस बार सरकार ने गेहूं का समर्थन मूल्य 2275 रुपये प्रति क्विंटल तय किया है। इनमें प्रमुख रूप से बल्लभगढ़, मोहना, तिगांव, फतेहपुर बिल्लोच, सेक्टर-16 और डबुआ हैं। बल्भ्लभगढ़ मार्केट कमेटी के सचिव इंद्रपाल ने बताया कि सभी मंडियों में खरीद को लेकर प्रबंध पूरे कर लिए गए हैं। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि सभी मंडियों में साफ-सफाई व अन्य व्यवस्था पूरी कर ली जाएं। मंडियों में किसानों के लिए पेयजल व शौचालयों को साफ करवा दिया गया है। उन्होंने बताया कि सरकार की ओर से गेहूं खरीद करने के बाद पैसे सीधे किसानों के खाते में 24 घंटों के अंदर पहुंचा दिए जाते हैं।

शेयर बाजार में मोटे मुनाफे का झांसा देकर पांच लाख ठगे

फरीदाबाद। शहर में साइबर ठगी के मामलों पर लगाम नहीं लग रही है। साइबर ठगों ने सेक्टर-17 निवासी एक महिला से शेयर बाजार में निवेश करने करने पर 300 फीसदी मुनाफे के झांसा देकर करीब पांच लाख रुपये की ठगी की। साइबर थाना सेंट्रल की पुलिस ने महिला की शिकायत पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सेक्टर-17 निवासी रेखा गुप्ता ने बताया है कि सोशल मीडिया पर कुछ जानकारी जुटाते समय फेसबुक पर उसे एक विज्ञापन दिखा। विज्ञापन में अर्जुन शर्मा नामक व्यक्ति द्वारा निवेश के बारे में सलाह दी गई थी। उन्होंने विज्ञापन पर दिए लिंक पर क्लिक कर दिया। इसके बाद उसे एक व्हाट्सऐप ग्रुप से जोड़ लिया गया।

चुनाव प्रचार

अनावश्यक बयानबाजी

देश में चुनाव प्रचार तेज होने के साथ ही अनावश्यक बयानबाजी भी बढ़ रही है। हिमाचल प्रदेश के मंडी चुनाव क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार कंगना रनौत के खिलाफ दो कांग्रेस नेताओं द्वारा की गई अपमानजनक टिप्पणी से पैदा राजनीतिक विवाद से बचा जा सकता था। आक्रामक बयान देने वाली कांग्रेसी सुप्रिया श्रीनेत ने 'एक्स' से यह पोस्ट हटा ली और यह कहते हुए माफी मांगी कि किसी अन्य ने उनके मेटा एकाउंट पर यह 'अत्यधिक अनुपयुक्त पोस्ट' लिखी थी। लेकिन इससे आहत कंगना रनौत आपे से बाहर हैं। उन्होंने कहा, 'मंडी का प्रयोग हर जगह यौनिक संदर्भों में किया गया क्योंकि यहां एक युवा महिला उम्मीदवार है।' यह देख कर खुशी होती है कि इस विवाद की प्रतिक्रिया में सभी प्रकार के राजनेताओं ने बयान की निन्दा की। अनेक नेताओं ने संयम और सभ्यता का पालन करने की सलाह दी है। सामूहिक रूप से ऐसे बयान पर तीखी प्रतिक्रिया से राजनीति में सम्मानपूर्ण संवाद के मानक बनाए रखने की आवश्यकता उजागर होती है। डिजिटल संप्रेषण के युग में शब्दों का असाधारण महत्व है और उनमें सार्वजनिक सोच को स्वरूप देने की क्षमता है। ऐसे में स्वाभाविक रूप से राजनेताओं को सतर्कता और समुचित विचार पर चलने की आवश्यकता है। दूसरों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने वाले नेताओं को अवश्य ही जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में रहने वालों को गरिमा के मानक बनाए रखने के साथ भड़काऊ या अपमानजनक भाषा प्रयोग से बचना चाहिए। राजनीतिक मतभेद विचारों और नीतियों के आधार पर होने चाहिए तथा व्यक्तिगत हमलों से बचना चाहिए।

हालांकि, यह अपने किस्म की पहली घटना नहीं है, पर नवीनतम प्रकरण से स्पष्ट है कि खासकर चुनाव अभियानों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सम्मानपूर्ण संवाद बनाए रखने की जिम्मेदारी के बीच संतुलन जरूरी है। ऐसी घटनाओं पर सरसरी नजर डालने से 2005 की घटना सामने आती है जब तत्कालीन रेल मंत्री लालू यादव ने बिहार की सड़कों को हेमा मालिनी के गालों जैसा बनाने की बात कही थी। हालांकि, बाद में उन्होंने स्वीकार किया कि यह तुलना गलत थी। 2009 में रामपुर लोकसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवार जया प्रदा ने अपने पूर्व सहयोगी तथा सपा नेता आजम खान पर आरोप लगाया था कि वे उनकी विकृत तस्वीरें वितरित कर आरोप लगा रहे हैं कि वे 'खाकी अंडरवियर पहनती' हैं। आजम खान ने कहा था, 'यदि मैं इस नाचने गाने वाली पर ध्यान दूं तो राजनीति पर कैसे ध्यान दूंगा?' 2012 में कांग्रेस नेता संजय निरुपम ने एक टीवी बहस में स्मृति ईरानी से कहा था, 'आप तो टीवी पर ठुमके लगाती थीं, आज चुनावी विश्लेषक बन गईं?' एक और वरिष्ठ कांग्रेसी नेता दिग्विजय सिंह ने जुलाई, 2013 में अपनी पार्टी की साथी मीनाक्षी नटराजन की प्रशंसा करते हुए मंदसौर में कहा था, 'मैं पुराना जौहरी हूं, ये 100 टंच माल है।' 2018 में राजस्थान चुनावों में जदयू नेता शरद यादव ने भाजपा नेता के प्रति अपमानजनक टिप्पणी करते हुए कहा था, 'वसुंधरा को आराम करने दें, वे बहुत थक गई हैं। वे बहुत मोटी हो गई हैं।' मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने भाजपा मंत्री इमरती देवी के बारे में अक्टूबर, 2020 में डाबरा उपचुनाव अभियान में कहा था, 'ये क्या आइटम है।' स्पष्ट है कि लोगों को अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार है, पर यह सभ्यता की सीमाओं में होना चाहिए। संवेदना और समझदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने से राजनीतिक विमर्श के लिए ज्यादा अच्छा माहौल भी बनेगा।

अनंत प्रस्थान पर स्वामी स्मरणानंद

स्वामी स्मरणानन्द जी का जीवन, रामकृष्ण मिशन के सिद्धांत 'आत्मनो मोक्षार्थ जगद्धिताय च' का अमिट उदाहरण है। रामकृष्ण मिशन द्वारा, शिक्षा के संवर्धन और ग्रामीण विकास के लिए किए जा रहे कार्यों से हम सभी को प्रेरणा मिलती है।

नरेंद्र मोदी
(लेखक, भारत के प्रधानमंत्री हैं)

लोकसभा चुनाव के महापर्व की भागदौड़ के बीच एक ऐसी खबर आई, जिसने मन-मस्तिष्क में कुछ पल के लिए एक ठहराव सा ला दिया। भारत की आध्यात्मिक चेतना के प्रखर व्यक्तित्व श्रीमत स्वामी स्मरणानंद जी महाराज का समाधिस्थ होना, व्यक्तिगत क्षति जैसा है। कुछ वर्ष पहले स्वामी आत्मास्थानंद जी का महाप्रयाण और अब स्वामी स्मरणानंद का अनंत यात्रा पर प्रस्थान कितने ही लोगों को शोक संतप्त कर गया है। मेरा मन भी करोड़ों भक्तों, संत जनों और रामकृष्ण मठ एवं मिशन के अनुयायियों सा ही दुखी है।

इस महीने की शुरुआत में, अपनी बंगाल यात्रा के दौरान मैंने अस्पताल जाकर स्वामी स्मरणानंद जी के स्वास्थ्य की जानकारी ली थी। स्वामी आत्मास्थानंद जी की तरह ही, स्वामी स्मरणानंद जी ने अपना पूरा जीवन आचार्य रामकृष्ण परमहंस, माता शारदा और स्वामी विवेकानंद के विचारों के वैश्विक प्रसार को समर्पित किया। ये लेख लिखते समय मेरे मन में उनसे हुई मुलाकातें, उनसे हुई बातें, वो स्मृतियां जीवंत हो रहीं हैं।

जनवरी 2020 में बेलूर मठ में प्रवास के दौरान, मैंने स्वामी विवेकानंद जी के कमरे में बैठकर ध्यान किया था। उस यात्रा में मैंने स्वामी स्मरणानंद जी से स्वामी आत्मास्थानंद जी के बारे में काफी देर तक बात की थी।

आप जानते हैं कि रामकृष्ण मिशन और बेलूर मठ के साथ मेरा कितना आत्मीय संबंध रहा है। आध्यात्म के एक जिज्ञासू के रूप में, पांच दशक से भी ज्यादा के समय में, मैं भिन्न-भिन्न संत-महात्माओं से मिला हूं, अनेकों स्थलों पर रहा हूं। रामकृष्ण मठ में भी मुझे आध्यात्म के लिए जीवन समर्पित करने वाले जिन संतों का परिचय प्राप्त हुआ था, उसमें स्वामी आत्मास्थानंद जी एवं स्वामी स्मरणानन्द जी जैसे व्यक्तित्व प्रमुख थे। उनके पावन विचारों और उनके ज्ञान ने मेरे मन को निरंतर संतुष्टि दी। जीवन के सबसे महत्वपूर्ण कालखंड में ऐसे ही संतों ने मुझे जन सेवा ही प्रभु सेवा का सत्य सिद्धांत सिखाया। स्वामी आत्मास्थानंद जी एवं स्वामी स्मरणानन्द जी का जीवन, रामकृष्ण मिशन के सिद्धांत 'आत्मनो मोक्षार्थ जगद्धिताय च' का अमिट उदाहरण है। रामकृष्ण मिशन द्वारा, शिक्षा के संवर्धन और ग्रामीण विकास के लिए किए जा रहे कार्यों से हम सभी को प्रेरणा मिलती है। रामकृष्ण मिशन, भारत की आध्यात्मिक चेतना, शैक्षिक सशक्तिकरण और मानवीय सेवा के संकल्प पर काम कर रहा है। 1978 में जब बंगाल में बाढ़ की विभिषिका आई, तो रामकृष्ण मिशन ने अपनी निस्वार्थ सेवा से सभी का हृदय जीत लिया था। मुझे याद है, 2001 में कच्छ के भूकंप के समय स्वामी आत्मास्थानंद उन सबसे पहले लोगों में से एक थे, जिन्होंने मुझे फोन करके ये कहा कि आपदा प्रबंधन के लिए रामकृष्ण मिशन से हर संभव मदद करने के लिए तैयार है। उनके निर्देशों के अनुरूप, रामकृष्ण मिशन ने भूकंप के उस संकट काल में लोगों की बहुत सहायता की।

बीते वर्षों में स्वामी आत्मास्थानंद जी एवं स्वामी स्मरणानंद जी ने विभिन्न पदों पर रहते हुए सामाजिक सशक्तिकरण पर बहुत जोर दिया। जो भी लोग इन महान विभूतियों के जीवन को जानते हैं, उन्हें ये जरूर याद होगा कि आप जैसे संत मॉर्डर्न लर्निंग, स्किलिंग और नारी सशक्तिकरण के प्रति कितने गंभीर रहते थे।

स्वामी आत्मास्थानंद जी के विराट व्यक्तित्व की जिस विशिष्टता से मैं सबसे अधिक प्रभावित था, वो थी हर संस्कृति, हर परंपरा के प्रति उनका प्रेम, उनका सम्मान। इसका कारण था कि उन्होंने भारत के अलग अलग हिस्सों में लंबा समय गुजारा था और वो लगातार भ्रमण करते थे। उन्होंने गुजरात में रहकर गुजराती बोलना सीखा। यहां तक कि मुझसे भी, वो गुजराती में ही बात करते थे। मुझे उनकी गुजराती बहुत पसंद भी थी।

भारत की विकास यात्रा के अनेक बिंदुओं पर, हमारी मातृभूमि को स्वामीआत्मास्थानंद जी, स्वामी स्मरणानंद जी जैसे अनेक संत महात्माओं का आशीर्वाद मिला है जिन्होंने हमें सामाजिक परिवर्तन की नई चेतना दी है।इन संतों ने हमें एक साथ होकर समाज के हित के लिए काम करने कीदीक्षा दी है। ये सिद्धांत अब तक शाश्वत हैं और आने वाले कालखंड मेंयही विचार विकसित भारत और अमृत काल की संकल्प शक्ति बनेंगे। मैं एक बार फिर, पूरे देश की ओर से ऐसी संत आत्माओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मुझे विश्वास है कि रामकृष्ण मिशन से जुड़े सभी लोग उनके दिखाए मार्ग को और प्रशस्त करेंगे।

ओम शांति।

कृषि के क्षेत्र में मशीनीकरण का महत्व

ए.एस. मित्तल
(लेखक, उद्योग जगत से संबद्ध हैं)

कृषि पशुपालन एवं खाद्य प्रसंस्करण की संसदीय स्थाई समिति ने भारत में छोटे व हाशियाकृत किसानों के खेतों पर मशीनीकरण बढ़ाने पर जोर दिया है। अपनी हालिया रिपोर्ट में उसने रेखांकित किया है कि यह कृषि क्षेत्र की बहुआयामी चुनौतियों से निपटने के लिए जरूरी है जो देश की अर्थव्यवस्था में रीढ़ की हड्डी जैसी भूमिका निभाता है। भारत के पास दुनिया के भौगोलिक क्षेत्र का केवल 2.4 प्रतिशत तथा जल संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत है, लेकिन इसकी खेती दुनिया की 17 प्रतिशत जनसंख्या का पालन पोषण करती है। पशुपालन में इसका योगदान 15 प्रतिशत है, देश की जीडीपी में यह 20 प्रतिशत योगदान करती है तथा 65 प्रतिशत जनसंख्या को रोजगार देती है। इसलिए छोटे और सीमान्त किसानों में मशीनीकरण बढ़ा कर इसकी उत्पादकता व मुनाफे में वृद्धि करना जरूरी है।

भारतीय कृषि में कम मशीनीकरण वाले क्षेत्रों में इसे बढ़ाने की जरूरत है ताकि किसानों की आमदनी बढ़े और वे परंपरागत व्यवहारों के स्थान पर उत्कृष्ट मशीनों का प्रयोग करें। मशीनीकरण की स्थिति पर गौर करें तो स्पष्ट होगा कि हमारे देश में कृषि मशीनीकरण का स्तर 40 प्रतिशत से कम है, जबकि यह विकसित देशों में बहुत अधिक है। चीन में मशीनीकरण 60 प्रतिशत तथा ब्राजील में 75 प्रतिशत है। उल्लेखनीय है कि पंजाब और हरियाणा जैसे कृषि प्रधान राज्यों ने हरित क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान किया है जिससे मशीनीकरण का स्तर 40 प्रतिशत पर पहुंचा है, जबकि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों जैसे क्षेत्रों में यह लगभग नगण्य है। समिति ने रेखांकित किया है कि देश में कुल खेतों का 86 प्रतिशत छोटे व हाशियाकृत किसानों के पास है जिसके मशीनीकरण के लिए विशेष प्रयासों की जरूरत है। समिति ने जोर दिया है कि मशीनरी खरीदने में छोटे किसानों को बहुत दिक्कत का सामना करना पड़ता है, जब तक कि छोटे खेतों के लिए उपयुक्त मशीनों का निर्माण नहीं होता है या उनको ये उपलब्ध नहीं कराई जाती हैं अथवा कृषि भूमि का संकेन्द्रण नहीं होता है। इसे देखते हुए 75 प्रतिशत मशीनीकरण का स्तर प्राप्त करने के लिए अभी 25 साल और लगेंगे।

कृषि मशीनों का महत्व स्पष्ट करना जरूरी है क्योंकि इससे खेती का खर्च घटाने तथा संसाधनों के प्रभावी प्रयोग से उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है। विशेषज्ञों और समितियों के अनुसार भारत में कृषि मशीनीकरण निवेशों के न्यायोचित व लागत-प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देता है। इससे बीजों के प्रयोग में 15-20 प्रतिशत बचत होती है, बीजों के जमने में 7-25 प्रतिशत का सुधार होता है जिससे 20-30 प्रतिशत समय बचता है। इसके साथ ही मशीनीकरण से खर-पतवार में 20-40 प्रतिशत कमी के साथ ही श्रम में 20-30 प्रतिशत कमी आती है, फसल की गहनता में 5-20 प्रतिशत वृद्धि होती है तथा फसलों की पैदावार में 13-23 प्रतिशत बढ़ोत्तरी होती है। इससे प्राकृतिक संसाधनों, जैसे पानी, मृदा पोषकों, आदि के संरक्षण में भी सहायता मिलती है। कृषि तथा इससे जुड़े पशुपालन जैसे क्षेत्रों में लगातार आधुनिकीकरण की जरूरत है। बड़े या छोटे पैमाने पर कृषि-विविधीकरण तथा ग्रामीण श्रमिकों की कमी व्यापक रूप से अनेक कृषि उपकरणों की आवश्यकता उजागर करते हैं। मूलभूत ट्रैक्टरों से लेकर संवेदनशील कंबाइन हार्वेस्टरों तक इस क्षेत्र को विशेष प्रयोगों और आवश्यकताओं के लिए उपकरणों के प्रयोग की समझदारी विकसित करने की जरूरत है। स्पैनिंग-फीडिंग उपकरणों, पोल्ट्री औजारों, मवेशियों के लिए कोरल व्यवस्थाओं तथा भारतीय कृषि मशीनरी बाजार की आवश्यकताओं को देखते हुए 2024 में इसका आकार 16.73 बिलियन डालर हो सकता है जो 2029 में बढ़ कर 25.15 बिलियन डालर तक पहुंच सकता है।

कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए पहले कृषि इंजीनियरिंग निदेशालय की स्थापना होनी चाहिए। संसदीय समिति ने सुझाव दिया है कि सरकार की मशीनीकरण नीति के प्रभावी व सहज क्रियान्वयन के लिए हर राज्य में एक कृषि इंजीनियरिंग निदेशालय की स्थापना की जानी चाहिए। वर्तमान समय में ये केवल मध्य प्रदेश तथा तमिलनाडु में कार्यरत हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-आईसीएआर इसे सभी राज्यों में स्थापित करने की दिशा में काम कर रहा है। ब्लाक और जिला स्तरों पर कृषि इंजीनियरों की आवश्यकता है क्योंकि किसानों को उनके खेतों पर ही प्रशिक्षण देने, कृषि मशीनों के प्रदर्शन तथा उनकी मरम्मत व रखरखाव के लिए कोई इंजीनियरिंग श्रमशक्ति उपलब्ध नहीं है। कृषि मशीनों के महंगे होने के कारण छोटे किसान इनको खरीद नहीं पाते हैं। इस समस्या को संबोधित करने के लिए सरकार ने लगभग सभी राज्यों में 'कस्टम हायरिंग सेंटर' तथा 'फार्म मशीनरी बैंक' बनाए हैं जहां किसान इन मशीनों का साझा कर सकते हैं। लेकिन इन योजनाओं के लाभ अभी ग्राम पंचायत स्तर तक नहीं पहुंचे हैं। सितंबर, 2022 में कृषि मशीनीकरण पर सब-मिशन का विलय राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में कर दिया गया जिससे इसका कार्यक्षेत्र प्रभावित हुआ है।

इसलिए सरकार को प्रक्रिया को गति देने के लिए एक पूर्णकालिक कृषि मशीनीकरण योजना बनानी चाहिए। कृषि मशीनीकरण योजना में शोध एवं विकास-आरएंडडी का बजट आबंटन पिछले चार साल से लगातार घट रहा है। 2019-20 से 2023-24 के बीच इसमें 30 प्रतिशत की भारी कमी आई है। अधिकांशत: छोटे व सीमान्त किसानों तथा बागवानों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कम हार्सपावर के ट्रैक्टरों और उनके हिस्से पुर्जों पर 12 प्रतिशत जीएसटी लगता है। इसका अर्थ है कि 5-7 लाख का छोटा ट्रैक्टर खरीदने पर किसान को 60-84 हजार रुपये जीएसटी देना पड़ता है। कम हार्सपावर वाले ट्रैक्टरों पर जीएसटी घटा कर 5 प्रतिशत या शून्य किया जा सकता है। इससे छोटे किसानों को बहुत सहायता मिलेगी। देश के कम कृषि मशीनीकरण वाले क्षेत्रों में विनिर्माण इकाइयों को बढ़ावा देने तथा उनका टिकाऊ विकास बनाए रखने के लिए टैक्स व ड्यूटी प्रोत्साहन देना भी जरूरी हो गया है।

संक्षेप में कहा जाए तो कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए संसदीय स्थाई समिति की संस्तुतियों को फौरन लागू किया जाना चाहिए। संसदीय स्थाई समिति ने जोर दिया है कि भारत के छोटे व सीमान्त किसानों की सहायता के लिए कृषि मशीनीकरण तेज करने की जरूरत है। कृषि मशीनीकरण के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद भारत में कृषि मशीनीकरण का स्तर वैश्विक समकक्षों की तुलना में बहुत कम है। इससे कृषि उत्पादकता तथा किसानों का मुनाफा बढ़ाने में बाधा आती है। 86 प्रतिशत खेतों का आकार छोटे एवं सीमान्त श्रेणी में आने के कारण इन क्षेत्रों में कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए लक्षित दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है। छोटे व सीमान्त किसानों के खेतों पर उनके लिए उपयुक्त मशीनों के प्रदर्शन, उनके प्रयोग में प्रशिक्षण, इनको खरीदने में सहायता तथा जरूरत पड़ने पर इनकी मरम्मत की व्यवस्था को व्यापक बनाया जाना चाहिए। मशीनीकरण से न केवल खेती की लागत कम होती है, बल्कि इससे उत्पादकता बढ़ती है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी होता है।

कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए संसदीय स्थाई समिति ने कृषि इंजीनियरिंग निदेशालयों की स्थापना का सुझाव दिया है। इसके साथ ही फार्म मशीनरी बैंकों तक पहुंच का विस्तार किया जाना चाहिए ताकि किसान इनके माध्यम से कृषि मशीनों का व्यापक प्रयोग सुनिश्चित कर सकें। वर्तमान योजनाओं को पुनर्जीवित करने के साथ ही शोध एवं विकास को बढ़ावा देने तथा टैक्स प्रोत्साहनों की जरूरत है। ये उपाय भारतीय कृषि को पुनर्जीवित करने, किसानों की आय बढ़ाने तथा कृषि क्षेत्र का टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने के लिए जरूरी हैं। समग्र रूप से कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने से भारत को कृषि क्षेत्र के समक्ष उपस्थित बहुआयामी समस्याओं का सामना करने का अवसर मिलेगा। इससे भारत कृषि के क्षेत्र में वैश्विक शक्ति के रूप में उभरेगा तथा भारतीय किसान समुदाय का सशक्तीकरण होगा।

आप की बात

नकली दवायें

नकली व मिलावटी दवाओं के खिलाफ लड़ाई स्वास्थ्य रक्षा के लिए जरूरी है। इससे साधारण लोगों को सेहत के प्रति सावधानी और जानकारी देने का महत्व और भी बढ़ गया है। इसके लिए सबको साथ मिलकर अभियान चलाना होगा। जागरूकता के लिए सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रम, सोशल मीडिया, अखबारों और टीवी जैसे माध्यमों पर चलाना होगा। नकली दवाओं से मुकाबला करने के लिए चिकित्सा विशेषज्ञों, फार्मेसिस्टों तथा पैरा मेडिकल कर्मियों के स्वयंसेवी समूह बनाने होंगे जो नागरिकों को आवश्यक तथा अनावश्यक दवाओं के बारे में जानकारी दे सकें। अक्सर लोग अपने मर्ज का इलाज स्वयं करने लगते हैं और इंटरनेट पर विज्ञापित दवाओं के चक्कर में पड़ जाते हैं। इससे बचना होगा। सरकार को जेनेरिक दवाओं के उत्पादन, प्रसार तथा उनकी गुणवत्ता पर कठोर नजर रखने के साथ ही डाक्टरों को भी प्रेरित करना होगा कि वे मरीजों के लिए केवल आवश्यक जेनेरिक दवायें ही लिखें। दवाओं के विज्ञापनों तथा काउंटर से सीधे खरीदी जाने वाली दवाओं की संख्या में कमी के माध्यम से भी नकली दवाओं को रोकने में सहायता मिलेगी। दवा निर्माता कंपनियों पर लगाम लगाने के लिए समुचित संख्या में ड्रग इंस्पेक्टरों का होना बहुत जरूरी है, जबकि उनकी संख्या बहुत कम है।

अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़

सीतारमण की स्वीकारोक्ति

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की स्वीकारोक्ति आश्चर्यजनक है। जिस देश में अनेक सरकारी चपरासियों के पास लाखों की नगदी और पार्षद के पास करोड़ों की दौलत बरामद होती है, उस देश के वित्तमंत्री के पास केवल अपने वेतन से संचित बचत है जो चुनाव लड़ने के लिए काफी नहीं है। खर्च पूरा अपना खर्च पूरा करने के लिए वे पुन: चुनाव नहीं लड़ रहीं हैं। अपने नाम के अनुरूप उनके पास अपने परिश्रम से कमाया निर्मल धन है। उनकी यह स्वीकारोक्ति अनेक पूर्व मंत्रियों के मुंह पर तमाचा है जिन्होंने अपने बेटों-बेटियों व परिवार जनों के साथ देश की दौलत लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। एक पूर्व वित्त मंत्री और उनके पुत्र भ्रष्टाचार के आरोपों में जमानत पर बाहर हैं और काफी समय जेल में बिता चुके हैं। देश के सबसे बड़े वकील भी उनको जेल जाने से नहीं बचा सके थे। पिछली सरकारों ने देश के धन का उपयोग नेशन फर्स्ट नहीं फैमिली फर्स्ट के लिए किया। निर्मला सीतारमण की यह स्वीकारोक्ति उनका नेतृत्व करने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आदर्शों के अनुरूप है। विपक्ष दसियों साल से लगातार प्रयास करने के बावजूद मोदी के खिलाफ एक पैसे का भ्रष्टाचार सिद्ध नहीं कर पाया है।

- शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

बदलता मौसम

दुनिया के मौसम पर नजर रखने वाले डब्लूएमआई के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले 10 साल में धरती का तापमान औसत से ज्यादा रहा है। नई-नई चीजों के आविष्कार से होने वाले लाभ के साथ ही उसका खामियाजा पृथ्वी के वातावरण को भुगतना पड़ रहा है। अधिकांश मनुष्य सर्वाधिक भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए धरती के साथ क्रूरतम व्यवहार करने से बाज नहीं आ रहे हैं। निरंतर बढ़ती आबादी के आवास, खाने पीने और जीवनयापन के लिए वनों का लगातार विनाश हो रहा है। हालांकि, जीवन की मूलभूत जरूरतों के लिए धरती का सीमित दोहन स्वीकार हो सकता है। मगर अनेक लोगों ने अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए युद्ध के विध्वंसक साधनों का व्यापक विकास किया है जो पूरी मानवजाति के अस्तित्व को ही नष्ट कर सकते हैं। महात्मा गांधी ने चेतावनी दी थी कि धरती के पास सबकी आवश्यकतायें पूरी करने के लिए सब कुछ है, पर कुछ लोगों का लालच पूरा करने के लिए कुछ नहीं। विडंबना है कि आज कुछ लोगों का लालच व उनकी जीवनशैली अधिकांश लोगों की न्यूनतम आवश्यकताओं पर भारी पड़ रही है। यह पृथ्वी के बदलते मौसम तथा प्राकृतिक संसाधनों के लगातार विनाश का कारण बन गई है।

सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

भारत-रूस संबंध

रूस में व्लादीमिर पुतिन की एक बार फिर बड़ी जीत होगी, इसीलिए उनकी जीत की घोषणा पर किसी को हैरानी नहीं हुई। पुतिन को 87.29 प्रतिशत वोट मिले हैं। पिछली बार उन्हें 76.7 फ़ीसदी वोट मिले थे, यानि उनकी लोकप्रियता बढ़ रही है। रूस ने कोरोना वायरस वैश्विक महामारी समेत अनेक चुनौतियों का सामना इस कालखंड में किया है। रूस-यूक्रेन युद्ध तीसरे वर्ष में प्रवेश कर गया है। इस विजय के बाद वे 2036 तक राष्ट्रपति रह सकते हैं। यूक्रेन को नाटो द्वारा मिल रहे समर्थन को देखते हुए रूस अपने अस्तित्व पर खतरा महसूस कर रहा है। ऐसे में रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त करवाना तथा अपने देश पर लगे प्रतिबंध समाप्त करवाना उनकी प्राथमिकता होनी चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पुतिन से बहुत अच्छे मैत्री संबंध हैं। उनकी विजय पर मुबारकवाद देते हुए मोदी ने युद्ध समाप्त कराने के राजनयिक प्रयासों पर जोर दिया है। भारत यूक्रेन से भी इस बारे में लगातार संवाद बनाए हुए है। यदि मोदी और पुतिन के प्रयासों से युद्ध समाप्त होता है तो यह भारत-रूस संबंधों तथा विश्व शांति के लिए भी महत्वपूर्ण होगा।

- एमएम राजावत, शाजापुर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

पहले चरण के लिए आठ सीटों पर हुए 155 नामांकन में 84 पाए गए वैध, 71 अस्वीकृत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकसभा चुनाव के पहले चरण में यूपी की आठ सीटों पर हुए 155 नामांकन में 84 ही वैध पाए गए और शेष 71 अस्वीकृत कर दिए गए। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के प्रथम चरण की 8 लोकसभा सीटों के लिए 27 मार्च को नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि थी। प्रथम चरण के लिए विभिन्न राजनैतिक दलों के 155 प्रत्याशियों द्वारा नामांकन पत्र भरा गया। प्रथम चरण के लिए भरे गये नामांकन पत्रों की बृहस्पतिवार को जांच की गयी। इसमें 84 नामांकन वैध पाये गये। जांच में 71 नामांकन पत्रों को अस्वीकृत कर दिया गया। नाम वापसी के लिए 30 मार्च की तिथि तय है। पहले चरण में 19 अप्रैल को मतदान होगा।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि पहले चरण की 8 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए सहारनपुर लोकसभा सीट के लिए 13 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, नामांकन पत्रों की जांच में 1 नामांकन अस्वीकृत हुआ और बाकी 12 नामांकन पत्र वैध पाए गए। कैराना लोकसभा सीट के लिए 17 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। नामांकन पत्रों की जांच में 2 नामांकन अस्वीकृत हुए और बाकी 15 नामांकन पत्र वैध पाए गए। मुजफ्फरनगर सीट के लिए 38 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। यहां 27 नामांकन अस्वीकृत हुए और बाकी 11 नामांकन पत्र वैध पाए गए। बिजनौर लोकसभा सीट के लिए 23 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। नामांकन पत्रों की जांच में 12 नामांकन अस्वीकृत हुए और 11 नामांकन पत्र वैध पाए गए। नगीना

(अ.जा.) लोकसभा सीट के लिए 12 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। पत्रों की जांच में 6 नामांकन अस्वीकृत हुए और बाकी 6 नामांकन पत्र वैध पाए गए। मुरादाबाद लोकसभा सीट के लिए 18 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। नामांकन पत्रों की जांच में 5 नामांकन अस्वीकृत हुए और बाकी 13 नामांकन पत्र वैध पाए गए। रामपुर में 18 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 12 अस्वीकृत हुए और 6 नामांकन पत्र वैध पाए गए। पीलीभीत लोकसभा सीट के लिए 16 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। यहां भी 6 नामांकन अस्वीकृत हुए और बाकी 10 नामांकन पत्र वैध पाए गए।

पोस्टल बैलेट से मतदान कर सकेंगे एक दर्जन आवश्यक सेवाओं में लगे कर्मचारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोक सभा सामान्य निर्वाचन-2024 के परिप्रेक्ष्य में 12 सेवाओं यथा-सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग (आकस्मिक एवं एम्बुलेंस सेवा), डाक विभाग, ट्रैफिक पुलिस, रेलवे, विद्युत विभाग, नागरिक उड्डयन विभाग, मेट्रो रेल कारपोरेशन, दूरदर्शन, ऑल इण्डिया रेडियो, भारत संचार निगम लिमिटेड के ऐसे कार्मिक जो मतदान दिवस से सम्बन्धित ड्यूटी पर एवं मतदान दिवस की कवरेज के लिए आयोग द्वारा प्राधिकृत मीडिया प्रतिनिधि को पोस्टल बैलेट से मतदान की सुविधा दी गई है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि इन 12 सेवाओं के कार्मिक मतदान दिवस के दिन ड्यूटी पर होने के कारण पोलिंग स्टेशन पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर मतदान करने की स्थिति में न हों, उनके द्वारा फार्म-12 डी भरकर और अपने विभाग के नामित नोडल अधिकारी से सत्यापित कराकर सम्बन्धित चरण/निर्वाचन क्षेत्र की अधिसूचना जारी होने के 5 दिन के अंदर रिटर्निंग आफिसर के पास जमा किया जाएगा।

मार्च में 8730.77 लाख रुपए की शराब ड्रग्स सहित अन्य बहुमूल्य वस्तुएं जब्त

- प्रदेश में आदर्श आचार संहिता का कड़ाई से कराया जा रहा पालन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकसभा चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए राज्य सरकार की सभी एजेंसियों को सतर्क कर दिया गया है। आदर्श आचार संहिता का कड़ाई से पालन कराया जा रहा है। आबकारी, आयकर, पुलिस एवं नार्कोटिक्स विभाग एवं अन्य प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा 1 मार्च से 27 मार्च तक कुल 8730.77 लाख रुपए कीमत की मदिरा, ड्रग, बहुमूल्य धातुएं, मुफ्त उपहार व नगदी आदि जब्त किया गया। इसमें 1417.43 लाख रुपए नकद धनराशि, 2185.18 लाख रुपए कीमत की 611923.63 लीटर शराब, 3241.76 लाख रुपए कीमत की 4475075.43 ग्राम ड्रग्स, 1778.18 लाख रुपए कीमत की 39163.86 ग्राम बहुमूल्य धातुएं, 1.43 लाख रुपए के 298 मुफ्त उपहार एवं 106.79 लाख रुपए कीमत की 646.21 अन्य सामग्री जब्त की गयी। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि आबकारी, आयकर, पुलिस एवं नार्कोटिक्स विभाग एवं अन्य प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा 27 मार्च को कुल 121.20 लाख रुपए कीमत की मदिरा, ड्रग, बहुमूल्य धातुएं, मुफ्त उपहार व नगदी आदि जब्त किया गया। इसमें 31.35 लाख रुपए नकद धनराशि, 52.78 लाख रुपए कीमत की 19920.53 लीटर शराब, 36.57 लाख रुपए कीमत की 18196.55 ग्राम ड्रग एवं 0.50 लाख रुपए कीमत की 8 अन्य सामग्री जब्त की गई। 27 मार्च को प्रमुख जब्ती में जनपद खीरी की पलिया विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में 19.04 लाख रुपए अनुमानित कीमत की 2.64 किग्रा. ड्रग, जनपद हापुड़ की गढ़मुक्तेश्वर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में 25.34 लाख रुपए की नगद धनराशि पकड़ी गई।

निरोधात्मक कार्रवाई में 11,62,965 लोग पाबन्द किए गए

सीआरपीसी के तहत निरोधात्मक कार्रवाई करते हुए 11,62,965 लोगों को पाबन्द किया गया है। इसके अतिरिक्त पुलिस विभाग द्वारा 2,276 बिना लाइसेंस के अवैध शस्त्र, 2,480 कारतूस, 06 किग्रा. विस्फोटक व 110 बम बरामद कर सीज किए गए। पुलिस द्वारा अवैध शस्त्र बनाने वाले 406 केन्द्रों पर रेड डाली गई और 55 केन्द्रों को सीज किया गया। अब तक 4,22,330 लाइसेंसी शस्त्र जमा कराए बए गए। इसके अलावा अपराधिक व्यक्तियों के 310 लाइसेंसी शस्त्र जब्त किए बए। 3,756 लाइसेंसी शस्त्र निरस्त कर जमा कराये गए। सघन जांच के लिए 513 अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट तथा 1846 चेक पोस्ट राज्य के भीतर संचालित किए गए हैं।

सीमावर्ती जिलों की गतिविधियों का चुनाव पर न पड़े प्रभावः दुर्गा शंकर

- लोकसभा आम चुनाव की तैयारियों के सम्बन्ध में मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हुई अंतरराज्यीय समन्वय बैठक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की अध्यक्षता में लोकसभा आम चुनाव, 2024 की तैयारियों के सम्बन्ध में अंतरराज्यीय समन्वय बैठक आयोजित हुई। बैठक में 9 राज्यों झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, हरियाणा, मध्य प्रदेश, हिमाचाल प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान व दिल्ली के मुख्य सचिव व पुलिस महानिदेशक ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से प्रतिभाग किया।

मुख्य सचिव ने सम्बन्धित राज्यों के मुख्य सचिव एवं पुलिस महानिदेशक से लोकसभा चुनाव को निष्पक्ष और शांतिपूर्ण ढंग से सकुशल सम्पन्न कराने में सहयोग करने की अपेक्षा की। सीमावर्ती जनपदों में ऐसी कोई गतिविधि न हो, जिससे आम चुनाव प्रभावित हो। अवैध नकदी, अवैध शराब आदि के प्रवाह को रोकने के लिये सीमाओं पर निगरानी बढ़ानी होगी और कण्ट्रोल रूम के माध्यम से सूचनाओं का आपस में आदान-प्रदान करना होगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के अन्तर्राज्यीय सीमाओं के आस-पास नशीले पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध विशेष आभियान चलाया जाये। संवेदनशील व नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विशेष तौर पर निगरानी रखी जाए। इसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय माफिया और असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखी जाए। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर निगरानी रखते हुए अफवाह फैलाने वालों पर कार्यवाही की जाए। बार्डर एरिया से सम्बन्धित जिलाधिकारी, पुलिस अधिकारी व थानाध्यक्ष आपसी समन्वय बैठक कर लें। इसके अलावा निरन्तर संवाद बनाये रहें। सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए व्हाट्सएप ग्रुप भी बना सकते हैं। पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने के लिए प्रदेशभर में पुलिस द्वारा प्रभावी रूप में निषेधात्मक कार्रवाई की जा रही है। बैठक में अपर मुख्य सचिव गृह दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव राज्य कर नितिन रमेश गोकर्ण, मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा, प्रमुख सचिव आबकारी वीना कुमारी मीना, अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी अनुज कुमार झा सहित सम्बन्धित विभागों के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

पिछली सरकारों ने मुजफ्फरनगर को कर्फ्यू दिया, हम दे रहे सुरक्षा का माहौलः मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ मुजफ्फरनगर

- सीएम योगी ने प्रबुद्ध सम्मेलन के दूसरे दिन मुजफ्फरनगर में किया संवाद

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि एक वोट देश की तकदीर व तस्वीर को बदल सकता है। वोट जब गलत हाथों में जाता था तो मुजफ्फरनगर में महीनों कर्फ्यू लगता था। आपका वोट सही हाथों में गया तो मुजफ्फरनगर कर्फ्यू नहीं, कांवड़ यात्रा के लिए जाना जाता है। गलत वोट से पश्चिमी उप्र को अराजकता की भट्टी में झोंककर यहां की सुरक्षा को खतरे में डाला जाता था। लोग यहां आने से डरते थे। आपका वोट सही पार्टी के साथ गया तो अराजकता समाप्त हुई और आस्था को सम्मान मिला। पिछली सरकार ने कर्फ्यू-अराजकता दी, लेकिन आज हम नए माहौल में बढ़ रहे हैं। मोदी को तीसरी बार सत्ता में लाने के लिए प्रबुद्धजन को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

योगी आदित्यनाथ गुरुवार को दूसरे दिन मुजफ्फरनगर के लाला जगदीश प्रसाद सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में आयोजित प्रबुद्ध सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। योगी ने केंद्रीय मंत्री व भाजपा उम्मीदवार संजीव बालियान के पक्ष में लोगों से संवाद किया। यहां बच्चों ने सीएम योगी को पेंटिंग प्रदान की। वहीं पूरा सभागार योगी-योगी के नारों से गुंजायमान हो उठा। सीएम ने आह्वान किया कि आपका चुनाव पहले चरण में है। गर्मी हो या बरसात, आंधी हो या तूफान, इसकी परवाह किए बिना लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग करते हुए पीएम मोदी को तीसरा कार्यकाल देने के लिए हर किसी को वोट देने जाना है। सीएम योगी ने कहा कि मैं एक गाना सुनता हूं कि होली खेले रघुवीरा अवध में..., होली खेलने के लिए भगवान का आह्वान तो होता था, लेकिन होली खेलने के लिए भगवान अपनी भूमि पर थे ही नहीं, आपके एक वोट ने 500 वर्षों बाद आस्था को सम्मान दिला दिया। वोट गलत हाथों में गया तो यह रंगदारी वसूल करते थे, सही पार्टी को वोट देने से पीएम स्वनिधि के माध्यम से स्ट्रीट वेंडर्स के लिए लोन के रास्ते खुले। यूपी में अब तक 18 लाख स्ट्रीट वेंडर्स को ऋण की सुविधा उपलब्ध हुई है। इंडी गठबंधन वालों के लिए फैमिली फर्स्ट है तो दूसरी तरफ पीएम मोदी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन के लिए नेशन फर्स्ट है। सीएम ने कहा कि यहां के जनप्रतिनिधियों, जनता की दशकों से मांग थी कि शुकतीर्थ को उसका पुराना वैभव वापस मिलना चाहिए, हमारी सरकार ने जनभावना के अनुरूप शुकतीर्थ विकास परिषद गठित करने के साथ आगे बढ़ाने का निर्णय लिया। आपके पास हजारों वर्ष की विरासत है। देश-दुनिया के सनातन धर्मावलंबी जीवन की सच्चाई को श्रीमद्भागवत महापुराण के माध्यम से श्रवण करते हैं। 5000 वर्ष पहले शुकदेव महराज ने सबसे पहले महापुराण का वाचन यहीं किया था। यह इतिहास बनाने की भूमि है। सीएम ने कहा कि किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिला है। उन्हें यह सम्मान बहुत पहले मिलना चाहिए था, लेकिन किसान पिछली सरकारों के एजेंडे में नहीं था। इंडी गठबंधन आखिरकार क्या कर रहा था। 2004 से 2014 के कार्यकाल में यह लोग चौधरी साहब को सम्मान नहीं दे पाए। भारत मां के सपूत चौधरी चरण सिंह कहते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहान से होकर जाता था। चौधरी साहब को भारत रत्न मिलने से यूपी गौरवान्वित हुआ है, क्योंकि यूपी के मुख्यमंत्री के रूप में दायित्व का निर्वहन करके उन्होंने जनता को विकास की नई धारा से जोड़ने का कार्य किया। सीएम ने कहा कि 2016-2017 के पहले कपिलदेव अग्रवाल की सभा में आया था तो जबर्दस्त तनाव का माहौल था। मैंने कहा कि आप तनाव में रहते हैं, मुजफ्फरनगर को तनाव से मुक्त कीजिए। मुजफ्फरनगर के लोगों ने मोदी जी के नेतृत्व में विश्वास किया। 2014, 2017, 2019, 2022 में आपका आशीर्वाद मिला। मुजफ्फरनगर लोकसभा सीट के सरधना में ही प्रदेश का पहला विश्व स्तरीय खेल विश्वविद्यालय बन रहा है। अब पारुल चौधरी जैसी बेटी को इसी लोकसभा सीट में अभ्यास करने का अवसर प्राप्त होगा।

डॉ. दिनेश शर्मा बने महाराष्ट्र के चुनावी प्रभारी, कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पूर्व उप मुख्यमंत्री व राज्यसभा सांसद डॉ.दिनेश शर्मा को भजपा द्वारा महाराष्ट्र का चुनाव प्रभारी बनाए जाने पर पार्टी कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर है। कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को डॉ. शर्मा के आवास पहुंचकर खुशी व्यक्त की और उनके माथे पर अबीर लगाकर उन्हें शुभकामना दी।

ऐशबाग स्थित आवास पर भाजपा कार्यकर्ताओं के आशीर्वाद और खुशी संदेश को प्राप्त करने के बाद महाराष्ट्र के चुनाव प्रभारी डॉ.दिनेश शर्मा तय कार्यक्रम के लिए रवाना हुए। निर्वाचन के दृष्टि से बूथ संख्या बारह पर भाजपा की ओर से आयोजित मोदी का परिवार होली मिलन कार्यक्रम में डॉ.दिनेश शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जनोपयोगी योजनाओं की जानकारी दी। डॉ.दिनेश शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना से कम मूल्य पर मिलने वाली दवाओं का लाभ हर वर्ग के व्यक्ति मिला है, जो दवा बाजार में दुकानों पर 50 रुपये की है, वह जनऔषधि केन्द्र पर 20 रुपये से भी कम मूल्य प्राप्त हो रही है। इसी तरह आयुष्मान भारत योजना में पांच लाख रुपये तक मुफ्त उपचार हो रहा है। कम आय वाले व्यक्ति के लिए आयुष्मान भारत योजना खुशियों का संदेश देने वाली है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ उन सभी लोगों के लिए है, जिनके पास अपने मकान नहीं है। गरीब व्यक्ति के लिए प्रधानमंत्री ने घर दिए हैं। स्वदेशी को बढ़ावा देने के लिए मेक इन इंडिया योजना की शुरुआत कराई। जिसका भी लाभ हर उस व्यक्ति को मिला है, जो अपने देश में वस्तु बना रहा है।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहली रामनवमी को लेकर अयोध्या में तैयारियां शुरू

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/अयोध्या

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या में पहली रामनवमी को लेकर विशेष उत्साह है। गुरुवार को प्रदेश के मुख्य सचिव दुर्गाशंकर मिश्र और डीजीपी प्रशांत कुमार ने अयोध्या पहुंचकर तैयारियों के संबंध में समीक्षा बैठक की। इससे पहले दोनों अधिकारियों ने मंदिर परिसर का भ्रमण कर सभी व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के निर्देश दिये। बैठक में राम जन्मभूमि परिसर की सुरक्षा को लेकर भी अधिकारियों को निर्देश दिए गए। श्रद्धालुओं के लिए सुगम दर्शन, ठहरने, पेयजल, मेडिकल सहित अन्य सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश अधिकारियों ने बैठक में दिए। आईजी प्रवीण कुमार ने बताया कि श्रीरामनवमी के पर्व पर लगभग 50 लाख श्रद्धालुओं के अयोध्या पहुंचने की उम्मीद है। 17 अप्रैल को भव्य और दिव्य मंदिर में पहली रामनवमी मनाई जाएगी।

मुख्य सचिव व डीजीपी ने क्राउड मैनेजमेंट के लिए कई दिशा-निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि सुरक्षा मे किसी प्रकार की कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए। आईजी प्रवीण कुमार ने कहा सभी निर्देशों का पालन कराया जाएगा। गत दिनों मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी अधिकारियों के साथ राम नवमी मेले में देश के कोने-कोने से आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर बैठक की थी।

अब गले में तख्ती डालकर अपराधी मांगते हैं जान की भीखः योगी

- शामली में कैराना सीट के पार्टी प्रत्याशी प्रदीप चौधरी के लिए सीएम ने प्रबुद्धजनों से किया संवाद

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/शामली

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को शामली जिले स्कॉटिश इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित प्रबुद्धवर्ग सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र ने सबको समान मताधिकार दिया है। एक वोट हर वयस्क मतदाता का अधिकार है। इस एक वोट की कीमत क्या होती है, कैराना वासियों से बेहतर इसका कोई दूसरा जीता जागता उदाहरण नहीं है। ये वोट जब गलत हाथों में आता है तो कैराना में पलायन होता है और कर्फ्यू लगता है, मगर सही हाथों में आता है तो धूम-धाम से कांवड़ यात्रा निकलती है और विकास तेज रफ्तार से आगे बढ़ता है। इस दौरान सीएम योगी ने भाजपा-लोकदल के संयुक्त प्रत्याशी प्रदीप चौधरी के पक्ष में मतदान के लिए प्रबुद्धजनों से संवाद किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस पौराणिक एवं ऐतिहासिक धरा ने इतिहास में अनेक उतार चढ़ाव देखे हैं। उन्होंने सभी प्रबुद्धजनों का हृदय से अभिनंदन करते हुए कहा कि हम सब कई दशकों से ये गीत सुनते थे कि 'अवध में होली खेले रघुवीरा..., मगर 500 साल बाद सही मायनों में अब वह अवसर आया है, जब रामलला सचमुच में अवध में होली खेल रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि 10 साल पहले भारत के पासपोर्ट की दुनिया में कोई कीमत नहीं थी, मगर आज आप दुनिया में कहीं भी जाएंगे तो वहां आपको सम्मान मिलेगा। आज देश की सीमाएं सुरक्षित हुई हैं। आतंकवाद और उग्रवाद नियंत्रण में है। इसके साथ ही विरासत को सम्मान मिला है। फिर चाहे काशी में विश्वनाथ धाम हो या अयोध्या में भव्य मंदिर का निर्माण। मुख्यमंत्री ने कहा कि अभी हाल ही में किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न प्राप्त हुआ है। यही विरासत का सम्मान है। लंबे समय तक उन्होंने किसानों, दबे कुचलों, समाज के अंतिम पायदान पर बैठे लोगों के लिए अपनी आवाज बुलंद की। किसानों के लिए देश की सरकारों को झकझोरा था। चौधरी साहब के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए देश के 12 करोड़ किसानों को किसान सम्मान निधि की शुरुआत की गई। यह चौधरी साहब के सपनों का ही सम्मान है। सीएम योगी ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में देश में बड़े-बड़े इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के कार्य हो रहे हैं। हाईवे, रेलवे, एयरपोर्ट, मेडिकल कॉलेज, आईआईटी, आईआईएम, स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी, शाकंभरी विश्वविद्यालय का निर्माण हो रहा है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत का संकल्प तभी पूरा होगा जब विकसित यूपी बनेगा और विकसित यूपी का संकल्प भी तभी पूरा होगा जब हमारा शामली विकसित होगा। उन्होंने कहा कि 2017 से पहले यहां पलायन होता था। व्यापारी और नागरिक पलायन करता था। अब अपराधी पलायन करता है। पहले बेटी और व्यापारी गुहार लगाते थे कोई सुनवाई नहीं होती थी। अब अपराधी गले में तख्ती लटकाकर कहता है कि जान बख्श दो, ठेला लगाकर गुजरबसर कर लेंगे, मगर किसी को छेड़ेंगे नहीं। सीएम ने प्रबुद्धजनों से अपील करते हुए कहा कि कैराना में पहले चरण में मतदान है, इसके लिए अभी से तैयार हो जाएं। आपको स्वयं तो मतदान करना ही है औरों को भी प्रेरित करना है। इस बार कैराना लोकसभा क्षेत्र में मतदान प्रतिशत को 80 से 90 तक ले जाना है। जनता के बीच जाकर बताना होगा कि उनके वोट की कीमत क्या है, क्या सही है और क्या गलत है। यह समाज के प्रबुद्धजनों का दायित्व है। आपको स्वयं मोदी जी का प्रतिनिधि बनकर घर घर जाना होगा। मुख्यमंत्री ने भरोसा व्यक्त करते हुए कहा कि अगर यूपी से 80 सीटें आती हैं तो देश में 400 सीटें लाना कोई बड़ी बात नहीं है। उन्होंने कहा कि कैराना में पीएसी की एक वाहिनी का गठन होने जा रहा है, उसके बाद इस पूरे क्षेत्र में सुरक्षा का और बेहतर माहौल बनेगा। इस अवसर पर बीजेपी के क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येन्द्र सिसोदिया, जिला प्रभारी विकास अग्रवाल, रालोद के क्षेत्रीय अध्यक्ष योगेन्द्र, जिलाध्यक्ष वाजिद अली, सांसद और बीजेपी लोकदल के संयुक्त प्रत्याशी प्रदीप चौधरी, पूर्व मंत्री सुरेश राणा सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

सही दिशा में पड़ा आपका एक वोट कश्मीर से धारा 370 समाप्त कर देता हैः सीएम

- मुख्यमंत्री ने सहारनपुर में भाजपा प्रत्याशी राघव लखन पाल के पक्ष में की मतदान की अपील

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/सहारनपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सही दिशा में पड़ा आपका एक वोट कश्मीर में धारा 370 समाप्त कर देता है। उग्रवाद और आतंकवाद का समाधान कर देता है। इतना ही नहीं रामलला को नव्य, दिव्य और भव्य मंदिर में विराजमान कर देता है। यही तो मोदी की गारंटी है। ऐसे में आप अपने एक वोट की कीमत को पहचानिए। उन्होंने कुछ लोग अपने फायदे के लिए तुष्टीकरण के आधार पर समाज को बांटते थे। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सबका साथ और सबके विकास के लिए कार्य करते हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरुवार को सहारनपुर के सेठ गंगा प्रसाद माहेश्वरी सभागार में प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने बीजेपी के लोकसभा प्रत्याशी और पूर्व सांसद राघव लखन पाल के पक्ष में मतदान के लिए प्रबुद्धजनों से संवाद किया।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कुछ लोगों ने जाति, संप्रदाय, मत और मजहब के नाम पर समाज को विभाजित किया, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरीब कल्याण के आधार पर समाज के प्रत्येक तबके को शासन की योजना का लाभ दिया है, जो उनकी विकसित भारत की संकल्पना को दर्शाता है। विकसित भारत का मतलब हर भारतवासी के जीवन में खुशहाली लाना, हर नौजवान के हाथ को काम देना, उसकी आजीविका की पुख्ता व्यवस्था करना, हर व्यापारी को सुरक्षित माहौल देना और हर हस्तशिल्प-कारीगर के हुनर का सम्मान करना है।

उन्होंने कहा कि विकसित भारत में हर उद्यमी को ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के माध्यम से व्यापार और उद्योग लगाने की पूरी स्वतंत्रता होगी। उसके पास अपने प्रोडेक्ट को देश और दुनिया में पहुंचाने के लिए बेहतर कनेक्टिविटी होगी। सीएम ने कहा कि आज भी विघटनकारी और विभाजनकारी ताकत तेजी के साथ प्रहार करने के लिए आतुर दिखाई दे रही हैं, ऐसे में उन्हें जवाब देने के लिए आपको राघव लखन पाल को वोट करना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी विकसित भारत गारंटी है। इसका मतलब देश के 12 करोड़ अन्नदातों को किसान सम्मान निधि, 4 करोड़ गरीबों को सर ढकने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना, ढाई करोड़ को मुफ्त में बिजली का कनेक्शन, 10 करोड़ गरीबों को मुफ्त में उज्ज्वला योजना के तहत रसोई गैस का सिलेंडर, 60 करोड़ लोगों को पांच लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा का कवर है। इतना ही नहीं उत्तर प्रदेश में 15 करोड़ और देश में 80 करोड़ लोगों को फ्री में राशन की सुविधा का लाभ मिलना ही मोदी की गारंटी है।

उन्होंने कहा कि हमें दिल्ली से सहारनपुर आने में सात घंटे लगते थे, वहीं इस वर्ष के अंत तक केवल दो घंटे में दिल्ली से सहारनपुर पहुंचा जा सकेगा।

डीएम ने की संचारी रोग नियंत्रण के टास्क फोर्स/ अंतर विभागीय जिला समन्वय समिति की बैठक दिये निर्देश

● जनपद में 01 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलेगा, विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान व 10 अप्रैल से 30 अप्रैल तक दस्तक अभियान

● झाड़ियों की कटाई, नालियों की सफाई, जल निकासी आदि पर दिया जाए विशेष ध्यानः जिलाधिकारी

कानपुर देहात। डीएम आलोक सिंह के अध्यक्षता में संचारी रोग नियंत्रण अभियान के जनपदीय टास्क फोर्स/ अंतर विभागीय समन्वय समिति की द्वितीय बैठक मां मुक्तेश्वरी देवी सभागार कक्ष कलेक्ट्रेट में संपन्न हुई। बैठक में सीएमओ ने डीएम को बताया कि जनपद में 01 से लेकर 30 अप्रैल तक विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान तथा 10 से 30 अप्रैल तक दस्तक अभियान चलाया जाएगा, जिसके दृष्टिगत विभिन्न ब्लॉको पर ब्लाक स्तरीय अंतर समन्वय समिति की बैठक कर ली गई है तथा विभागों से माइक्रोप्लान प्राप्त हो चुके हैं। डीएम ने संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत मुख्य रूप से सार्वजनिक भवनों, धार्मिक स्थलों व भीड़ भाड़ वाले स्थानों, सीएचसी, पीएचसी, ऑनगाबड़ी केन्द्र, विद्यालय आदि के आसपास नालियों की सफाई, झाड़ियां की कटाई, एंटी लार्वा का छिड़काव, फॉगिंग आदि से संबंधित गतिविधियों पर विशेष जोर दिए जाने के निर्देश दिए। डीएम ने डीपीआरओ व अधिशासी अधिकारी नगर निकायों को निर्देश दिये कि संचारी रोग अभियान के दौरान शासन द्वारा प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुरूप कार्यवाही कराना सुनिश्चित करें। वर्तमान समय में मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा है ऐसे में अभियान चलाकर एंटी लार्वा का छिड़काव व फॉगिंग से संबंधित गतिविधि प्रत्येक कस्बों व गांवो में संचालित कराई जाएए इसमें किसी भी प्रकार की उदासीनता ना बरती जाए।

सीडीओ व सीएमओ को पूरे अभियान की नियमित निगरानी करने के भी निर्देश दिए। पशु चिकित्साधिकारी को सूअर बाड़ोए अन्य पशु बाड़ो के आसपास सफाई पर विशेष ध्यान देने को कहा। किसी भी स्थान पर जलभराव न होने पाए, जहां पर भी जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो वहां एंटीलार्वा का छिड़काव किया जाए, संचारी रोग से संबंधित समस्त गतिविधियों के लिए एक ग्रुप बनाकर उसमें दिन प्रतिदिन होने वाले क्रियाकलापों की फेटोग्राफ्स डाली जाए, सभी क्षेत्रों में होने वाली विभिन्न गतिविधियों की मॉनिटरिंग हेतु नोडल अधिकारी तैनात किए जाने के भी निर्देश दिए।

परिषदीय विद्यालयों में अभी तक नहीं पहुंची पाठ्य पुस्तके

संडीला (हरदोई)। प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में नया शिक्षा सत्र शुरू होने में मात्र तीन दिन शेष रह गए हैं जबकि अभी तक विद्यालयो में सरकारी पुस्तकों का कहीं कोई अती पता नहीं है। प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में शिक्षा सत्र 1 अप्रैल से 31 मार्च तक निर्धारित है। परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक के छात्र छात्राओं को विभाग द्वारा नि:शुल्क पुस्तकें उपलब्ध कराने का प्रावधान हैए लेकिन सत्र शुरू होने में मात्र 3 दिन शेष हैं लेकिन अभी तक नए सत्र की पाठ्य पुस्तकें किसी भी बीआरसी पर नहीं पहुंची हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि 1 अप्रैल के बाद छात्र छात्राएं नवीन कक्षाओं में जब बैठेंगे तो उन्हें अध्यापक बिना पुस्तक कैसे शिक्षा दे पाएंगेघ् वह भी विशेष रूप से विज्ञानए गणितए अंग्रेज़ी आदि विषयों में। यह शिक्षकों के समक्ष एक गंभीर चुनौती होगी।

तीन सगे भाइयों सहित पांच पर हत्या का दर्ज हुआ केस

संवाददाता। फर्रुखाबाद

युवक की लाठियों से पीटकर हत्या किये जाने के मामले में पुलिस नें मृतक के भाई की तहरीर पर तीन सगे भाईयों सहित पांच के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत किया है। मोहम्मदाबाद कोतवाली क्षेत्र के ग्राम नकटापुर निवासी नेत्रपाल पुत्र राजा राम के भाई सत्यपाल की बीती देर शाम लाठियों से पीटकर हत्या कर दी गयी थी। नेत्रपाल की तहरीर पर पुलिस नें सत्यपाल की हत्या में गाँव के ही संजीब, कुलदीप, कमल प्रताप पुत्र रामनिवास, शेर सिंह पुत्र दयाराम व भूरे पुत्र महिपाल के खिलाफरंजिश में हत्या को अंजाम देनें के मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करायी है।

घटना के समय ही भीड़ ने एक आरोपी संजीब पुत्र रामनिवास को भीड़ नें पकड़ कर उसकी जमकर धुनाई भी कर दी। वह फिलहाल सीएचसी में भर्ती है। पुलिस कई बार आरोपियों के घर दबिश मार चुकी है लेकिन आरोपियों के घरों पर ताले लटक रहें है । कोतवाल मनोज भाटी नें बताया कि आरोपियों की तलाश की जा रही है। फिलहाल आरोपी फरार हैं ।

तीन टैक्टर व एक जे सी वी को अवैध खनन में लिया कब्जे में अबैध खनन करनें में नायब तहसीलदार नें तीन ट्रैक्टर-ट्राली व एक जेसीबी मशीन को कब्जे में ले लिया है। नायब तहसीलदार अतुल कुमार को सूचना मिली कि करनपुर दत्त में अबैध खनन हो रहा है। जिससे वह दल-बल के साथ मौके पर पंहुचे । मौके पर उन्हें अबैध रूप से खनन होता मिला। उन्होंनें मौके पर मिली एक जेसीबी मशीन व तीन ट्रैक्टर-ट्राली सील कर उपनिरीक्षक जगमोहन के सुपुर्द कर दी। मौके पर कई फीट गहरे गड्ढे खनन से हो गये थे। नायब तहसीलदार अमित कुमार के द्वारा बताया कि लेखपाल से नाप कराकर कितने फुट गहरे गड्ढे हुए हैं तो उसी हिसाब से इन ट्रैक्टरों पर कार्रवाई होगी। तीन ट्रैक्टर, एक जेसीबी मशीन थाना पुलिस को सौंप दिये गये हैं।

सॉसद व राज्यमंत्री की उपस्थिति में आयोजित होगा होली मिलन समारोह

● चैयरमैन रामजी गुप्ता व रूरा मण्डल अध्यक्ष पुच्चू अवस्थी ने भाजपाईयों सहित भारी सॅख्या में लोगों से आयोजन में सम्मिलित होने की अपील की

कानपुर देहात। आज शाम छह बजे रूरा के सीडी गर्ल्स इण्टर कालेज के पास क्षेत्रीय भाजपा सॉसद देवेन्द्र सिंह भोले व राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला की उपस्थित में होली मिलन समारोह का आयोजन किया जायेगा। आयोजक रूरा चैयरमैन रामजी गुप्ता ने जानकारी देते हुये बताया कि इस अवसर पर फाग सहित अन्य कार्यक्रमों के आयोजन में लोगों से सम्मिलित होने की अपील की है। रूरा चैयरमैन रामजी गुप्ता व रूरा मण्डल अध्यक्ष पुच्चू अवस्थी ने बताया कि आज सब्जी मण्डी स्थल पर आयोजित होने वाले होली मिलन समारोह में क्षेत्रीय भाजपा सॉसद देवेन्द्र सिंह भोले व राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला मौजूद रहेंगे। होली मिलन समारोह में फाग के गायन के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम आयोजित किये जायेगे। चैयरमैन ने भाजपाईयों सहित स्थानीय व क्षेत्रीय लोगों से भारी सॅख्या में सम्मिलित होने की अपील की है।

इंडो नेपाल बॉर्डर पहुंची कमिश्नर, विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश

● आयुक्त ने देखे विसभा क्षेत्र पलिया के सुदूरवर्ती मतदान केन्द्र, लिया जायजा

● कम मतदान के कारकों का तत्काल कराए समाधान, मतदान केन्द्रों पर आयोग की मंशानुरूप हो व्यवस्थाएंः आयुक्त

लखीमपुर खीरी। लोकसभा सामान्य निर्वाचन.2024 को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से जनपद भ्रमण कार्यक्रम पर खीरी पहुंची आयुक्त लखनऊ मंडल लखनऊ डॉ रोशन जैकब ने दूसरे दिन गुरुवार को तहसील पलिया के दूरस्थ मतदान केन्द्र प्राथमिक विद्यालय गौरीफंटा सहित ग्राम सरियापारा, ग्राम सूडा के मतदेय स्थलों का निरीक्षण कर मूलभूत सुविधाओं का जायज़ा लिया।

मतदान केन्द्रों के निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने मतदाताओं के बीच स्वयं मतदाता सूची में लिखे नामों को पढ़कर सुनाये जाने तथा ग्रामवासियों से पढ़े गये नामों के बारे में जानकारी प्राप्त की। बूथ लेबिल अधिकारियों को निर्देश दिया कि ग्राम से बाहर रह रहे मतदाताओं के मोबाइल नम्बर पर एसएमएस भेजकर उन्हें मतदान के लिए प्रेरित किया जाय। आयुक्त ने गौरीफंटा थाना क्षेत्र के ग्राम सरियापारा, ग्राम सूडा के मतदेय स्थलों के निरीक्षण के दौरान स्थानीय लोगों से संवाद कर मतदान दिवस ;13 मईद्ध को शत प्रतिशत मतदान का संकल्प दिलाया। इसके बाद उन्होंने चंदन चौकी बॉर्डर पर सब पुलिस राजस्व टीम के साथ फॉरेस्ट एरिया में पैदल मार्च किया।

कमिश्नर ने निरीक्षण के दौरान मतदान केन्द्रों पर सामान्य सूचनाओं एवं टोल फ्री नम्बर 1950 का अंकन, विद्युत कनेक्शन, लाईट व पंखों की उपलब्धता, मतदेय स्थल पर शौचालय, जलापूर्ति की स्थिति, मतदेय स्थल पर शुद्ध पेयजल, स्थापित हैण्डपम्प की क्रियाशीलता, मतदेय स्थल/विद्यालय की साफ सफाई, रैम्प, मतदान केन्द्र पर नेटवर्क की उपलब्धता, कन्ट्रोल रूम का नम्बर, फोटोयुक्त मतदाता पहचान.पत्र वितरण, रूट चार्ट तथा कम्यूनिकेशन प्लान में दर्ज मोबाइल नम्बरों का सत्यापन भी किया।

आयुक्त डॉ रोशन जैकब ने एसडीएम कार्तिकेय सिंह को निर्देश दिया कि कम मतदान के कारकों का तत्काल समाधान कराते हुए मतदान केन्द्रों पर आयोग की मंशानुरूप व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराएं। कहा कि मतदेय स्थल पर विशेष कैंप लगाकर न केवल मतदाताओं को जागरूक किया जाए बल्कि यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी पात्र व्यक्ति मतदाता बनने से वंचित न रहने पाए।

आयुक्त ने ग्राम प्रधान, कोटेदार, रसोईयां, रोजगार सेवक, अध्यापक, सचिव, लेखपाल, आंगनबाड़ी, आशा से वार्ता करते हुए कहा कि अधिक से अधिक लोगों को मतदान के लिए प्रेरित करें। गुरुवार को आयुक्त डॉ रोशन जैकब एसडीएम कार्तिकेय सिंहए सीओ पहिया के साथ इंडो नेपाल बॉर्डर पहुंची, जहां उन्होंने सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी), कस्टम एवं पुलिस कवच सेल के जिम्मेदार अफसरो के साथ स्थलीय भ्रमण किया और लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत विशेष सतर्कता बरतते हुए निगरानी करने के निर्देश दिए।

क्विक न्यूज़

अस्पताल में भर्ती अज्ञात घायल अधेड़ की शिनाख्त

फतेहपुर। थरियांव थानां क्षेत्र के बरई खुर्द गांव निवासी स्व. गया प्रसाद का 55 वर्षीय पुत्र ननकू 26 मार्च को घर से किसी काम से निकला था। तभी उसको कोई अज्ञात वाहन टक्कर मारते हुए निकल गया। वाहन की टक्कर से ननकू के सिर में चोट आने की वजह से उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया और वह अपना नाम पता बताने में असमर्थ हो गया। बुधवार की शाम अज्ञात में उसको इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया गया। जहां डॉक्टर उसका इलाज कर रहे है। उधर अचानक बिना बताए ननकू के गायब होने से परिजन काफी परेशान थे। खोज करते हुए ननकू की पुत्री पूजा देवी पत्नी राम मिलन ग्रामीणों के साथ जिला अस्पताल पहुंचकर अपने पिता की पहचान किया।

सीढ़ियों से गिरकर युवक जख्मी

फतेहपुर। सदर कोतवाली क्षेत्र के मुराइनटोला मोहल्ला निवासी लाल बहादुर निषाद का 25 वर्षीय पुत्र सूरज निषाद आज सुबह अपने घर की छत पर किसी काम से गया था। जब वह सीढियो से उतरने लगा तभी उसका पैर सीढ़ी से फिसल गया और वह लुढ़कता हुआ नीचे गिरकर घायल हो गया। घटना की जानकारी परिजनों को हुई तो तुरन्त उसको इलाज के लिए जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टर उसका इलाज कर रहे है।

जहरीला पदार्थ खाने से युवक की हालत बिगड़ी

रसूलाबाद कानपुर देहात। जहरीला पदार्थ खाने से नव युवक की हालत बिगड़ गई वहीं आनन फानन में परिजनों ने उसे सीएससी पहुंचाया जहां उसका उपचार शुरू हुआ। रसूलाबाद कोतवाली क्षेत्र के हीकेपुर गांव निवासी दीपक कुमार उम्र लगभग 18वर्ष पुत्र राजेंद्र ने सदिग्ध परिस्थितियों में जहरीला पदार्थ खाकर जान देने का प्रयास किया हालत बिगड़ने पर परिजन उसे उपचार के लिए सीएचसी ले गए जहां मौजूद चिकित्सक डॉक्टर बृजेश कुमार ने उपचार शुरू किया।

सडक दुर्घटना में ग्रामीण हुआ घायल

रसूलाबाद कानपुर देहात। क्षेत्र के पहाड़ीपुर गांव के नजदीक गुरुवार को सड़क दुर्घटना में हरचंद निवादा निवासी नीलेश घायल हो गया। जहां उसे उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रसूलाबाद लाया गया। वहां मौजूद चिकित्सक बृजेश कुमार ने प्राथमिक उपचार करने के बाद हालत को गंभीर देखते हुए उसे कानपुर रेफर कर दिया।

डीजे पर डांस कर रहे दंपति को पीटा

राठ। कोतवाली के अकौना गांव निवासी शिक्षक पत्नी जयहिंद राजपूत ने बताया कि मंगलवार की रात करीब ग्यारह बजे घर के पास उसके पति डीजे पर डांस कर रहे थे। तभी गांव के जवाहर राजपूत, उसका पुत्र सरजेश और अरुण राजपूत पति के साथ गाली गलौज करने लगे। विरोध करने पर उक्त लोगों ने पति के मारपीट शुरू कर दी। बताया कि जब वह बचाने पहुंची तो उसे भी मारा.पीटा। मारपीट से उसे व उसके पति को चोटें आईं हैं। पीड़िता ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की गुहार लगाई है।

गायत्री महायज्ञ 29 मार्च से

संडीला (हरदोई)। घुम्मन बाबा देवस्थान ग्राम घुमना खेड़ा में पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के सूक्ष्म संरक्षण में नौकुंडी गायत्री महायज्ञ 29 मार्च से शुरू होगा। जिसमें सुश्री राधिका विदुशी;काशीद्ध द्वारा प्रवचन होगा। इसके अलावा 29 मार्च को कलश पूजन शोभा यात्राए 30 मार्च सतसंग प्रवचन होगा। 31 मार्च को ज्ञान विज्ञान पंचकोष साधना तथा 1 अप्रैल को दीप यज्ञए 2 अप्रैल गायत्री यज्ञए कन्या भोज आदि के कार्यक्रम होंगे। एक प्रेस वक्तव्य में गायत्री परिवार द्वारा यह सूचना दी गयी है।

महिला व युवक ने खाया जहरए दोनों रेफर

राठ। मझगवां थाने के कोटा गांव निवासी 27 वर्षीय रजनी पत्नी निर्दोष ने पारिवारिक कलह के चलते जहरीला पदार्थ खा लिया। स्वजन इलाज के लिए सीएचसी ले गए। जहां चिकित्सक ने मेडिकल कालेज उरई रेफर कर दिया। वहीं कोतवाली के पड़रा गांव निवासी 36 वर्षीय कुंवरलाल पुत्र मक्खू ने जहरीला पदार्थ खा लिया।

रविवार को खुला रहेगा एआरटीओ कार्यालय

फतेहपुर। सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रशासन) श्रीमती पुष्पांजलि मित्रा गौतम ने बताया कि राजस्व हित के दृष्टिगत रविवार को कार्यालय, वाहनों का कर (टैक्स) जमा करने हेतु खुला रहेगा।

मारपीट से घायल हुए किसान ने तोड़ा दम

राठ। होली के पर्व पर ठेका पर शराब लेने को लेकर हुई मारपीट में घायल हुए किसान ने दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक के पुत्र आधा दर्जन लोगों के विरुद्ध कोतवाली में शिकायत की है। कोतवाली के औंता गांव निवासी राहुल राजपूत ने पुलिस को बताया कि मंगलवार को होली के पर्व पर उसके पिता 46 वर्षीय भारत सिंह गांव में स्थित ठेका से शराब ले रहे थे। गांव का रामसहाय वहां आया और पहले शराब लेने को लेकर पिता के साथ गाली गलौज करने लगा। शाम को उसके पिता खेत पर चले गए। रात करीब 10 बजे रामसहाय अपने पुत्र सचिन, लवकेश लक्ष्मण पुत्र नंदराम, अमित पुत्र लक्ष्मणए सर्वेशए राहुल खेत पर गए और चारपाई पर सो रहे पिता के साथ मारपीट करने लगे। उसके पिता वहीं बेहोश हो गए। बताया कि उक्त लोग बेहोशी हालत में छोड़ कर भाग गए। बुधवार की सुबह जानकारी होने पर उन्हें सीएचसी ले गए। जहां से चिकित्सक ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

अचानक नाना की बंदूक से चली गोली, नाती की हुई मौत

● महोली कोतवाली इलाके के चंद्रा गांव की घटना, मचा कोहराम

● नाती की मौत से सदमें आए नाना की हालत गंभीर, जिला अस्पताल रेफर ● पुलिस ने बंदूक को कब्जे में लेकर जांच के लिए भेजा

संवाददाता। महोली सीतापुर

लोकसभा चुनाव के मद्दे नजर बंदूक जमा करने के लिए उसकी सफाई करने के दौरान अचानक गोली चल गई। बंदूक से निकली गोली सामने खेल रहे 3 साल के नाती को जा लगी जिससे मौके पर ही मौत हो गई। यह दुखद घटना महोली कोतवाली इलाके के चंद्रगांव की है। यहां के निवासी अरुण त्रिवेदी पुत्र स्वर्गीय श्याम किशोर त्रिवेदी की बेटी अपराजिता मिश्रा की शादी लखनऊ में अमित मिश्रा के साथ हुई है।

होली के पर्व पर वह अपने तीन साल के बेटे स्वास्तिक के साथ मायके आई हुई थी। लोकसभा चुनाव के चलते सभी के लाइसेंसी शस्त्र जमा कराए जा रहे है। इसे देखते हुए गुरुवार सुबह नाना अरुण त्रिवेदी अपनी एकनाली बंदूक को साफ करने बैठे थे। बंदूक पहले से लोड थी, अचानक गोली चल गई, जो सामने खेल रहे स्वास्तिक के जा लगी। इस मामले में कोतवाली प्रभारी उमाकांत शुक्ला ने बताया शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर बंदूक को कब्जे में लिया गया है जिसे फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा और नाना की हालत सामान्य होने पर पूछतांछ की जाएगी।

जिला जज, जिलाधिकारी व एसपी ने किया जिला कारागार का निरीक्षण

बंदियों से पूंछताछ करते जिला जज व डीएम, एसपी।

गुरसहायगंज (कन्नौज)। जनपदीय अधिकारियों जनपद-न्यायाधीश लोकेश वरूण, एडीजे लवली जायसवाल, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, जिलाधिकारी सुधांत कुमार शुक्ला व पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द द्वारा सम्पूर्ण कारागार का संयुक्त रूप से निरीक्षण किया गया। सभी अहातों की बैरकों में निरूद्ध बंदियो (पुरूष व महिला) से उनकी समस्याओं के संबंध में पूछताँछ की गयी, बैरकों की तलाशी करायी गयी, तलाशी के दौरान कोई निषिद्व वस्तु नहीं पायी गयी। बंदियों से पूछताछ के दौरान उनके द्वारा कारागार से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई शिकायत नहीं बतायी गयी। जेल की सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े उपकरणों की क्रियाशीलता को देखा गया। अक्रियाशील कैमरों को तत्काल ठीक कराये जाने तथा कैमरों को प्रत्येक समय क्रियाशील रखे जाने व उनकी प्रत्येक समय मानीटरिंग करने के निर्देश दिये गये। बीमार बंदियों के उपचार में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही न बरती जाये। कारागार में निरूद्ध वृद्ध व अशक्त बंदियों पर विशेष निगरानी रखे तथा उनका नियमित रूप से परीक्षण कर समुचित उपचार करना सुनिश्चित करनें के लिये निर्देशित किया।

जेल अधीक्षक द्वारा कारागार की स्वच्छता, सौन्दर्यीकरण एवं बंदियों को अनुशासित रखने हेतु विशेष ध्यान दिये जाने के लिये जनपद न्यायाधीश द्वारा प्रशंसा कर निर्देशित किया जाता है कि भविष्य में भी इसी प्रकार विशेष रूचि के साथ कारागार को सुगमतापूर्वक संचालन करना सुनिश्चित करें। कारागार को सुगमतापूर्वक संचालन हेतु निर्देशित किया गया। महिला बैरक में निरीक्षण के दौरान जनपदीय अधिकारियों द्वारा महिला बंदियों के साथ रह रहे बच्चों को टॉफी, बिस्कुट, चाकलेट आदि वितरित की गयी जिसे पाकर बच्चो में उत्साह देखा गया। जेल अधीक्षक, कारापाल विजय कुमार शुक्ला, उपकारापाल उर्मिला सिंह, उपकारापाल रामबहाल दुबे, चिकित्साधिकारी डा. अजय कुमार पाल तथा प्रभारी मुख्य कार्यालय पंकज कुमार, जेल वार्डर कुलदीप सिंह के साथ सभी प्रशासनिक कर्मचारी उपस्थित थे।

खाद्य पदार्थ से ऊर्जा बनाने पर अर्पित को मिला पुरस्कार

पुस्कृत बच्चों के साथ मौजूद अधिकारीगण।

कन्नौज। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत जनपद स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन सेंट जेवियर्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल कन्नौज में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य विकास अधिकारी राम कृपाल चौधरी ने दीप प्रज्वलित कर एवं सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण करनें के उपरान्त कहा कि बच्चों द्वारा विभिन्न मॉडल और प्रदर्शनी को प्रदर्शित किया जा रहा है। निश्चित यह बच्चे आगे चल वैज्ञानिक बनेंगे। बेसिक के विद्यार्थियों द्वारा अद्भुत प्रदर्शन किया जा रहा है। सीडीओ, जिला विद्यालय निरीक्षक डा. पूरन सिंह ,जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रत्येक विकासखंड से आए हुए कुल 99 प्रतिभागियों के मॉडल और प्रोजेक्ट का अवलोकन किया गया। जिसमें प्रथम पुरस्कार अर्पित कुमार ने प्राप्त किया, द्वितीय पुरस्कार सागर ने तथा तृतीय पुरस्कार रंजीत ने प्राप्त किया। प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार को क्रमशः एक हजार, सात हजार पॉच सौ, पॉच हजार रुपये का नगद पुरस्कार दिया गया साथ ही चौथे स्थान से लेकर दसवें स्थान तक के बच्चों को 2500 रुपए नगद पुरस्कार दिया गया सभी उत्कृष्ट 10 बच्चों को नगद पुरस्कार के अतिरिक्त मुख्य विकास अधिकारी द्वारा सभी प्रतिभागी बच्चों को बैग, स्टेशनरी, मोमेंटो, प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी उपासना रानी वर्मा द्वारा सभी शिक्षकों और बच्चों को इसी प्रकार कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया और कहा कि इस प्रकार सकारात्मक कार्य करते हुए अपना और अपने विभाग का नाम रोशन करिए। जनपद नोडल आशुतोष दुबे ने बताया कि उक्त प्रदर्शनी में उत्कृष्ट दो स्थान प्राप्त बच्चों की सूचना राज्य स्तर पर भेजी जायेगी। समस्त ब्लाक नोडल शिक्षकों एवं मार्गदर्शक शिक्षकों को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रदर्शनी में सुनील चतुर्वेदी वरिष्ठ डायट प्रवक्ता, शिवमोहन कुशवाहा, प्रधानाध्यापक, राजेश वर्मा डायट प्रवक्ता, ब्लाक नोडल रवि त्रिपाठी, शशिकांत शुक्ला, भोले शंकर चतुर्वेदी, तेज प्रताप सिंह, पीयूष गुप्ता, अतुल कुमार दीक्षित उपस्थित रहे।

बलवन्त हत्याकाण्ड में आरोपियों ने दोबारा जिरह के लिये अपील की

कानपुर देहात। बहुचर्चित बलवन्त हत्याकाण्ड में आरोपी गण दुर्वेश कुमार, अनूप कुमार, ज्ञान प्रकाश पाण्डे व राजेश सिंह की तरफसे पिछली तिथि पर अलग अलग प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर, अभियोजन साक्षी गुड्डू उर्फ राघवेन्द्र सिंह को तलब कर पुन: जिरह का अवसर प्रदान करने की प्रार्थना की गई थी जिस पर वादी अंगद सिंह ने विस्तृत आपत्ति दाखिल करते हुए विरोध किया और आरोप लगाए कि आरोपी जिले में पूर्व में तैनात पुलिस के अधिकारी पुलिस कर्मी है वह पुलिस व आप्राधिधियों के माध्यम से गवाहों को आरोपियों के विरुद्ध गवाही न देने के लिए धमका रहे है इसी लिए केश को लम्बा खींच गवाही में व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। अन्य आरोपी प्रशान्त गौतम की तरफ से भी साक्षी गुड्डू उर्फ राघवेन्द्र से जिरह का अवसर देने हेतु प्रार्थना पत्र दिया गया। न्यायालय ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद आरोपियों का प्रार्थना पत्र स्वीकृत कर साक्षी गुड्डू उर्फ राघवेन्द्र सिंह से जिरह हेतु 4 अप्रैल की तिथि नियत करने का आदेश किया है। यह जानकारी वादी पक्ष की तरफ से पैरवी कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता जितेन्द्र प्रताप सिंह चौहान ने दी। पिछली तिथि पर वादी अंगद सिंह ने प्रथम सूचना रिपोर्ट के आरोपी तत्कालीन रानियां थाना प्रभारी शिव प्रकाश सिंह व एस ओ जी के तत्कालीन आरक्षी महेश गुप्ता को केश में अभियुक्त के रूप में तलब कर विचारण किए जाने हेतु न्यायालय में प्रार्थना पत्र दाखिल किया था जिस पर अभी सुनवाई होना शेष है। चश्मदीद गवाह मृतक के बलवंत सिंह के चचेरे भाई गुड्डू उर्फ राघवेन्द्र सिंह के बयान न्यायालय में पूर्व में दर्ज किए गए थे। गवाह ने आरोपियों में पांच आरोपियों प्रशान्त कुमार गौतम, प्रशान्त कुमार पाण्डे, सोनू, दुर्वेश व अनूप कुमार को देख कर पहचान कर कहा कि इन्हीं आरोपियों ने घटना वाले दिन व समय पर मृतक बलवंत सिंह की गाड़ी की चाभी निकाल कर बलवंत को मारते हुए बलवंत व रामजी को घसीट कर अपनी बोलेरो गाड़ी में बैठा लिया।

पालतू जानवरों का होगा रजिस्ट्रेशन, आवारा जानवरो पर लगेगा जुर्माना

फर्रुखाबाद। अब आवारा जानवर पकड़े जाने पर मालिक से 5 हजार का जुर्माना वसूला जाएगा। यह निर्णय आज डीएम डॉ. वी.के. सिंह की अध्यक्षता में विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान हेतु अंतर्विभागीय जनपद स्तरीय समिति की वैठक मैं लिया गया। बैठक में सीएमओ ने अवगत कराया कि संचारी रोग नियंत्रण अभियान 1 अप्रैल से 30 अप्रैल तक व दस्तक अभियान 10 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलेगा। बैठक में डीपीआर ओ व ईओ को निर्देशित किया गया कि जनपद के सभी तालाबो की सफाई करा ली जाये, पशुपालन विभाग सभी सुअर पालन केंद्रों व मुर्गी पालन केंद्रों का निरीक्षण कर आवश्यक कार्यवाही करें। जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित किया कि सभी कुपोषित बच्चों का चिन्हीकरण कर सूची उपलब्ध कराए।

शिक्षा विभाग से अपेक्षा की गई कि सभी स्कूलों में बच्चो को मच्छरजनित बीमारियो के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जाये। खंड शिक्षा अधिकारी व बीआरसी के द्वारा विद्यालयो में जागरूकता के कार्यक्रम कराये जाये। कृषि विभाग व उद्यान विभाग को निर्देशित किया गया कि सभी किसानों को ऐसे पौधे लगाने के लिये प्रेरित किया जाए जो मच्छर प्रतिरोधी हो। उद्यान अधिकारी ने बताया कि हर गाँव मे इस संबंध में गोष्ठी होती है। बैठक में प्रकाश में आया कि जनपद में मलेरिया विभाग द्वारा अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सही तरीके से नही किया जा रहा है इस पर जिलाधिकारी द्वारा नाराजगी जताते हुए जिला मलेरिया अधिकारी का स्पष्टीकरण माँगा गया।

पिछले एक महीने में मलेरिया निरीक्षकों ने क्या कार्य किया है लिखित में अवगत कराएं। बैठक में निर्देशित किया गया कि सभी पी एच सी पर एन्टीरैबीज वैक्सीन पहुचाई जाये। ईओ को निर्देशित किया गया कि नपा द्वारा पालतू जानवरों का पंजीकरण किया जाये। अपंजीकृत जानवर मिलने पर 5000 रुपए का जुर्माना लगाया जाये। सभी नगर पालिका व पंचायतों में जागरूकता के लिए हैंडबिल बंटवाये जाये, होर्डिंग लगवाए जाए, सभी पालतू जानवर जिनका वैक्सिनेशन हो। उनको कार्ड उपलब्ध कराए जाए। डीएम द्वारा आई एम ए के अध्यक्ष से यह अपेक्षा की गई कि वह अपनी संस्था के द्वारा आम जनमानस को मतदान के लिए जागरूक करे, सभी डॉ0 अपने पर्चे पर मतदान के स्लोगन अंकित कराये व मतदाता पहचान पत्र लाने पर अपनी फीस में भी छूट प्रदान करे जिससे आम जनमानस मतदान के प्रति जागरूक हो सके। बैठक में सीडीओ, सीएमओ, आईएमए अध्यक्ष व संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बीजद सांसद महताब, पूर्व सांसद सिद्धांत महापात्रा और संथाली लेखिका दमयंती बेसरा ने थामा भाजपा का दामन

आगामी लोकसभा व विधानसभा चुनावों से पहले ओडिशा के सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) को बड़ा झटका लगा

भाषा। नई दिल्ली

आगामी लोकसभा व विधानसभा चुनावों से पहले ओडिशा के सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) को बड़ा झटका लगा है। कटक के सांसद और बीजद के संस्थापक सदस्यों में से एक भर्तृहरि महताब और पूर्व सांसद सिद्धांत महापात्रा के साथ ही पद्मश्री से सम्मानित संथाली लेखिका दमयंती बेसरा बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए।

केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, महासचिव विनोद तावड़े, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बैजयंत जय पांडा और पार्टी की ओडिशा इकाई के अध्यक्ष मनमोहन सामल की मौजूदगी में तीनों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।भाजपा नेताओं ने तीनों के पार्टी में शामिल होने का स्वागत किया और इसे ओडिशा में परिवर्तन का संकेत करार दिया। प्रधान ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत, विकसित ओडिशा, पूर्वोदय और सबका साथ-सबका विकास की संकल्पना से प्रेरित होकर भाजपा परिवार में शामिल होने का इन तीनों गणमान्य व्यक्तियों का निर्णय अभिनंदनीय है। ओडिशा में इस बार परिवर्तन तय है। ज़मीन से जुड़े ऐसे अनुभवी और प्रतिष्ठित लोगों के भाजपा से जुड़ने से ओडिशा में परिवर्तन के संकल्प को और अधिक मजबूती मिलेगी।

कटक लोकसभा क्षेत्र से छह बार सांसद रहे महताब ने 22 मार्च को बीजद की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि उन्हें बीजद में स्वतंत्र रूप से काम करने का पर्याप्त मौका नहीं मिला। तभी से उनके भाजपा में शामिल होने की अटकलें थीं।उनके इस्तीफा देने के कुछ ही दिन बाद बीजद ने लोकसभा चुनाव के लिए महताब का टिकट काट दिया था। कटक में महताब के स्थान पर बीजद ने संतृप्त मिश्रा को उम्मीदवार बनाया है।भाजपा में शामिल होने के बाद महताब ने दावा किया कि ओडिशा में परिवर्तन होने जा रहा है और इसका आभास राज्य का दौरा करने से होगा।

उन्होंने कहा कि जीवन के पड़ाव में एक निर्णय लेना अनिवार्य हो जाता है और उन्हें लगता है कि इस समय भाजपा के साथ जुड़ने का उनका निर्णय सही साबित होगा।महताब ने कहा, मेरा जो अनुभव है, उसके हिसाब से कह सकता हूं कि राष्ट्रवाद, एकात्मता और पूर्वोदय का मिलाप भाजपा के जरिए ही हो सकता है। इसके कई उदाहरण हैं जो मैंने पिछले 10 साल में अनुभव किए। मुझे लगा राज्य की प्रगति और उन्नति के लिए यही सही मौका है। ओडिशा के लिए, कुछ कर जाने का मौका है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शक्ति, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का विश्वास और भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा की प्रेरणा उन्हें आगे ले जाने में मददगार होगी।बेसरा ने तीनों नेताओं का भाजपा में स्वागत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों से प्रभावित होकर अलग-अलग क्षेत्रों से लोगों का भाजपा के साथ जुड़ने का सिलसिला जारी है।उन्होंने दावा किया कि ओडिशा में भी राजनीतिक हालात बदले हैं और वहां के नेताओं का भाजपा में शामिल होना इसे दर्शाता भी है।उन्होंने कहा, ओडिसा की जनता बदलाव चाहती है। ओडिशा की जनता के हित में पार्टी सभी नेताओं का उनकी क्षमता के अनुरूप उपयोग करेगी। बेसरा जनजातीय मुद्दों की शोधकर्ता होने के साथ ही साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं।उन्होंने कहा कि वह जनता की तो पहले से ही सेवा कर रही थी लेकिन आज से वह उनके कल्याण की दिशा में काम करेंगी।बेसरा ने कहा कि वह प्रधानमंत्री मोदी के सबका साथ, सबका विकास के नारे से प्रेरित हैं और उसमें सहयोग देने को आतुर हैं।उन्होंने भी दावा किया अभी ओडिशा में परिवर्तन की हवा बह रही है।उन्होंने कहा, यह हवा ओडिशा में सभी को छू रही है। पार्टी के आदर्श में लोगों का विश्वास और भी दृढ़ हुआ है।

हरियाणा की पूर्व मंत्री सावित्री जिंदल कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल

चंडीगढ़। हरियाणा की पूर्व मंत्री सावित्री जिंदल कांग्रेस छोड़कर बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गईं। कुछ ही दिन पहले उनके बेटे और उद्योगपति नवीन जिंदल कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे। सावित्री जिंदल (84) हिसार में आयोजित एक कार्यक्रम में भाजपा में शामिल हुईं। इस दौरान हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर और अन्य भाजपा नेता उपस्थित थे। सावित्री ने बुधवार देर रात एक सोशल मीडिया पोस्ट में कांग्रेस छोड़ने के अपने फैसले की घोषणा की। उन्होंने एक पोस्ट कर कहा, मैंने एक विधायक के रूप में 10 वर्ष तक हिसार के लोगों का प्रतिनिधित्व किया और एक मंत्री के रूप में निस्वार्थ भाव से हरियाणा राज्य की सेवा की है। हिसार के लोग मेरा परिवार हैं और अपने परिवार की सलाह पर, मैं आज कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रही हूं। फोर्ब्स इंडिया पत्रिका ने इस साल देश की सर्वाधिक अमीर महिलाओं की सूची में सावित्री जिंदल का नाम शामिल किया था। पत्रिका के अनुसार, प्रसिद्ध उद्योगपति और हरियाणा के पूर्व मंत्री ओ पी जिंदल की पत्नी सावित्री जिंदल की कुल संपत्ति 29.1 अरब डॉलर है। सैनी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, हम भाजपा परिवार में दिग्गज कांग्रेस नेता, हरियाणा सरकार में पूर्व मंत्री, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती सावित्री जिंदल जी और उनकी बेटी श्रीमती सीमा जिंदल जी का स्वागत करते हैं। हरियाणा में कांग्रेस की पूर्ववर्ती भूपेंद्र हुड्डा सरकार में सावित्री जिंदल मंत्री थीं। वर्ष 2014 के चुनाव में सावित्री हिसार सीट पर भाजपा के डॉ. कमल गुप्ता से हार गई थीं। गुप्ता वर्तमान में नायब सिंह सैनी सरकार में मंत्री हैं। सावित्री जिंदल के बेटे और उद्योगपति नवीन जिंदल कांग्रेस छोड़कर रविवार को भाजपा में शामिल हुए। नवीन को आगामी लोकसभा चुनाव के लिए कुरूक्षेत्र से भाजपा का उम्मीदवार बनाया गया है। सैनी और खट्टर द्वारा पार्टी में स्वागत किए जाने के बाद सावित्री जिंदल ने कहा, हम एक बार फिर (प्रधानमंत्री नरेंद्र) मोदी के नेतृत्व में केंद्र में एक मजबूत सरकार बनाने के लिए मिलकर काम करेंगे। न्होंने कहा, हमें मोदी परिवार का सदस्य बनाने के लिए मैं भाजपा के प्रत्एक पदाधिकारी और कार्यकर्ता का आभार व्यक्त करती हूं। हम पार्टी की उम्मीदों पर खरे उतरेंगे। उन्होंने कहा कि पिछली खट्टर सरकार के तहत हरियाणा में अभूतपूर्व विकास हुआ। सावित्री जिंदल ने कहा, मैं 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण से प्रभावित हूं। साल 2005 में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में जान गंवाने वाले अपने पति ओ.पी. जिंदल को याद करते हुए उन्होंने कहा कि उनका विचार था कि दलित और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के उत्थान से भारत एक महान राष्ट्र बन सकता है। सावित्री ने कहा, उन्होंने (ओ. पी. जिंदल) 1991 में इसी प्रतिज्ञा के साथ राजनीति में प्रवेश किया था। मार्च 2005 में उनके निधन के बाद, मैंने उनके सपनों को साकार करने के लिए राजनीति में प्रवेश किया। उन्होंने कहा, हिसार मेरी जन्मभूमि और कर्मभूमि है। हिसार के लोगों ने हमेशा अपना प्यार बरसाया है और मैंने भी उन्हें अपने परिवार का हिस्सा माना है। सावित्री जिंदल ने कहा कि आज देश को भाजपा और मोदी की जरूरत है।इस अवसर पर सैनी ने कहा कि भाजपा की डबल इंजन सरकार ने पिछले 10 वर्षों में बहुत सारे विकास कार्य किए हैं।

बिहार में प्रथम चरण के तहत 70 से अधिक उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किए

पटना, नई दिल्ली (भाषा)। लोकसभा चुनाव के प्रथम चरण के तहत बिहार की चार सीट के लिए 70 से अधिक उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं। निर्वाचन आयोग ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। जिन चार सीट पर 19 अप्रैल को पहले चरण में मतदान होगा उनमें सबसे अधिक 22 उम्मीदवार गया सीट पर हैं जबकि औरंगाबाद में 21, नवादा में 17, और जमुई में 12 प्रत्याशी हैं। प्रथम चरण के लिए दाखिल किए गए नामांकन पत्रों की जांच 30 मार्च को होनी है जबकि दो अप्रैल नाम वापसी की अंतिम तिथि है। सभी चार सीट पर प्रदेश में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और विपक्षी गठबंधन इंडिया के बीच सीधा मुकाबला होने की संभावना है और अंतिम दिन दोनों गठबंधनों से तीन-तीन उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। राजग के उम्मीदवारों पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने गया सीट से, विवेक ठाकुर ने नवादा और अरुण भारती ने जमुई से अपना नामांकन दाखिल किया।

बिहार में सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के उम्मीदवारों अभय कुशवाहा (औरंगाबाद), अर्चना रविदास (जमुई) और कुमार सर्वजीत (गया) ने भी नामांकन पत्र दाखिल किए। राजद इंडिया गठबंधन में शामिल है। इंडिया गठबंधन द्वारा सामूहिक तौर सीट बंटवारे की घोषणा किए बिना ही बिहार में लगभग एक दर्जन सीट पर राजद ने एकतरफा उम्मीदवार उतारकर सबको चौंका दिया है। राजद ने औरंगाबाद सीट पर जद(यू) से आए अभय कुशवाहा को टिकट दिया है। औरंगाबाद से कांग्रेस के पूर्व सांसद निखिल कुमार को चुनावी मैदान में उतारे जाने की चर्चा थी, लेकिन राजद ने कुशवाहा को उम्मीदवार बना दिया।

औरंगाबाद से भाजपा के मौजूदा सांसद सुशील कुमार सिंह ने इस सप्ताह की शुरुआत में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया था। हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा के प्रमुख 79 वर्षीय जीतन राम मांझी ने प्रदेश भाजपा प्रमुख और उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, जदयू के मंत्री श्रवण कुमार और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के अध्यक्ष चिराग पासवान की उपस्थिति में गया (सुरक्षित) सीट से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। जमुई के लिए रवाना होने से पहले राजग नेताओं ने जनसभा को संबोधित भी किया। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने चिराग पासवान के बहनोई अरुण भारती को जमुई (सुरक्षित) सीट से चुनावी मैदान में उतारा है। चिराग लगातार दो बार लोकसभा में जमुई का प्रतिनिधित्व करने के बाद अपने पिता दिवंगत रामविलास पासवान की पुरानी सीट हाजीपुर से चुनाव लड़ रहे हैं। नवादा में राज्यसभा सांसद और भाजपा उम्मीदवार विवेक ठाकुर ने केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह समेत पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में नामांकन पत्र दाखिल किया।

गिरिराज सिंह 2014 में इस सीट से लोकसभा पहुंचे थे लेकिन 2019 का आम चुनाव उन्होंने बेगुसराय से लड़ा था। राजग उम्मीदवारों के नामांकन दाखिल करने के समय जहां उनके कई वरिष्ठ नेता मौजूद थे, वहीं राजद उम्मीदवारों के नामांकन दाखिल करने के समय पार्टी प्रमुख लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव जैसे शीर्ष पार्टी नेता दिल्ली में होने के कारण अनुपस्थित रहे। इंडिया गठबंधन का प्रादेशिक गठबंधन महागठबंधन हालांकि बिहार तक ही सीमित है लेकिन इसमें शामिल राजद, कांग्रेस और तीन वामपंथी दलों के बीच अभी तक सीट बंटवारे की औपचारिक घोषणा नहीं हुई है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) दोनों के एक-एक सीट से ही उम्मीदवार खड़ा किए जाने की संभावना है। उन्होंने बेगुसराय और खगड़िया से अपने-अपने उम्मीदवारों की घोषणा की है।इस बीच, बिहार में महागठबंधन के नेताओं ने कहा कि तेजस्वी यादव शुक्रवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करेंगे तब देर से ही सही गठबंधन के उम्मीदवारों के बारे में औपचारिक घोषणा होने की संभावना है। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती की बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने भी चारों सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे हैं। इस बीच, जद(यू) के उम्मीदवार संतोष कुशवाहा ने पूर्णिया लोकसभा सीट से अपने नामाकंन पत्र दाखिल किए, जिसपर दूसरे चरण में मतदान होना है।

दूसरी ओर पूर्व सांसद और झारखंड में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता रहे रामटहल चौधरी बृहस्पतिवार को कांग्रेस में शामिल हो गए। पश्चिम बंगाल में भारतीय गोरखा परिसंघ नामक संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुनीष तमांग जी ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की और अपने संगठन का पार्टी में विलय कर दिया। चौधरी भाजपा के टिकट पर रांची से पांच बार लोकसभा सदस्य रहे। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने उनका टिकट काटकर संजय सेठ को उम्मीदवार बनाया था। इसके बाद वह भाजपा से अलग हो गए थे।

बड़े खुदरा ब्रांड आकर्षित कर रहे है अयोध्या, काशी जैसे शहर

नई दिल्ली। आध्यात्मिक पर्यटन के लगातार बढ़ने के बीच खुदरा ब्रांड अयोध्या, वाराणसी, अमृतसर, पुरी, तिरुपति तथा अजमेर जैसे शहरों में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहे हैं। साथ ही तीर्थयात्रियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कई उत्पाद भी पेश कर रहे हैं। रियल एस्टेट सलाहकार सीबीआरई की ओर से बृहस्पतिवार को जारी रिपोर्ट डिकोडिंग रियल एस्टेट थ्रू द स्पिरिचुअल टूरिज्म लेंस में इस बात पर भी जोर दिया गया कि खुदरा श्रृंखलाएं भारत के 14 प्रमुख शहरों में आध्यात्मिक पर्यटन में वृद्धि का लाभ उठा रही हैं। रिपोर्ट में अमृतसर, अजमेर, वाराणसी, कटरा, सोमनाथ, शिरडी, अयोध्या, पुरी, तिरुपति, मथुरा, द्वारका, बोधगया, गुरुवायुर और मदुरै को इस खुदरा उछाल के प्रमुख शहरों के रूप में पहचाना गया है। सीबीआरई के अनुसार, खुदरा ब्रांड बढ़ती पर्यटक आबादी की मांग को पूरा करने के लिए स्थापित मॉल समूहों और हाई-स्ट्रीट स्थानों दोनों में रणनीतिक रूप से पेशकश कर रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया कि अयोध्या में मान्यवर, रिलायंस ट्रेंड्स, रेमंड्स, मार्केट99, पैंटालून, डोमिनोज, पिज्जा हट और रिलायंस स्मार्ट ने अपने खुदरा स्टोर खोले हैं। मान्यवर, रिलायंस ट्रेंड्स, जूडियो, पैंटालून, शॉपर्स स्टॉप, बर्गर किंग, डोमिनोज़, पिज़्ज़ा हट, मैकडॉनल्ड्स, स्पेंसर, रिलायंस स्मार्ट, क्रोमा और रिलायंस डिजिटल वाराणसी में मौजूद हैं। सीबीआरई के चेयरमैन एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (भारत, दक्षिण-पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया और अफ्रीका) अंशुमन मैगज़ीन ने कहा, भारत में आध्यात्मिक पर्यटन का तेजी से विस्तार देश के आस्था-आधारित पर्यटन बाजार के विकास को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यटन को बढ़ावा देने और तीर्थ स्थलों के बीच संपर्क में सुधार करने की सरकारी पहल इस विकास को और बढ़ावा दे रही है।

टिकट कटने के बाद बोले सपा सांसद एस.टी. हसन ने कहा: इस बार न तो चुनाव लड़ूगा, न ही प्रचार करूंगा

मुरादाबाद। मुरादाबाद लोकसभा सीट से अपना टिकट काटे जाने के बाद समाजवादी पार्टी (सपा) के मौजूदा सांसद एस.टी. हसन ने बृहस्पतिवार को कहा कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की कोई मजबूरी ही रही होगी कि उन्होंने उनका टिकट काट दिया। उन्होंने कहा कि वह इस बार न तो लोकसभा चुनाव लड़ेंगे और न ही प्रचार करेंगे। मुरादाबाद लोकसभा सीट से मंगलवार को नामांकन दाखिल कर चुके हसन ने पीटीआईभाषा से बातचीत में कहा, मैं न तो लोकसभा चुनाव **लड़ूगा**और न ही प्रचार करूंगा। इससे पहले, संवाददाताओं से बातचीत में उन्होंने कहा, अखिलेश यादव की शायद कोई मजबूरी होगी जिसके कारण उन्होंने मेरी उम्मीदवारी रद्द कर दी। आखिरी वक्त तक अखिलेश यादव चाहते थे कि मैं मुरादाबाद से ही चुनाव लडूं लेकिन पार्टी के कुछ नेताओं ने फिर से नामांकन दाखिल करने के लिए अखिलेश यादव की तरफ से भेजे गए कागजात मुझ तक नहीं पहुंचने दिए। हसन ने कहा, मैं मुरादाबाद में प्रचार नहीं करूंगा। इसके अलावा अखिलेश यादव जहां भी कहेंगे वहां प्रचार करूंगा। रामपुर में पार्टी आजम खां के सुझाए गए प्रत्याशी को उम्मीदवार नहीं बना सकी, इसलिए खां के कहने पर रुचि वीरा को मुरादाबाद से उम्मीदवार बनाया गया है। हसन ने मंगलवार को मुरादाबाद सीट से अपना नामांकन दाखिल किया था। बाद में उनका टिकट काटकर पूर्व विधायक रुचि वीरा को दिए जाने की खबर पर उनके समर्थकों ने इसका कड़ा विरोध किया था। वीरा ने बुधवार को मुरादाबाद से नामांकन दाखिल कर दिया, जिसके बाद पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी को लेकर संशय की स्थिति पैदा हो गई। हालांकि बाद में पार्टी ने वीरा को अपना अधिकृत प्रत्याशी घोषित कर स्थिति स्पष्ट कर दी। हसन 2006 से 2012 तक मुरादाबाद के महापौर रह चुके हैं। वह 2014 के लोकसभा चुनाव में सपा उम्मीदवार के रूप में मुरादाबाद से मैदान में उतरे थे लेकिन भाजपा के कुंवर सर्वेश कुमार सिंह से हार गए थे। पार्टी ने 2019 में हसन को मुरादाबाद से दोबारा अपना उम्मीदवार बनाया था और उन्होंने भाजपा के कुंवर सर्वेश कुमार सिंह को 97,878 मतों से हराकर जीत हासिल की थी।

कांग्रेस प्रत्याशी नकुल नाथ की घोषित संपत्ति करीब 700 करोड़

भोपाल। मध्यप्रदेश में छिंदवाड़ा संसदीय सीट से दोबारा चुनाव लड़ रहे कांग्रेस नेता नकुल नाथ ने करीब 700 करोड़ रुपए की संपत्ति की घोषणा की है। उनके चुनावी हलफनामे से यह जानकारी मिली। नकुल नाथ मध्यप्रदेश से कांग्रेस के इकलौते लोकसभा सदस्य हैं। नकुल नाथ उन 113 उम्मीदवारों में शामिल हैं, जिन्होंने पहले चरण के तहत 19 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन पत्र दाखिल किया है। इस चरण के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया बुधवार को समाप्त हो गई। उनके हलफनामे के मुताबिक, पिछले पांच साल में नकुल नाथ की संपत्ति 40 करोड़ रुपए बढ़ गई है। निर्वाचन आयोग को दिए अपने नवीनतम आवेदन में नकुल नाथ ने नकदी, शेयर और बॉण्ड सहित 649.51 करोड़ रुपए की चल संपत्ति और 48.07 करोड़ रुपए की अचल संपत्ति घोषित की है। गैर-लाभकारी संगठन एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के अनुसार, पूर्व मुख्यमंत्री और प्रभावशाली कांग्रेस नेता कमल नाथ के बेटे नकुल छिंदवाड़ा लोकसभा सीट से मौजूदा सांसद हैं और वर्ष 2019 में लोकसभा चुनाव जीतने वाले 475 करोड़पति नेताओं की सूची में वह शीर्ष पर थे। एडीआर के अनुसार, उद्यमी नेता ने 2019 में अपने पिता के निर्वाचन क्षेत्र छिंदवाड़ा से चुनाव लड़ने के दौरान 660 करोड़ रुपए की संपत्ति घोषित की थी। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने मध्य प्रदेश की 29 में से 28 सीट पर जीत दर्ज की थी, जबकी एक सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी नकुल नाथ ने जीत दर्ज की थी। एडीआर के अनुसार, छिंदवाड़ा से सफलतापूर्वक चुनाव लड़ने वाले कमल नाथ ने पिछले साल विधानसभा चुनाव से पहले अपने चुनावी हलफनामे में 134 करोड़ रुपए की संपत्ति घोषित की थी। नकुल नाथ अक्सर विमान का उपयोग करते हैं, लेकिन उनके हलफनामे के अनुसार उनके पास कार नहीं है। भाजपा ने नकुल नाथ के खिलाफ विवेक साहू को खड़ा किया है। कांग्रेस 1952 से छिंदवाड़ा लोकसभा सीट पर जीत का सिलसिला जारी रखे हुए है। वह सिर्फ एक बार यहां भाजपा से हारी है। इस सीट पर कमलनाथ ने रिकॉर्ड नौ बार जीत हासिल की थी। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने हाल ही में सीधी में एक चुनावी रैली में कहा था, कांग्रेस के एक बड़े नेता, एक बहुत बड़े नेता... अपने घर पर एक नहीं, दो-दो हेलीकॉप्टर रखते हैं। जब वह घर लौटते हैं, तो वह हेलीकॉप्टर को सीधे अपने घर के अंदर उतारते हैं। वह मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। भाजपा प्रत्याशी साहू ने भी जनसंपर्क के लिए हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल करने पर पूर्व मुख्यमंत्री पर निशाना साधा। स्थानीय लोगों के अनुसार, छिंदवाड़ा के शिकारपुर इलाके में स्थित कमलनाथ के आवासीय परिसर में दो हेलीपैड हैं।

झारखंड में भाजपा 13 और आजसू एक सीट पर लड़ेगी चुनाव

नई दिल्ली। आगामी लोकसभा चुनाव के लिए झारंखड में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू) के बीच सीटों का तालमेल हो गया है। भाजपा जहां राज्य की 13 सीट पर चुनाव लड़ेगी वहीं आजसू एक सीट पर अपना प्रत्याशी उतारेगी।भाजपा महासचिव अरुण सिंह ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारतीय जनता पार्टी ने झारखंड की जनता के हित में भाजपा एवं आजसू के पुराने एवं नैसर्गिक गठबंधन के तहत इस बार लोकसभा के चुनाव में झारखंड के 13 लोकसभा संसदीय क्षेत्र पर भाजपा के प्रत्याशी तथा एक संसदीय क्षेत्र गिरिडीह में आजसू पार्टी को लड़वाने का निर्णय किया है। उन्होंने कहा कि यह गठबंधन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को मजबूत करेगा। उन्होंने कहा, झारखंड के सभी 14 में से 14 संसदीय क्षेत्रों पर गठबंधन के उम्मीदवार चुनाव जीतकर 4 जून को 400 के पार लक्ष्य को हासिल करेंगे। भाजपा ने गिरिडीह को अपनी गठबंधन सहयोगी आजसू पार्टी के लिए छोड़कर 13 सीटों पर पहले ही उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। साल 2019 के चुनाव में गिरिडीह से चंद्रप्रकाश चौधरी ने जीत दर्ज की थी।झारखंड में भाजपा और आजसू का गठबंधन है। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने 11 सीट हासिल की थीं जबकि आजसू पार्टी, कांग्रेस और झामुमो ने राज्य में एक-एक सीट जीती थी।

पेज 1 का शेष

केजरीवाल की...

वह आए और कहा कि मैं दिल्ली में अपने परिवार का धर्मार्थ ट्रस्ट खोलना चाहता हूं। मैंने उनसे कहा कि जमीन हमारे अधीन नहीं आती है, यह उपराज्यपाल (एलजी) के अधीन आती है। दिल्ली के मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि मगुंटा श्रीनिवास रेड्डी ने एजेंसी को तीन बयान दिए लेकिन केवल एक पर विचार किया गया। उन्होंन कहा, ईडी की 25,000 पन्नों की रिपोर्ट में केजरीवाल के खिलाफ एकमात्र बयान क्यों शामिल किया गया है और अन्य दो बयानों पर विचार नहीं किया गया? मामले में तीनों बयानों को अदालत के संज्ञान में लाया जाना चाहिए था, ताकि वह सच्चाई का फैसला कर सके। उन्होंने कहा कि सरथ चंद्र रेड्डी, जो अपने नाम का उल्लेख करते हुए बयान देने वाले चौथे व्यक्ति थे, ने अपनी गिरफ्तारी से पहले अपने दो बयानों और गिरफ्तार होने के बाद नौ बयानों में मुख्यमंत्री के खिलाफ कुछ भी नहीं कहा। उन्होंने कहा, छह महीने तक जेल में रखे जाने के बाद, उन्होंने (सरथ चंद्र रेड्डी) आखिरकार हार मान ली और 25 अप्रैल, 2023 को एक और बयान दिया। उन्होंने मेरे खिलाफ केवल यही कहा था कि वह विजय नायर के साथ सीएम से मिलने गए थे। बृहस्पतिवार को शहर की एक अदालत में पेश किए जाने से कुछ मिनट पहले केजरीवाल से सक्सेना के बयान के बारे में पूछा गया। मुख्यमंत्री ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा, यह एक राजनीतिक साजिश है। जनता इसका जवाब देगी।

टिकट न मिलने...

मौत होने के मामले में बदल दिया जाएगा। अस्पताल के अधिकारियों ने शव को पुलिस को सौंप दिया जो उसे पोस्टमार्टम के लिए इंस्टीट्यूट ऑफ रोड ट्रांसपोर्ट (आईआरटी) मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले गई। पार्टी के सूत्रों ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद उनके शव को यहां से 15 किलोमीटर दूर कुमारवलासु गांव ले जाया जाएगा और वहीं उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। गणेशमूर्ति 2019 में सांसद चुने गए थे। उन्होंने इससे पहले 1998 में पलानी और 2009 में इरोड से लोकसभा चुनाव जीता था। गणेशमूर्ति के परिवार में एक बेटा और एक बेटी है। वाइको ने कोयंबटूर में संवाददाताओं से कहा, वह एक साहसी और दृढ़निश्चई नेता थे। इस बात में रत्ती भर की भी सच्चाई नहीं है कि गणेशमूर्ति ने दोबारा लोकसभा चुनाव का टिकट न मिलने पर आत्महत्या की कोशिश की। चेन्नई में अपने कॉलेज के दिनों के दौरान दिवंगत नेता के साथ बिताए गए पलों को याद करते हुए वाइको ने कहा कि दोनों ने पार्टी (तत्कालीन द्रमुक) को विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत की थी।

खत्म हुआ...

उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने कहा, "कानून-व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए पूरे राज्य में धारा-144 लागू कर दी गई है। हम स्थिति पर करीब से नजर रख रहे हैं। इसके अलावा बांदा, मऊ, गाजीपुर और वाराणसी जिलों में फोर्स की विशेष तैनाती की गई है। महानिदेशक ने कहाकि इन जिलों में स्थानीय पुलिस के साथ केंद्रीय अनुसंधान पुलिस बलों की टीम तैनात की जा चुकी हैं। जमीनी स्तर पर स्थिति को नियंत्रित करने के अलावा ऑनलाइन माध्यमों पर नजर रखने के लिए उत्तर प्रदेश पुलिस के सोशल मीडिया प्रकोष्ठ को सक्रिय कर दिया गया है।

भारत-चीन....

सिद्धांतों का सख्ती से पालन करने, जमीन पर स्थिति को भड़कने से रोकने और सुरक्षा के लिए पिछले विघटनकारी ताकतों को रोकने पर सहमति व्यक्त की। चीनी विदेश मंत्रालय ने बयान में कहा, सीमा क्षेत्र में शांति बनी रहे। पैंगोंग झील क्षेत्र में हिंसक झड़प के बाद 5 मई, 2020 को पूर्वी लद्दाख सीमा पर गतिरोध पैदा हो गया था। जून 2020 में गलवान घाटी में झड़प के बाद दोनों देशों के बीच संबंध में गिरावट आई, जो कई दशकों में दोनों पक्षों के बीच सबसे गंभीर सैन्य संघर्ष था। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने 11 मार्च को नई दिल्ली में एक कार्यक्रम में कहा था कि भारत इस मुद्दे पर निष्पक्ष और उचित परिणाम खोजने के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन ऐसा जो समझौतों का सम्मान करता हो और वास्तविक नियंत्रण रेखा को मान्यता देता हो। उन्होंने यह भी कहा, मुझे लगता है कि यह हमारे साझा हित में है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर हमारे पास इतनी अधिक सेनाएं नहीं होनी चाहिए। जयशंकर ने यह भी कहा कि पिछले चार वर्षों के दौरान हमने देखा है कि यह तनाव दोनों के लिए अच्छा नहीं रहा है।

भाजपा से....

हूं और मेरे दरवाजे आपके लिए हमेशा पहले जैसे ही खुले रहेंगे। मैं राजनीति में आम आदमी की आवाज उठाने आया था और आज आपसे यही आशीर्वाद मांगता हूं कि सदैव यह कार्य करता रहूं। भले ही उसकी कोई भी कीमत चुकानी पड़े। तीन दशक में पहली बार मेनका गांधी और उनके पुत्र वरुण गांधी दोनों ही पीलीभीत सीट के लिए चुनाव मैदान में नहीं हैं। नेपाल से लगने वाली तराई पट्टी पर स्थित पीलीभीत से इस बार वरुण को टिकट न मिलना आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि किसानों, स्वास्थ्य, रोजगार जैसे मुद्दों को लेकर वह कई बार भाजपा की आलोचना कर चुके हैं। वरुण की मां मेनका सुलतानपुर संसदीय सीट का प्रतिनिधित्व कर रही हैं और भाजपा ने इसी सीट से उन्हें दोबारा टिकट दिया है। पीलीभीत सीट का प्रतिनिधित्व 1996 से मेनका गांधी या उनके पुत्र वरुण करते रहे हैं। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के चचेरे भाई वरुण गांधी वर्ष 2009 में तथा 2019 में पीलीभीत से भाजपा के सांसद चुने गए थे। वरुण की मां मेनका गांधी ने वर्ष 1989 में जनता दल की उम्मीदवार के रूप में पीलीभीत सीट जीती थी। उन्हें 1991 में पराजय मिली थी लेकिन 1996 में उन्होंने इस सीट से एक बार फिर जीत हासिल की थी। उन्होंने 1998 और 1999 में एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में पीलीभीत से जीत हासिल की थी। मेनका बाद में 2004 और 2014 में भाजपा उम्मीदवार के रूप में पीलीभीत से सांसद बनीं। वरुण गांधी 2009 और 2019 में भाजपा के टिकट पर पीलीभीत से सांसद बने थे।

इलेक्शन किंग....

उनके कागजात जांच के दौरान खारिज कर दिए गए क्योंकि उनके नाम का प्रस्ताव करने के लिए कोई सांसद नहीं थे। यह अकारण नहीं है कि पद्मराजन नामांकन दाखिल करते हैं और चुनाव में हार जाते हैं। उन्होंने बताया, यह मेरी वजह से है कि चुनाव आयोग ने चुनाव प्रचार के दौरान किसी स्वतंत्र उम्मीदवार की मृत्यु या हत्या होने पर चुनाव स्थगित करने का प्रावधान पेश किया। तब तक चुनाव तभी रद्द किये जाते थे जब उम्मीदवार मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों से हो। 1996 के आम चुनाव में पद्मराजन ने देश के पांच राज्यों में फैले पांच लोकसभा क्षेत्रों और तीन विधानसभा क्षेत्रों से नामांकन पत्र दाखिल करके एक तरह का रिकॉर्ड बनाया। पद्मराजन ने हंसते हुए कहा, इससे चुनाव आयोग को उन राज्यों की संख्या सीमित करने के लिए एक कानून बनाना पड़ा जहां से एक उम्मीदवार चुनाव लड़ सकता है। उनका एकमात्र जुनून यह है कि वह नामांकन पत्र दाखिल करने वाले पहले उम्मीदवार बनना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 1997 में मैं राष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने के लिए लोकसभा महासचिव के कार्यालय में गया था। अधिकारियों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि उस दिन नामांकन पत्र दाखिल करना शुरू हो जाता है, जब मैंने उन्हें बताया कि मैं राष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने आया हूं, तो वे हैरान रह गये. कार्यालय के रिकॉर्ड की जाँच करने के बाद ही उन्हें उस दिन के महत्व के बारे में पता चला। उनके त्रिशूर या धर्मपुरी में प्रचार करने की संभावना नहीं है। लेकिन उनका नाम ईवीएम में है और उनकी अदृश्य छवि पूरे रिटर्निंग अधिकारियों के कार्यालय में घूम रही है। 6 राष्ट्रपति और 6 उपराष्ट्रपति चुनावों के अलावा, पद्मराजन ने 32 लोकसभा चुनाव (त्रिशूर और धर्मपुरी को छोड़कर), 51 राज्यसभा चुनाव, 76 विधानसभा चुनाव, चार एमएलसी चुनाव और एक मेयर चुनाव लड़ा है। उन्होंने नगरपालिका अध्यक्ष पद और जिला परिषदों के लिए भी चुनाव लड़ा है। पद्मराजन ने पी वी नरसिम्हा राव, एबी वाजपेयी, मनमोहन सिंह और नरेंद्र मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ा है। जो लोग अपनी मूल पार्टी से टिकट नहीं मिलने पर अपनी पार्टियां छोड़ देते हैं और वफादारी बदल लेते हैं, उन्हें इस मृदुभाषी व्यक्ति, एक सच्चे गांधीवादी से सीख लेनी चाहिए।

दिव्यांगों के अनुकूल बुनियादी ढांचा विकसित हो : मुर्मू

- इंजीनियरिंग सेवा अधिकारियों से की अपील -किफायती ऊर्जा खपत वाले उपकरण पर दें जोर

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को इंजीनियरिंग सेवा अधिकारियों के एक समूह से किफायती ऊर्जा खपत वाला और दिव्यांगों के अनुकूल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा विकसित करने को कहा। मुर्मू ने अभियंताओं से अपने दृष्टिकोण में नवीनता लाने को भी कहा ताकि वे उभरती चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपट सकें। राष्ट्रपति केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (2022 और 2023 बैच) के सहायक कार्यकारी अभियंताओं (सिविल, इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल) के एक समूह को संबोधित कर रही थीं। इन अभियंताओं ने यहां राष्ट्रपति भवन में मुर्मू से मुलाकात की थी। उन्होंने युवा अधिकारियों से सामाजिक विवेक के साथ अभियंत्रण का अभ्यास करने को कहा। मुर्मू ने कहा, यह सुनिश्चित करना आपका कर्तव्य है कि आपके द्वारा डिजाइन किए गए सार्वजनिक बुनियादी ढांचे दिव्यांगों और वरिष्ठ नागरिकों के इस्तेमाल के लिए सुगम होना चाहिए, चाहे वह कार्यालय हो, आवास या सड़क हो। यह पहलू परियोजनाओं की योजना और कार्यान्वयन का अभिन्न अंग बनना चाहिए। राष्ट्रपति ने कहा, आपके द्वारा बनाई जाने वाली इमारतें, सड़कें और अन्य बुनियादी ढांचे टिकाऊ किफायती ऊर्जा खपत वाले और पर्यावरण के अनुकूल होने चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया, आपको अपने दृष्टिकोण में नवोन्मेषी होना चाहिए ताकि आप उभरती चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपट सकें। मुर्मू ने कहा कि थ्री-डी प्रिंटिंग के युग में भवन निर्माण तकनीक में व्यापक बदलाव आया है। उन्होंने कहा, बुनियादी ढांचे और निर्माण परियोजनाओं को अब जलवायु-अनुकूल और ऊर्जा खपत की दृष्टि से किफायती बनाया जा सकता है। मुर्मू ने कहा कि हरित निर्माण समय की मांग है। राष्ट्रपति ने कहा, निर्माण के नवीन तरीकों में इस क्षेत्र में बदलाव की क्षमता है। मुर्मू ने इंजीनियरिंग सेवा में बहुत कम महिलाओं के शामिल होने के कारणों की जांच का भी सुझाव दिया। मैं निर्णयकर्ताओं के विचारार्थ एक बिंदु छोड़ना चाहूंगी। मुझे बताया गया है कि इस सेवा में बहुत कम महिलाएं आती हैं। इस साल (महिलाओं का) कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। आपको न केवल निर्माण प्रक्रिया में तेजी लानी होगी, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होगा कि महत्तम संसाधनों का इस्तेमाल करके कचरे को कम किया जा सके। कृत्रिम मेधा, मशीन लर्निंग, रोबोट, ड्रोन जैसी नई और उभरती प्रौद्योगिकियां पारंपरिक सोच को बाधित कर रही हैं।

दूसरों को धमकाना और धौंस दिखाना कांग्रेस की पुरानी संस्कृति : मोदी

भाषा। नई दिल्ली

वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा समेत कुछ अन्य वकीलों की ओर से प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ को पत्र लिखकर न्यायपालिका पर दबाव डालने और अदालतों को बदनाम करने के प्रयास के आरोप लगाए जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को कांग्रेस पर निशाना साधा और दावा किया कि दूसरों को धमकाना और धौंस दिखाना विपक्षी पार्टी की पुरानी संस्कृति है। प्रधान न्यायाधीश को लिखे गए पत्र में आरोप लगाया है कि एक निहित स्वार्थी समूह बेकार के तर्कों और घिसे-पिटे राजनीतिक एजेंडा के आधार पर न्यायपालिका पर दबाव डालने और अदालतों को बदनाम करने का प्रयास कर रहा है। इस पत्र की प्रति के साथ एक्स पर की गई एक पोस्ट को टैग करते हुए प्रधानमंत्री ने लिखा, दूसरों को धमकाना और धौंस दिखाना कांग्रेस की पुरानी संस्कृति है। पांच दशक पहले ही उसने एक प्रतिबद्ध न्यायपालिका का आह्वान किया था। वे बेशर्मी से अपने स्वार्थी हितों के लिए दूसरों से प्रतिबद्धता चाहते हैं लेकिन राष्ट्र के प्रति किसी भी प्रतिबद्धता से दूर रहते हैं। उन्होंने दावा किया, कोई आश्चर्य नहीं कि 140 करोड़ भारतीय उन्हें खारिज कर रहे हैं। आधिकारिक सूत्रों द्वारा साझा किए गए पत्र में बिना नाम लिए वकीलों के एक वर्ग पर निशाना साधा गया है और आरोप लगाया गया है कि वे दिन में राजनेताओं का बचाव करते हैं और फिर रात में मीडिया के माध्यम से न्यायाधीशों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं।

एक अप्रैल को 2000 का नोट बदलने, जमा करने की सुविधा नहीं: रिजर्व बैंक

भाषा। मुंबई

बैंकों में वार्षिक लेखाबंदी से जुड़े कार्यों के कारण 2000 रुपए के बैंक नोट को बदलने या जमा करने की सुविधा एक अप्रैल, 2024 यानी सोमवार को उपलब्ध नहीं होगी। आरबीआई ने बृहस्पतिवार को बयान में कहा कि अगले दिन मंगलवार को यह सुविधा केंद्रीय बैंक के 19 क्षेत्रीय कार्यालयों में बहाल हो जाएगी।आरबीआई ने कहा, वार्षिक लेखाबंदी से जुड़े कार्यों के कारण भारतीय रिजर्व बैंक के 19 क्षेत्रीय कार्यालयों में 2000 रुपए के बैंक नोटों के विनिमयाजमा की सुविधा एक अप्रैल, 2024 दिन सोमवार को उपलब्ध नहीं होगी। आरबीआई ने 19 मई, 2023 को 2000 रुपए के नोट को वापस लेने की घोषणा की थी।बैंक ने बताया कि 29 फरवरी को कारोबारी घंटों की समाप्ति तक 2000 रुपए के लगभग 97.62 प्रतिशत नोट बैंकिंग तंत्र में वापस आ चुके हैं और सिर्फ 8,470 करोड़ रुपए के नोट अब भी जनता के पास हैं।

मणिपुर सरकार ने ईस्टर को कार्यदिवस घोषित करने का आदेश वापस लिया

इंफाल। मणिपुर सरकार ने 31 मार्च यानी ईस्टर रविवार को कार्य दिवस के रूप में घोषित करने के अपने एक दिन पुराने आदेश को बृहस्पतिवार को वापस ले लिया। ईसाई समुदाय के विरोध के बाद आदेश वापस लिया गया है। दुनिया भर में ईसाई ईस्टर त्योहार मनाते है, जो ईशु मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने के तीसरे दिन उनके पुनर्जीवित होने का प्रतीक है। राज्य सरकार ने बुधवार को एक अधिसूचना में कहा था कि वित्तीय वर्ष के आखिरी कुछ दिनों में शनिवार और रविवार होने के बावजूद कार्यालयों के सुचारू कामकाज के मद्देनजर 30 और 31 मार्च को सरकारी विभागों में कार्य दिवस होंगे। शासन ने बृहस्पतिवार को अपने इस आदेश में संशोधन किया।

देश को जोड़ेगा टाटा नमक

टाटानगर। भारत के आयोडीन युक्त नमक के अग्रणी ब्रांड, टाटा साल्ट ने अपनी मशहूर जिंगल, नमक हो टाटा का, टाटा नमक के साथ एक अनूठा अभियान शुरू किया है। विभिन्न मीडिया प्लेटफार्म पर शुरू किया, यह अभियान देश का नमक के रूप में ब्रांड की सर्वव्यापकता का प्रदर्शन करता है, और नये और युवा भारत की नब्ज पर भी हाथ रखता है। नमक हो टाटा का, टाटा नमक जिंगल का नया रूप उपभोक्ताओं को आश्चर्यचकित और खुश करेगा,यह देश भर में हर घर में अपनी स्थायी उपस्थिति को नए परिप्रेक्ष्य में पेश करता है। दीपिका भान, अध्यक्ष, टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स ने कहा, टाटा साल्ट भारत के सबसे भरोसेमंद और जिम्मेदार ब्रांडों में से एक है। समय के साथ देश का नमक की अपील, उपभोक्ताओं के साथ और मजबूत हुई है।

बिजली बिल कम करने को हो रहे नए इनोवेशन

कानपुर। इवास इलेक्ट्रिकल्स ने अपना लेटेस्ट इनोवेशन - मैग्नस बीएलडीसी फैन रेंज लॉन्च किया है। यह अत्याधुनिक सीरीज भारत में पहली बार फोटॉन ऑर्ब सीव (पीओएस) तकनीक पेश करती है, जो सीलिंग पंखों में एक नया मानक स्थापित करती है। बेहतरीन एयर-डिलिवरी की क्षमता और एनर्जी की बचत करने वाली 32वाट ब्रशलेस डायरेक्ट करंट मोटर डिजाइन के साथ, मैग्नस आपके घर के अनुभव को बदल देता है। इस अवसर पर इवास इलेक्ट्रिकल्स के प्रेसिडेंट, रोहित माथुर ने कहा कि यह इनोवेशन के प्रति हमारे समर्पण का एक सच्चा उदाहरण है। पीओएस टेक्नोलॉजी का एकीकरण सिर्फ एक सुविधा नहीं है, बल्कि यह हमारे ग्राहकों को कूलिंग समाधान से भी कुछ अधिक प्रदान करने की हमारी सोच का प्रमाण है।

मैकेनिकों को सशक्त और जागरूक बनाने पर जोर

आगरा। एसकेएफ इंडिया ने व्यापक राष्ट्रव्यापी ट्रक एक्टिवेशन अभियान, इंस्टॉल कॉन्फिडेंस, इंस्टॉल एसकेएफ शुरू करने की घोषणा की है, जो विशेष रूप से व्यावसायिक वाहनों के मैकेनिकों के लिए तैयार किया गया है। यह ट्रक 30 मार्च से 8 अप्रैल के बीच उत्तर प्रदेश के आगरा, लखनऊ, गोरखपुर और वाराणसी जैसे शहरों में आगमन करेगा और वहाँ की मैकेनिक कम्युनिटी को जागरूक करेगा। एसकेएफ ऑटोमोटिव इंडिया और दक्षिण पूर्व एशिया के निदेशक अलगेसन थसारी का कहना है- एसकेएफ में, हम उन उद्योगों के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं, जिस समाज का हम हिस्सा हैं, और जिस ग्रह पर हम सभी निवास करते हैं।

दक्षिण मुंबई के कई इलाकों में बिजली आपूर्ति ठप

मुंबई। बिजली गुल होने के कारण बृहस्पतिवार रात को दक्षिण मुंबई के कई इलाके अंधेरे में डूब गए। अधिकारियों ने कहा कि बिजली पारेषण मे बाधा के कारण महापालिका मार्ग, मरीन लाइन्स और क्रॉफर्ड मार्केट जैसे इलाकों में रात करीब 8:35 बजे बिजली गुल हो गई।

भारत की सीमाएं पूरी तरह सुरक्षित : राजनाथ सिंह

भाषा। नई दिल्ली

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत की सीमाएं पूरी तरह से सुरक्षित हैं और देश के लोगों को सशस्त्र बलों पर पूरा भरोसा होना चाहिए। एक समिट के समापन दिवस पर बातचीत के दौरान अग्निवीर योजना की आलोचना को लेकर एक सवाल पर मंत्री ने कहा कि ऐसे सवालों का कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने कहा कि हर कोई मानता है कि सशस्त्र बलों का युवा स्वरूप होना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री ने लगभग 50 साल लंबे अपने राजनीतिक सफर के किस्से भी साझा किए। यह पूछे जाने पर कि भारत-चीन सीमा मुद्दे पर विपक्षी दलों सहित कई लोगों द्वारा उठाए गए सवालों पर उन्होंने क्या प्रतिक्रिया दी, सिंह ने कहा कि वे कभी उनसे परेशान नहीं हुए। सिंह ने कहा, देश के हितों को ध्यान में रखते हुए, मैं उन्हें (विपक्षी दलों को) जो कुछ भी बता सकता हूं, बताता हूं। लेकिन रक्षा क्षेत्र में कई चीजें हैं जिनका रणनीतिक महत्व है और हम उन्हें सार्वजनिक रूप से नहीं बता सकते। हम उन चीजों को बताने से बचने की कोशिश करते हैं, चाहे वह उत्तरी, पश्चिमी या पूर्वी क्षेत्र (के बारे में) हो या कुछ और। रक्षा मंत्री ने कहा, मैं देश के लोगों को आश्वस्त करना चाहता हूं...उन्हें हमारी सेना और सुरक्षा कर्मियों पर पूरा भरोसा होना चाहिए। पूर्वी लद्दाख में कुछ स्थानों पर भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच साढ़े तीन साल से अधिक समय से गतिरोध है। वहीं, दोनों पक्षों ने व्यापक राजनयिक और सैन्य वार्ता के बाद कई क्षेत्रों से सैनिकों की वापसी की प्रक्रिया पूरी कर ली है। सिंह ने कहा, पांच साल तक रक्षा मंत्री और उससे पहले गृह मंत्री रहने के दौरान, मैंने जो देखा, समझा और आकलन किया, उसके आधार पर मैं देश के लोगों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हमारी सीमाएं और हमारा देश पूरी तरह से सुरक्षित है। पैंगोंग झील क्षेत्र में हिंसक झड़प के बाद पांच मई, 2020 को पूर्वी लद्दाख सीमा पर गतिरोध पैदा हो गया। जून 2020 में गलवान घाटी में हुई भीषण झड़प के बाद भारत और चीन के बीच संबंधों में तनाव उत्पन्न हो गया। गलवान घाटी की झड़प पिछले कुछ दशकों में दोनों पक्षों के बीच सबसे गंभीर सैन्य संघर्ष था। कई दौर की सैन्य और राजनयिक वार्ता के बाद दोनों पक्षों ने 2021 में पैंगोंग झील के उत्तरी और दक्षिणी हिस्से और गोगरा क्षेत्र से सैनिकों की वापसी की प्रक्रिया पूरी की। सिंह ने अग्निवीर योजना का बचाव करते हुए कहा कि युवाओं की भर्ती से जोखिम लेने की भावना बढ़ेगी और तकनीक-कुशल सशस्त्र बल तैयार होंगे।

गलत काम करने वालों को कीमत चुकानी होगी : पीयूष गोयल

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने बृहस्पतिवार को इस आरोप को खारिज कर दिया कि सरकार विपक्षी नेताओं को निशाना बना रही है। इसके साथ ही उन्होंने जोर दिया कि जिन लोगों ने गलत काम किया है उन्हें अपनी करनी की कीमत चुकानी होगी।उन्होने कहा कि जांच एजेंसी - केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) - अपना काम करेंगे और उन लोगों को माफ करने का कोई सवाल ही नही है, जिन्होंने गलत काम किया है।गोयल सरकार द्वारा विपक्षी नेताओ के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियो का उपयोग करने और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने वालो को छूट देने से जुड़े सवालो का जवाब दे रहे थे। उन्होने यहा एक समिट 2024 मे कहा,हमें भारत को भ्रष्टाचार-मुक्त बनाना है। वे (विपक्ष) अपने भ्रष्टाचार को बचाना चाहते है और हमें उसे जड़ से मिटाना है... उन्होंने जो भी गलतियां की है, उन्हें उनकी सजा भुगतनी होगी और कानून आपको पकड़ेगा, कानून उन लोगों को पकड़ रहा है जिन्होने गड़बड़ियां की है। विपक्षी दलों के गठबंधन इंडिया के नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही मे निर्वाचन आयोग से संपर्क कर आरोप लगाया कि विपक्षी दलो को दबाने के लिए सत्तारूढ़ भाजपा द्वारा केंद्रीय एजेंसी का उपयोग किया जा रहा है।

क्विक न्यूज

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान की पत्नी ने बेटी को जन्म दिया

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान की पत्नी गुरप्रीत कौर ने बृहस्पतिवार को एक बेटी को जन्म दिया है। मान ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट साझा कर यह जानकारी दी है। उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा, भगवान ने मुझे उपहार में एक बिटिया दी। मां और बेटी दोनों स्वस्थ है। मुख्यमंत्री ने एक अन्य पोस्ट में अपनी नवजात बेटी की तस्वीर साझा की। सूत्रों ने बताया कि बेटी का जन्म मोहाली के एक निजी अस्पताल मे हुआ। मान ने साल 2015 में अपनी पहली पत्नी से अलग होने के बाद 2022 मे गुरप्रीत कौर से शादी की थी। मान की पहली शादी से एक बेटी और एक बेटा है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल समेत विभिन्न लोगों ने मान और उनकी पत्नी को बधाई दी है। दिल्ली की राउज एवेन्यू अदालत से निकलते समय केजरीवाल ने मान को बेटी के जन्म की बधाई दी। ईडी ने आबकारी नीति मामले में केजरीवाल को राउज एवेन्यू अदालत में पेश किया था। केजरीवाल ने अदालत के बाहर पत्रकारों से कहा, मान साहब के बेटी हुई है, बहुत-बहुत शुभकामनाएं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पंजाब इकाई के प्रमुख सुनील जाखड़ ने भी मान परिवार को बधाई दी। मान के कैबिनेट सहयोगियो हरपाल सिंह चीमा, अमन अरोड़ा और अनमोल गगन मान ने भी उन्हें बधाई दी।

अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड के जिलों में अफ्स्पा छह महीने के लिए बढ़ाया गया

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अरुणाचल प्रदेश के तीन जिलो और नगालैंड के आठ जिलो तथा कुछ अन्य क्षेत्रो मे सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम (अफ्स्पा) की अवधि छह और महीने के लिए बढ़ा दी है। मंत्रालय ने इन दोनों पूर्वोत्तर राज्यो में कानून व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा के बाद यह निर्णय लिया। अफ्स्पा अशांत क्षेत्रो मे काम करने वाले सशस्त्र बलो के कर्मियो को सार्वजनिक व्यवस्था के रखरखाव के लिए आवश्यक समझे जाने पर तलाशी लेने, गिरफ्तार करने और गोली चलाने की व्यापक शक्तियां प्रदान करता है। सशस्त्र बलों के अभियानो को सुविधाजनक बनाने के लिए अफ्स्पा के तहत किसी क्षेत्र या जिले को अशांत क्षेत्र के रूप मे घोषित किया जाता है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक अधिसूचना मे कहा कि केंद्र सरकार ने सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम, 1958 की धारा-3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए अरुणाचल प्रदेश में तिरप, चांगलांग और लोंगडिंग जिलो तथा अरुणाचल प्रदेश के नामसाई जिले मे नामसाई, महादेवपुर और चौखम पुलिस थानाक्षेत्रों में आने वाले इलाके को एक अप्रैल 2024 से छह माह की अवधि के लिए अशांत क्षेत्र के रूप मे घोषित किया गया है। मंत्रालय ने एक अन्य अधिसूचना मे कहा कि केंद्र सरकार ने कानून व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा के बाद नगालैंड के आठ जिलों - दिमापुर, नीयूलैंड, चुमौकेदिमा, मोन, किफिरे, नोक्लाक, फेक और पेरेन - में छह और महीने के लिए अफ्स्पा को बढ़ाने का निर्णय लिया है। इसके अलावा राज्य के 21 पुलिस थानाक्षेत्रों के तहत आने वाले इलाकों को भी छह माह की अवधि के लिए अशांत क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया है।

रणबीर कपूर बने ब्रैंड एंबेसडर,करेंगे जागरुक

मुंबई। एशियन ग्रेनिटो इंडिया लिमिटेड (एजीएल) बॉलीवुड हार्टथ्रोब रणबीर कपूर को अपने ब्रांड एंबेसडर के रूप में साइन करने की गर्व से घोषणा करता है। अपने आकर्षण, बहुमुखी प्रतिभा और युवापन के लिए पहचाने जाने वाले रणबीर कपूर पूरी तरह से इनोवेटिव, डायनेमिक और लगातार विकसित होने वाली एशियन ग्रेनिटो की भावना का प्रतीक हैं। वर्षों की उत्कृष्टता के आधार पर बनाई गई एक मजबूत और अटल प्रतिष्ठा के साथ, एशियन ग्रेनिटो इंडिया लिमिटेड सीमाओं को पार करके और उद्योग में नए स्टान्डर्ड्स स्थापित करना जारी रखती है। रणबीर कपूर के साथ ब्रांड का लक्ष्य बाजार में अपनी उपस्थिति को और बढ़ाना और व्यापक दर्शकों, विशेषकर युवा वर्ग से जुड़ना है। एशियन ग्रेनिटो इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, कमलेश पटेल ने बताया कि, हमें एशियन ग्रेनिटो परिवार में रणबीर कपूर का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। उनका करिश्मा और अपील हमारे ब्रांड मूल्यों के साथ गहराई से मेल खाते है और हम इस यात्रा को एक साथ शुरू करने के लिए उत्साहित है।

यात्रियों को भी लाभ देगा बीमा

मुंबई। अग्रणी सामान्य बीमा प्रदाता, टाटा एआईजी जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने एक व्यापक यात्रा बीमा उत्पाद ट्रैवल गार्ड प्लस लॉन्च किया है, जो कई किस्म की बंडल योजनाओं के साथ यात्रियों के लिए पूर्ण कवरेज को पुनर्परिभाषित करता है। टाटा एआईजी के ट्रैवल गार्ड प्लस को योजनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ लोगों की विविध यात्रा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है, जहां ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए 41 विभिन्न प्रकार के कवर शामिल किया गया है। टाटा एआईजी का ट्रैवल गार्ड प्लस कई प्रकार की स्थितियों के लिए कवरेज प्रदान करता है, जिसमें व्यक्तिगत सामान खोना, कम्पैशनेट ट्रैवल/स्टे, एकोमोडेशन एक्सटेंशन, बिजनेस क्लास में अपग्रेड करना, भारत में व्यक्तिगत दुर्घटना और इंस्टेंट ग्रेटिफिकेशन शामिल है। टाटा एआईजी जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष एवं मुख्य परिचालन अधिकारी, सौरव जयसवाल ने कहा, टाटा एआईजी को ट्रैवल गार्ड प्लस के लॉन्च की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है, जिससे सर्वव्यापी बीमा समाधान प्रदान कर अपने ग्राहकों की जरूरतों के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता जाहिर होती है। हमारी ट्रैवल गार्ड प्लस पॉलिसी के साथ, यात्री आश्वस्त होकर अपनी यात्रा पर निकल सकते हैं क्योंकि उनके पास अप्रत्याशित परिस्थितियों के खिलाफ सुरक्षा कवच है।

सिट्रोएन बैसाल्ट जैसी मजबूती पर देगा ध्यान

चेन्नई। सिट्रोएन बैसाल्ट विजन का नया एसयूवी कॉन्सेप्ट भारत और दक्षिण अमेरिका में 2024 की दूसरी छमाही में ब्रांड की श्रृंखला का हिस्सा बनेगा। यह शक्तिशाली और स्टाईलिश नया मॉडल अनेक ऑटोमोटिव कोड्स के मिश्रण द्वारा ग्राहकों को सर्वश्रेष्ठ अनुभव प्रदान करेगा। इसमें कूपे की फ्लुडिटी और डायनामिज़्म के साथ ऊँची एसयूवी की मजबूती है, जो 5-डोर सलून के बेहतरीन संतुलन और स्पेस के साथ दी गई है। हर क्षेत्र के मुख्यालय में काम करने वाली टीमों को शामिल करके विकसित की गई और स्थानीय अनुभव की मदद से बनाई गई बैसाल्ट अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुख्य बाजारों में सी3 और सी3 एयरक्रॉस के साथ सिट्रोएन की वृद्धि में मदद करेगी। सिट्रोएन के सीईओ, थिएरी कोस्कस ने कहा, हमें सिट्रोएन की अंतर्राष्ट्रीय वृद्धि के लिए डिजाईन किए गए इस कार्यकम के तीसरे मॉडल का अनावरण करने की खुशी है। आने वाले महीनों में स्थानीय टीमें एसयूवी कूपे का यह इनोवेटिव कॉन्सेप्ट पेश करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो बोल्ड डिजाईन, स्पेस और अद्वितीय कम्फर्ट प्रदान करेगा।

श्रावस्ती में बच्चों के कुपोषण में आई कमी

श्रावस्ती। उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जिले में कुपोषण से लड़ने में बड़ी सफलता मिली है। बाल कल्याण के क्षेत्र में प्रयासरत संगठन बाल रक्षा भारत की पहल से क्षेत्र में बच्चों के पोषण की स्थिति में सुधार आया है। बाल रक्षा भारत ने यहां की 167 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, आशा संगिनियों और एएनएम को पोषण ट्रैकर व ई.कवच एप्लिकेशन का प्रयोग करने और ट्रिपल बर्डन केस ऑफ मालन्यूट्रिशन टीबीएमकी रिपोर्टिंग एवं उनके दस्तावेजीकरण को लेकर प्रशिक्षित किया है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप सीवियर एक्यूट मालन्यूट्रिशन और मॉडरेट एक्यूट मालन्यूट्रिशन के मामलों में उल्लेखनीय कमी आई है। यहां जून 2023 में इफिशिएंसी ऑफन्यूट्रिशन रेट 92.77 प्रतिशत था, जो जनवरी 2024 में 98.11 प्रतिशत पर पहुंच गया।

एनआईए ने रामेश्वरम कैफे विस्फोट मामले में मुख्य साजिशकर्ता को गिरफ्तार किया

भाषा। नई दिल्ली

एक बड़ी सफलता के तहत राष्ट्रीय अन्वेषण एजेंसी (एनआईए) ने बेंगलुरु के रामेश्वरम कैफे विस्फोट मामले के एक मुख्य षड्यंत्रकर्ता को गिरफ्तार किया है। एक आधिकारिक बयान में बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी गई। इसमें कहा गया है कि एनआईए की कई टीम द्वारा 18 स्थानों कर्नाटक में 12, तमिलनाडु में पांच और उत्तर प्रदेश में एक स्थान) पर कार्वाई के बाद मुजम्मिल शरीफ को बुधवार को पकड़ा और सह-षड्यंत्रकर्ता के रूप में उसे हिरासत में ले लिया। एनआईए ने तीन मार्च को इस मामले को अपने हाथ में लिया था। एजेंसी ने इसके पहले मुख्य आरोपी के रूप में मुसाविर शाजीब हुसैन की पहचान की थी जिसने विस्फोट को अंजाम दिया था। बयान में कहा गया है कि एक अन्य षड्यंत्रकर्ता अब्दुल मथीन ताहा की भी पहचान की गई है जो अन्य मामलों में भी एजेंसी द्वारा वांछित है। इसमें कहा गया है दोनों आरोपी फिलहाल फरार हैं। एनआईए की जांच से पता चला है कि मुजम्मिल शरीफ ने एक मार्च को बेंगलुरु के आईटीपीएल रोड पर ब्रुकफील्ड स्थित कैफे में आईईडी विस्फोट से जुड़े मामले में पहचाने गए अन्य दो आरोपियों को जरूरी सहायता प्रदान की थी।

शाही परिवार ने हिंदू धर्म की रक्षा के लिए सिराजुद्दौला के खिलाफ लड़ाई लड़ी: अमृता रॉय

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में कृष्णानगर लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी की उम्मीदवार राजमाता अमृता रॉय बृहस्पतिवार को भी अपने उस रुख पर कायम रहीं कि बंगाल के तत्कालीन राजा कृष्णचंद्र रॉय ने 1757 में प्लासी की लड़ाई के दौरान अंग्रेजों का साथ दिया था, क्योंकि नवाब सिराजुद्दौला एक अत्याचारी था और उसके शासन के दौरान सनातन धर्म खतरे में था। कृष्णचंद्र रॉय के परिवार से संबद्ध एवं चुनाव में पहली बार कदम रखने वाली अमृता रॉय की इस टिप्पणी ने विवाद पैदा कर दिया है, क्योंकि तृणमूल कांग्रेस यह प्रचार कर रही है कि तत्कालीन महाराजा ने एक सैन्य जनरल मीर जाफर का पक्ष लिया था, जिसने 1757 की प्लासी की लड़ाई में सिराज को हराने में अंग्रेजों को मदद की थी और बाद में राजा बने। मृता रॉय कृष्णानगर लोकसभा सीट पर तृणमूल की उम्मीदवार महुआ मोइत्रा के खिलाफ चुनाव मैदान में हैं। उन्होंने यह भी कहा कि पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के' कुशासन और भ्रष्टाचार' ने उन्हें राजनीति में शामिल होने और राज्य के लिए विकास कार्य करने को मजबूर किया है।

नक्सल विरोधी अभियान के दौरान विस्फोटक सामग्री और माओवादी साहित्य बरामद

भाषा। गढ़चिरौली

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में नक्सलियों के साथ हुई मुठभेड़ के दौरान सुरक्षाबलों ने जिलेटिन की कई छड़ें, तार, बैटरी और माओवादी साहित्य बरामद किया है। एक अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक नीलोत्पल ने कहा कि सुरक्षाबलों को महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ सीमा पर नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद बुधवार को भुमकन गांव के पास तलाशी अभियान शुरू किया गया था। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ के कसनसुर चटगांव दलम और औंधी दलम के सशस्त्र कैडर आगामी लोकसभा चुनाव से पहले विध्वंसक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए इलाके में डेरा डाले हुए हैं। राज्य की गढ़चिरौली-चिमूर (अजजा) लोकसभा सीट पर 19 अप्रैल को पहले चरण में मतदान होगा। राज्य पुलिस के विशेष नक्सल विरोधी बल सी-60 और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के त्वरित कार्वाई दल के सुरक्षाकर्मियों ने यह अभियान चलाया था।

गोविंदा शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में शामिल

भाषा। मुंबई

नब्बे के दशक के मशहूर अभिनेता और शानदार हास्य कला व अनोखे नृत्य के लिए चर्चित गोविंदा 14 वर्ष के अंतराल के बाद बृहस्पतिवार को राजनीति में वापसी करते हुए महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ शिवसेना में शामिल हो गए। कांग्रेस के पूर्व लोकसभा सदस्य रहे गोविंदा चुनावी मौसम में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की मौजूदगी में शिवसेना में शामिल हुए। दशकों लंबे करियर में कई सुपरहिट फिल्म में अभिनय करने वाले गोविंदा ने 2004 के चुनाव में चुनावी राजनीति में धमाकेदार प्रवेश किया था। हीरो नंबर। के अभिनेता गोविंदा ने उस साल बड़ा उलटफेर करते हुए मुंबई उत्तर लोकसभा सीट पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दिग्गज नेता राम नाइक को हराया था। शिंदे ने 60 वर्षीय अभिनेता का पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि वह समाज के सभी वर्गों में लोकप्रिय हस्ती हैं। इस मौके पर गोविंदा ने कहा कि 2004 से 2009 के बीच राजनीति में उनके पहले कार्यकाल के बाद उन्हें कभी नहीं लगा था कि वह इस क्षेत्र में वापसी करेंगे। अभिनेता ने कहा, मैं 14 वर्ष के वनवास के बाद (राजनीति में) लौटा हूं। गोविंदा का पूरा नाम गोविंदा आहूजा है। उन्होंने कहा कि अगर मौका मिला तो वह कला और संस्कृति के क्षेत्र में काम करेंगे।

पीएचडी दाखिले में 2024-25 से एनईटी में अर्जित अंक का इस्तेमाल होंगे : यूजीसी

नई दिल्ली। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अनुसार राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (एनईटी) में अर्जित अंक (स्कोर) का इस्तेमाल 2024-25 से पीएचडी में दाखिले के लिए किया जाएगा, जिससे विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा अलग-अलग प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। एनईटी की परीक्षा साल में दो बार जून और दिसंबर में आयोजित की जाती है। इसमें अर्जित अंक का इस्तेमाल वर्तमान में जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) प्रदान करने और मास्टर डिग्री वाले लोगों के लिए सहायक प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति की पात्रता के लिए किया जाता है।आयोग ने परीक्षा के प्रावधानों की समीक्षा के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया था और समिति की सिफारिशों के आधार पर इसने निर्णय लिया है कि शैक्षणिक सत्र 2024-25 से एनईटी में अर्जित अंक का इस्तेमाल पीएचडी कार्यक्रमों में दाखिले के लिए किया जा सकता है। अध्यक्ष जगदीश कुमार ने कहा, शैक्षणिक सत्र 2024-2025 से शुरू होकर, देशभर के विश्वविद्यालयों को पीएचडी कार्यक्रमों में दाखिले के लिए एनईटी में अर्जित अंक का इस्तेमाल करने का मौका मिलेगा, जिससे विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा अलग-अलग प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी।

स्नातक में साझा काउंसलिंग पर विचार

नई दिल्ली। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) मेडिकल और इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों की तर्ज पर सीयूईटी अंक (स्कोर) के आधार पर स्नातक पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए एक साझा काउंसलिंग आयोजित करने पर विचार कर रहा है। सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि यूजीसी ने इस विचार पर चर्चा करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों के अधिकारियो के साथ एक समिति बनाई है और पांच विश्वविद्यालयों को प्रायोगिक आधार पर इसमें शामिल किया गया है। इस संबंध मे हालांकि स्थिति स्पष्ट नही की गई है (

मनरेगा के तहत मजदूरी में चार से 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी

भाषा। नई दिल्ली

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी (मनरेगा) योजना के तहत मजदूरी को संशोधित किया गया है और अलग अलग राज्यों में मेहनताने में चार से 10 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है।एक अधिसूचना के अनुसार, अब योजना के तहत अकुशल श्रमिकों को देश में सबसे ज्यादा 374 रुपए प्रति दिन की मजदूरी हरियाणा में मिलेगी जबकि सबसे कम मेहनताना उन्हें अरुणाचल प्रदेश और नगालैंड में मिलेगा जहां इस योजना के तहत काम करने पर मजदूरों को 234 रुपए प्रति दिन की मजदूरी मिलेगी। सिक्किम की तीन पंचायतों- ग्नथांग, लाचुंग और लाचेन में मजदूरी दर 374 रुपए प्रतिदिन है। लोकसभा चुनाव के लिए आदर्श आचार संहिता लगे होने की वजह से निर्वाचन आयोग की मंजूरी के बाद केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने योजना के तहत मिलने वाली मजदूरी में बदलाव की अधिसूचना जारी की। योजना के तहत 2023 की मजदूरी दरों पर बढ़ोतरी की गई है।

जयशंकर की मलेशिया यात्रा ने उन्नत रणनीतिक साझेदारी को और आगे बढ़ाने का अवसर दिया

भाषा। कुआलालंपुर

विदेश मंत्री एस जयशंकर की मलेशिया यात्रा और देश के शीर्ष नेताओं के साथ उनकी मुलाकात उन्नत द्विपक्षीय रणनीतिक साझेदारी को और बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराने का अवसर प्रदान करने वाली थी। बृहस्पतिवार को एक आधिकारिक बयान में यह बात कही गई।

जयशंकर सिंगापुर, फिलीपीन और मलेशिया की अपनी यात्रा के अंतिम चरण में 27 और 28 मार्च को कुआलालंपुर में थे।

भारत के विदेश मंत्रालय के बयान के अनुसार, उन्होंने मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर बिन इब्राहिम से मुलाकात की और भारत-मलेशिया उन्नत रणनीतिक साझेदारी के तहत द्विपक्षीय संबंधों को और गहन करने में उनके समर्थन के लिए आभार जताया।

इसमें कहा गया कि जयशंकर की मलेशिया यात्रा ने उन्नत रणनीतिक साझेदारी को और आगे बढ़ाने तथा मजबूत करने की प्रतिबद्धता दोहराने का अवसर प्रदान किया।

आधिकारिक बरनामा समाचार एजेंसी के अनुसार, अनवर ने मलेशिया में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) का शाखा परिसर स्थापित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

प्रधानमंत्री ने चावल की कमी का सामना कर रहे मलेशिया की मदद के लिए भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रशंसा की और भारत से कृषि उत्पादों के सुगम आयात की उम्मीद जताई।

अनवर ने आशा व्यक्त की, मलेशिया-भारत संबंध दोनों मित्रवत देशों के लोगों के फायदे के लिए फलते-फूलते रहें।

जयशंकर ने मलेशिया के विदेश मंत्री मोहम्मद बिन हाजी हसन से भी मुलाकात की और राजनीतिक, व्यापार और अर्थव्यवस्था, रक्षा, डिजिटल, सांस्कृतिक तथा शिक्षा समेत द्विपक्षीय सहयोग पर व्यापक मंथन किया।

विदेश मंत्रालय ने बताया कि दोनों विदेश मंत्रियों ने क्षेत्रीय एवं वैश्विक हित के मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया।

जयशंकर ने डिजिटल मंत्री गोबिंद सिंह देव से भी मुलाकात की।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि मलेशिया आसियान में और भारत की एक्ट ईस्ट नीति में उसका प्रमुख साझेदार है।

पाकिस्तानः नौ मई की हिंसा के मामले में सैन्य अदालतों को सशर्त फैसला सुनाने की इजाजत

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को सैन्य अदालतों को केवल नौ मई के उन संदिग्धों के मामलों में फैसला सुनाने की सशर्त इजाजत दी, जिन्हें आगामी ईद त्योहार से पहले रिहा किया जा सकता है।

यह मामला पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद पिछले साल नौ मई को देश में भड़की हिंसा के दौरान सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमलों में कथित संलिप्तता के लिए 103 नागरिकों के मुकदमे से संबंधित है।

न्यायालय की छह सदस्यीय पीठ ने 23 अक्टूबर, 2023 को हिंसा को लेकर नागरिकों के खिलाफ सैन्य अदालतों के मुकदमे को रद्द करने संबंधी अपने पूर्व के सर्वसम्मत फैसले के खिलाफ अपील पर सुनवाई की। पीठ में न्यायमूर्ति अमीनुद्दीन खान, न्यायमूर्ति मुहम्मद अली मजहर, न्यायमूर्ति सैयद अजहर हसन रिजवी, न्यायमूर्ति शाहिद वहीद, न्यायमूर्ति मुसर्त हिलाली और न्यायमूर्ति इरफान सआदत खान शामिल रहे।

न्यायमूर्ति इजाजुल अहसन, न्यायमूर्ति मुनीब अख्तर, न्यायमूर्ति याह्या अफरीदी, न्यायमूर्ति सैयद मजार अली अकबर नकवी और न्यायमूर्ति आयशा मलिक की पांच सदस्यीय पीठ ने सर्वसम्मति से फैसला सुनाया था कि सैन्य अदालतों में आरोपी नागरिकों पर मुकदमा चलाना देश के संविधान के खिलाफ है। पीठ ने यह भी कहा था कि आरोपी नागरिकों पर फौजदारी अदालतों में मुकदमा चलाया जाना चाहिए।

अदालत ने पिछले साल 13 दिसंबर को अपील पर फैसला आने तक 5-। के बहुमत से फैसले को निलंबित कर दिया। अपील तत्कालीन कार्यवाहक संघीय सरकार और बलूचिस्तान, खैबर पख्तूनख्वा और पंजाब प्रांतों के साथ-साथ रक्षा मंत्रालय द्वारा दायर की गईं थीं।

अदालत ने 25 मार्च को पिछली सुनवाई के दौरान, अधिकारियों से हिंसक घटनाओं में कथित संलिप्तता के लिए नागरिकों के सैन्य मुकदमों के बारे में विवरण प्रदान करने को कहा था। अदालत ने सभी विवरण 28 मार्च तक प्रस्तुत किए जाने के साथ यह सूचित करने का आदेश दिया था कि कितने संदिग्धों को बरी किया जा सकता है। अटॉर्नी जनरल ने अदालत को बताया कि लगभग 20 संदिग्धों को उनके मुकदमे और सेना प्रमुख द्वारा सजा में रियायत सहित अन्य औपचारिकताओं के पूरा होने के बाद रिहा किया जा सकता है।

हिंसा के मामले में खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के सैकड़ों कार्यकर्ताओं और नेताओं को गिरफ्तार किया गया था। सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमलों में कथित रूप से शामिल लोगों पर सैन्य अदालतों में मुकदमा चलाया गया।

आतंकी हमले के लिए पाक-चीन मित्रता के विरोधी जिम्मेदार : पाकिस्तान

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान ने बृहस्पतिवार को कहा कि चीन के साथ उसकी दोस्ती के शत्रु उस आतंकवादी हमले के लिए जिम्मेदार हैं जिसमें चीन के पांच नागरिकों की मौत हो गई थी।

इसके साथ ही पाकिस्तान ने आतंकवादी हमले के अपराधियों को न्याय के दायरे में लाने की प्रतिबद्धता जताई।

पाकिस्तान के अशांत पश्चिमोत्तर प्रांत खैबर-पख्तूनख्वा में मंगलवार को विस्फोटक से भरे एक वाहन ने एक बस को टक्कर मार दी, जिससे बस में सवार कम से कम पांच चीनी नागरिकों सहित छह व्यक्तियों की मौत हो गई। चीनी नागरिक दासू जलविद्युत परियोजना पर काम कर रहे थे।

विदेश कार्यालय की प्रवक्ता मुमताज जाहरा बलूच ने साप्ताहिक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पाकिस्तान इस जघन्य घटनाे के संबंध में चीन की सरकार के संपर्क में है।

उन्होंने दुश्मनों की पहचान उजागर किए बिना कहा, पाकिस्तान और चीन घनिष्ठ मित्र हैं। हमें इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं है कि यह आतंकी हमला पाकिस्तान-चीन मित्रता के दुश्मनों द्वारा किया गया था।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान आतंकवादियों और उनके मददगारों को न्याय के दायरे में लाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

मुमताज जाहरा बलूच ने कहा, इस तरह के घृणित हमले आतंकवाद से लड़ने के पाकिस्तान के संकल्प को और मजबूत बनाते हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान और चीन मिलकर आतंकवादियों के खिलाफ दृढ़ता से कार्वाई करेंगे।

विदेश कार्यालय की प्रवक्ता ने कहा, पाकिस्तान में चीनी नागरिकों, परियोजनाओं और संस्थानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पाकिस्तान अपने चीनी भाइयों के साथ मिलकर काम करता रहेगा।

हमले के बाद चीन की एक और कंपनी ने पाकिस्तान में कामकाज बंद किया

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में एक जलविद्युत परियोजना पर आत्मघाती हमले में पांच चीनी नागरिकों के मारे जाने के दो दिन बाद चीन की एक कंपनी ने इसी अशांत प्रांत में एक अन्य जलविद्युत परियोजना में निर्माण कार्य रोक दिया और सैकड़ों श्रमिकों को काम से हटा दिया है। मीडिया में बृहस्पतिवार को आई खबरों में यह जानकारी दी गई।

खैबर पख्तूनख्वा के बिशम इलाके में मंगलवार को विस्फोटक लदा एक वाहन एक बस से टकराया था जिससे उसमें सवार दासू जलविद्युत परियोजना में काम करने वाले पांच चीनी नागरिकों सहित छह व्यक्तियों की मौत हो गई।

किसी आतंकी संगठन ने आत्मघाती हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

डॉन अखबार ने सरकारी सूत्रों के हवाले से अपनी खबर में कहा कि चीनी कंपनी पावर कंस्ट्रक्शन कॉरपोरेशन ऑफ चीन (पीसीसीसी) ने शांगला जिले में आत्मघाती हमले में चीनी नागरिकों की मौत के बाद प्रांत के स्वाबी जिले में तारबेला जलविद्युत विस्तार परियोजना में निर्माण संबंधी कार्यों को निलंबित कर दिया है। यहां 2,000 से अधिक श्रमिकों को काम से हटा दिया है।

खबर के मुताबिक, कंपनी के परियोजना प्रबंधक ने एक आदेश जारी कर कार्य स्थगित किए जाने की घोषणा की और कहा कि सुरक्षा कारणों के चलते अगले आदेश तक सभी कर्मचारियों और श्रमिकों को हटाया गया है।

चीन की सेना ने अरुणाचल मुद्दे पर अमेरिका की आलोचना की

भाषा। बीजिंग

चीन की सेना ने बृहस्पतिवार को अमेरिका की आलोचना की क्योंकि उसने जोर दिया था कि अरुणाचल प्रदेश भारत का हिस्सा है। इसके साथ ही चीनी सेना ने कहा कि बातचीत एवं परामर्श के जरिए सीमा मुद्दे से ठीक से निपटने के लिए भारत और चीन के पास परिपक्व तंत्र, संवाद माध्यम, क्षमता और इच्छा है।

चीन के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता वरिष्ठ कर्नल वू कियान ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में आरोप लगाया कि अपने लाभ के लिए दो देशों के बीच विवाद भड़काने का अमेरिका का इतिहास रहा है। वह अमेरिका के उस हालिया बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे जिसमें कहा गया था कि वाशिंगटन अरुणाचल प्रदेश को भारतीय क्षेत्र के रूप में मान्यता देता है।

वू कियान ने कहा कि सीमा मुद्दों पर चीन और भारत के बीच परिपक्व तंत्र और संवाद चैनल हैं। उन्होंने कहा, दोनों पक्षों के पास बातचीत और परामर्श के जरिए सीमा मुद्दे को ठीक से संभालने की क्षमता और इच्छा है।

अमेरिकी विदेश विभाग के प्रधान उप प्रवक्ता वेदांत पटेल ने नौ मार्च को कहा था, अमेरिका अरुणाचल प्रदेश को भारतीय क्षेत्र के रूप में मान्यता देता है और हम वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सैन्य या असैन्य घुसपैठ या अतिक्रमण के माध्यम से क्षेत्रीय दावे करने के किसी भी एकपक्षीय प्रयास का कड़ा विरोध करते हैं।

वू ने कहा कि अरुणाचल प्रदेश चीन का हिस्सा है। भारत ने अरुणाचल प्रदेश पर चीन के क्षेत्रीय दावों को बार-बार खारिज किया है और कहा है कि यह राज्य देश का अभिन्न अंग है।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों के खिलाफ अपराधों को दर्ज करने के लिए डेटाबेस की शुरुआत की

भाषा। संयुक्त राष्ट्र

भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों के खिलाफ अपराधों को दर्ज करने और अपराधियों के खिलाफ कार्वाई की प्रगति की निगरानी के लिए एक नए डेटाबेस की शुरुआत की है। संयुक्त राष्ट्र में भारत की दूत रुचिरा कंबोज ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि भारत इस मामले में जवाबदेही तय करने की पुरजोर वकालत कर रहा है।

मंगलवार को डेटाबेस की शुरुआत की घोषणा भारत के नेतृत्व वाले ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स (जीओएफ) की एक उच्च-स्तरीय बैठक में की गई।

कंबोज ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, शांति सैनिकों के खिलाफ अपराधों को दर्ज करने और अपराधियों को जवाबदेह ठहराने में प्रगति की निगरानी करने के लिए तैयार एक नए डेटाबेस की शुरुआत की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। भारत जवाबदेही की वकालत करने में सबसे आगे है और इस उद्देश्य के लिए ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स (जीओएफ) का नेतृत्व कर रहा है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थाई मिशन की एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि डेटाबेस को ऑनलाइन तरीके से आंकड़े संरक्षित करने के रूप में कार्य करने के लिए तैयार किया गया है, जो सचिवालय, मिशन और सदस्य राज्यों को शांति सैनिकों के खिलाफ दुर्भावनापूर्ण कृत्यों के मामलों की निगरानी और इनका समाधान करने के लिए सशक्त बनाता है।

फलस्तीनी प्राधिकरण ने नए मंत्रिमंडल की घोषणा की

एपी। रमल्ला (वेस्ट बैंक)

शासन व्यवस्था में सुधार के लिए अंतरराष्ट्रीय दबावों के बीच फलस्तीनी प्राधिकरण ने नए मंत्रिमंडल के गठन की घोषणा की है। राष्ट्रपति महमूद अब्बास ने बृहस्पतिवार को एक आदेश में नई सरकार की घोषणा की। नए मंत्रियों में से कोई भी चर्चित चेहरा नहीं है।

अब्बास ने करीब दो दशकों तक फलस्तीनी प्राधिकरण का नेतृत्व किया है और अब भी उनका नियंत्रण कायम है।

अब्बास ने इस महीने की शुरुआत में मोहम्मद मुस्तफा को प्रधानमंत्री बनाया था। मुस्तफा अब्बास के सलाहकार रह चुके हैं। मुस्तफा विदेश मंत्री का भी पद संभालेंगे। गृह मंत्री जयाद हब अल-रिह अब्बास के फतह आंदोलन के सदस्य हैं और पिछली सरकार में उनके पास यही विभाग था। अशरफ अल-अवार यरुशलम मामलों के मंत्री होंगे।

फलस्तीन के 23 नए मंत्रियों में से कम से कम पांच गाजा से हैं, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि वे क्षेत्र में हैं या नहीं। फलस्तीनी प्राधिकरण का नियंत्रण इजराइल के कब्जे वाले वेस्ट बैंक के कुछ हिस्सों तक है।

बाल्टीमोर हादसे का प्रभाव क्षेत्र से परे पड़ने को लेकर चिंतित हैं अमेरिकी अधिकारी

भाषा। न्यूयॉर्क

अमेरिकी अधिकारियों ने बाल्टीमोर में एक मालवाहक जहाज की टक्कर लगने से अमेरिका के एक प्रमुख पुल के ढह जाने के बाद क्षेत्र से परे पड़ने वाले इस हादसे के प्रभाव के बारे में चिंता व्यक्त की है।

हालांकि विशेषज्ञों ने पूर्वानुमान व्यक्त किया है कि नतीजे मामूली और मुख्य रूप से स्थानीय रह सकते हैं।

बाल्टीमोर में पटाप्सको नदी पर बना 2.6 किलोमीटर लंबा, चार लेन वाला फ्रांसिस स्कॉट की ब्रिज उस समय ढह गया, जब श्रीलंका जा रहा 984 फुट लंबा मालवाहक जहाज मंगलवार को तड़के पुल के एक खंभे से टकरा गया।

पुल के गिरने से बाल्टीमोर बंदरगाह पर जहाजों की आवाजाही अनिश्चितकाल के लिए रुक गई है।

अमेरिका के परिवहन मंत्री पीट बटीगीग ने बुधवार को व्हाइट हाउस में संवाददाताओं से कहा, हम स्थानीय आर्थिक प्रभाव को लेकर चिंतित हैं और करीब 8,000 नौकरियां बंदरगाह की गतिविधियों से सीधे तौर पर जुड़ी हैं।

उन्होंने कहा, हम इस क्षेत्र से परे पड़ने वाले प्रभावों को लेकर चिंतित हैं क्योंकि बंदरगाह की हमारी आपूर्ति शृंखला में भूमिका है।

पोत के दुर्घटनाग्रस्त होने से पहले इंजन की नियमित रखरखाव प्रक्रिया चल रही थी: तटरक्षक

अमेरिका के मैरीलैंड राज्य में बाल्टीमोर में एक पुल से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हुए मालवाहक जहाज के इंजन की नियमित रखरखाव प्रक्रिया चल रही थी। तटरक्षक बल ने यह जानकारी दी।

अमेरिकी तट रक्षक रियर एडमिरल शैनन गिलरेथ ने बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि अधिकारियों को सूचित किया गया था कि बिजली गुल होने से पहले जहाज के इंजन की नियमित रखरखाव प्रक्रिया चल रही थी। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को किसी भी समस्या के बारे में सूचित नहीं किया गया।

वहीं, मैरीलैंड राज्य पुलिस अधीक्षक कर्नल रोलैंड एल बटलर जूनियर ने कहा कि नदी में से दो शव निकाले गए हैं। उनके अनुसार, मृतकों की उम्र 35 और 26 वर्ष है।

सिंगापुर के झंडे वाला पोत सोमवार देर रात 2.6 किलोमीटर लंबे फ्रांसिस स्कॉट की ब्रिज के एक खंभे से जा टकराया। जहाज के टकराने के बाद पुल टूट कर नदी में गिर गया था। इस दौरान पुल पर मरम्मत का कार्य कर रहे छह लोग लापता हो गए थे जिन्हें बाद में मृत मान लिया गया था।

बटलर ने कहा कि छह निर्माण श्रमिक मेक्सिको, ग्वाटेमाला, होंडुरास और अल साल्वाडोर के हैं।

दूसरी ओर सिंगापुर में अधिकारियों ने कहा कि वे अमेरिकी अधिकारियों की मदद करने के अलावा, पुल ढहने की अपने स्तर से भी जांच करेंगे।

सिंगापुर के समुद्री और बंदरगाह प्राधिकरण ने बुधवार को कहा कि वह जहाज का प्रबंधन करने वाली कंपनी सिनर्जी मरीन ग्रुप के साथ काम कर रहा है, ताकि इसकी जांच के लिए अमेरिकी तट रक्षक को जानकारी दी जा सके।

इस बीच, पुल के ढहने के बाद बाल्टीमोर बंदरगाह का परिचालन बंद होने के कारण मालवाहक पोत का संचालन करने वाली कंपनियां यह पता लगाने के लिए संघर्ष कर रही हैं कि अब पोतों का माल वह कहां उतार सकती हैं और कहां से उनपर माल चढ़ा सकती हैं। आपूर्ति श्रृंखला विशेषज्ञों का कहना है कि पूर्वी तट के अन्य बंदरगाहों पर बाल्टीमोर जाने वाले पोतों को भेजा जा सकता है जिससे संकट से बचा जा सकेगा।

राज्य ने कहा कि पोतों का संचालन करने वाली 50 से अधिक कंपनियां बाल्टीमोर बंदरगाह के साथ व्यापार करती हैं।

गाज़ा में अंतरराष्ट्रीय डॉक्टरों की टीम युद्ध का बच्चों पर प्रभाव देखकर स्तब्ध रह गई

एपी। देर अल-बला

गाज़ा में अंतरराष्ट्रीय डॉक्टरों की एक टीम इज़राइल की हमास के खिलाफ जंग का प्रभाव फलस्तीनी बच्चों पर देखकर स्तब्ध रह गई।

इज़राइल के हमले में एक नवजात के सिर में गंभीर चोट आई थी जिसके बाद उसकी मौत हो गई। एक अन्य नवजात जिदंगी के लिए लड़ रही है जो उसकी रिश्ते की बहन है। इस हमले में उसका चेहरा बुरी तरह से जख्मी हुआ है।

एक अन्य घटना में 10 वर्षीय लड़का अपने माता-पिता के लिए, दर्द से चिल्ला रहा था और यह नहीं जानता था कि वे हमले में मारे गए हैं। उसके पास उसकी बहन थी लेकिन वह उसे नहीं पहचान सका, क्योंकि बहन का लगभग पूरा शरीर ही जल गया था।

दिल को झकझोर देने वाली घटनाओं का ब्यौरा तान्या हज-हमन ने एसोसिएटिड प्रेस के साथ साझा किया है। वह जॉर्डन की बाल गहन देखभाल डॉक्टर हैं जो देर अल-बला शहर में अल-अक्सा मार्टर्स अस्पताल में आई थीं।

हज-हसन उस टीम का हिस्सा थीं जिसने हाल में दो हफ्ते की ड्यूटी पूरी की है। उनके पास गाज़ा में काम का व्यापक अनुभव है और वे नियमित रूप से युद्ध के विनाशकारी प्रभावों के बारे में बोलती हैं।

लगभग छह महीने के युद्ध के बाद, गाज़ा का स्वास्थ्य ढांचा नष्ट हो गया है। गाज़ा के 36 अस्पतालों में से लगभग एक दर्जन अस्पताल आंशिक रूप से ही काम कर रहे हैं। बाकी या तो बंद हो गए हैं या बमुश्किल काम कर रहे हैं क्योंकि उनके पास ईंधन और दवा खत्म हो गई हैं, उन्हें इज़राइली सैनिकों ने घेर लिया है और उन पर हमले किए हैं, या वे लड़ाई में क्षतिग्रस्त हो गए हैं।

इससे बचे अल-अक्सा मार्टर्स जैसे अस्पताल सीमित आपूर्ति और कर्मचारियों के साथ भारी संख्या में मरीजों का इलाज कर रहे हैं।

जनवरी में अल-अक्सा मार्टर्स में काम करने वाले अंतरराष्ट्रीय डॉक्टरों की एक अलग टीम पास के एक गेस्टहाउस में रुकी थी। लेकिन हाल ही में इज़राइली हमलों में बढ़ोतरी के कारण, हज-हसन और उनके सहकर्मी अस्पताल में ही रुक गए।

इंटरनेशल रेस्क्यू कमेटी की गाज़ा में टीम की अगुवाई कर रहे अरविंद दास ने कहा कि इससे उन्हें स्पष्ट रूप से पता चला कि मरीजों की बढ़ती संख्या के कारण अस्पताल पर कितना दवाब है।

हज-हसन का कहना है कि गाजा के स्वास्थ्य देखभाल संकट को समाप्त करने का एकमात्र तरीका यह है कि युद्ध को रोका जाए।

एआईः रचनात्मकता का संकट गहराने वाला है

360इन्फो। सिडनी

जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस अपने स्रोत को श्रेय देना पसंद नहीं करती। कलाकारों के लिए यही समस्या है।

कुछ ही सालों के भीतर जनरेटिव एआई अचानक से एक नए प्रकार के रचनात्मक उपकरण के तौर पर क्रांतिकारी रूप में सामने आई है।

केवल शब्दों के जरिए थोड़ी सी व्याख्या करने मात्र से अब कोई भी रचना तैयार की जा सकती है। अगर लोग इस क्रांति की तुलना फोटोग्राफी, फोनोग्राफ, सिंथेसाइजर या इंटरनेट से कर रहे हैं तो वे कहीं भी गलत नहीं हैं।

पूर्व की रचनात्मक तकनीकों की तरह ही एआई मौजूदा रचनात्मक प्रक्रियाओं को बाधित कर रही है। लेकिन पारंपरिक रचनात्मक विधियों से मुकाबला करने से कहीं अधिक जनरेटिव एआई टूल्स उन पिछले रचनात्मक कार्यों, कलाकारों के श्रम और उनकी रचनात्मकता का भी शोषण कर रहे हैं जिनका इस्तेमाल कर जनरेटिव एआई को प्रशिक्षण प्रदान किया गया था।

इसलिए इस मुद्दे पर तीखी बहस शुरू हो गई है कि जनरेटिव एआई को प्रशिक्षित करने के लिए इस्तेमाल की गई सामग्री से जुड़े अधिकारों से किस प्रकार निपटा जाना चाहिए।

उभरते हुए एआई दिग्गज, ओपनएआई और स्टेबिलिटीएआई समेत एक खेमे का तर्क है कि जेनरेटिव एआई मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए दुनिया के रचनात्मक संग्रह का इस्तेमाल उचित उपयोग है। उनका कहना है कि क्या ए एआई मॉडल आखिरकार उन लोगों की तरह नहीं हैं जो इतिहास और अपने आस-पास की दुनिया से कला और सौंदर्यशास्त्र के बारे में सीखते हैं?

इस मुद्दे में हिस्सेदारी रखने वाले अन्य लोग कलाकार और अन्य कॉपीराइट धारक हैं। भले ही वे दार्शनिक रूप से इस दृष्टिकोण की सराहना कर सकते हैं (और कई नहीं करते हैं), फिर भी वे इस बात को समझते हैं कि एआई प्रशिक्षण डेटा के रूप में उनके रचनात्मक कार्यों के उपयोग से इनकार करने के उनके मौजूदा बौद्धिक संपदा अधिकार को शामिल किया जाना चाहिए। उनके विचार में, कंपनियों को उनकी अनुमति लेने की जरूरत है।

रचनात्मक उद्योग के लिए स्थिति एक वास्तविक संकट है। रचनात्मक प्रक्रिया से जुड़े विभिन्न पहलू कॉपीराइट अधिकार के दायरे में आते हैं लेकिन जब जनरेटिव एआई कोई रचना तैयार करती है तो इसके लिए कोई स्पष्ट नियम नहीं है कि वह अपने स्रोत को इसका श्रेय दे। इसका एक विकल्प है कि डाटा के लिए एक तय फीस का भुगतान किया जाए।

लेकिन यहां भी सवाल पैदा होता है कि क्या आप अपनी संगीत रचना या तैल चित्र के लिए एक अमरीकी डालर का एक अंश स्वीकार करेंगे जिसका उपयोग किसी ऐसे उत्पाद में किया जाएगा जो बिना क्रेडिट के आपकी रचनात्मक शैली की अंतहीन नकल तैयार कर सकता है?

यही कारण है कि अब बहुत से लोग एआई द्वारा तैयार रचनाओं के लिए श्रेय दिए जाने के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

इलिनोइस में चाकू से हमलाः चार की मौत, सात जख्मी, संदिग्ध हिरासत में

एपी। रॉकफोर्ड (अमेरिका)

अमेरिका के उत्तरी इलिनोइस में चाकू से हमले की एक घटना में चार लोगों की मौत हो गई और सात अन्य जख्मी हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। रॉकफोर्ड पुलिस प्रमुख कार्ला रेड ने बताया कि 22 वर्षीय संदिग्ध पुलिस हिरासत में है और उससे पूछताछ की जा रही है। उन्होंने बताया कि घायलों में शामिल एक शख्स की हालत नाजुक है।

रेड ने पत्रकारों से कहा, इस समय मेरी संवेदना पीड़ित परिवारों के साथ है। उन्होंने कहा कि रॉकफोर्ड पुलिस को स्थानीय समयनुसार बुधवार दोपहर 1.14 बजे पहली फोन कॉल आई थी जिसके बाद कई और लोगों ने कॉल की। पुलिस प्रमुख ने कहा कि फिलहाल अन्य किसी पर घटना में शामिल होने का शक नहीं है और हमें संदिग्ध के इरादे के बारे में अभी जानकारी नहीं है कि उसने ऐसा जघन्य अपराध क्यों किया।

रॉकफोर्ड पुलिस ने शुरू में बताया था कि घटना में पांच लोग जख्मी हुए हैं, लेकिन विन्नेबागो काउंटी शेरिफ कार्यालय में जनसंपर्क अधिकारी कोरी हिलियार्ड ने शाम में बताया कि कुल सात लोग घायल हुए हैं।

अधिकारी के अनुसार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई थी जबकि चौथे ने अस्पताल में दम तोड़ा। पुलिस ने बताया कि मृतकों में 15 वर्षीय एक लड़की, 63 वर्षीय महिला, 49 वर्षीय पुरुष और 22 वर्षीय एक युवक शामिल है। चारों की पहचान उजागर नहीं की गई है।

इस घटना से कुछ दिन पहले रॉकफोर्ड में स्थित वॉलमार्ट में एक किशोर कर्मचारी की स्टोर के अंदर चाकू घोंप कर हत्या कर दी गई थी।

पराग की उम्दा पारी, रॉयल्स का दिल्ली पर राज

● राजस्थान ने कैपिटल्स को 12 रन से हराया

भाषा। जयपुर

राजस्थान रॉयल्स ने इंडियन प्रीमियर लीग टी20 मैच में गुरुवार को यहां दिल्ली कैपिटल्स को 12 रन से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। राजस्थान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट पर 185 रन बनाने के बाद दिल्ली की पारी को पांच विकेट पर 173 रन पर रोक दिया। दिल्ली के लिए ट्रिस्टन स्टब्स ने नाबाद 44 और डेविड वॉर्नर ने 49 रन बनाए। राजस्थान के लिए नांद्रे बर्गर ने और युजवेंद्र चहल ने दो-दो विकेट लिए। इससे पहले रियान पराग की नाबाद 84 रन की ताबड़तोड़ पारी के दम पर राजस्थान रॉयल्स ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) टी20 मैच में गुरुवार को यहां दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ पांच विकेट पर 185 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। रियान ने 45 गेंद की पारी में सात चौके और तीन छक्के लगा कर आईपीएल में अपना सर्वश्रेष्ठ स्कोर बनाया। उनकी ताबड़तोड़ पारी से टीम ने आखिरी सात ओवर में 92 रन जोड़े।राजस्थान की टीम आठ ओवर के बाद 38 रन पर तीन विकेट गंवाकर संघर्ष कर रही थी लेकिन रियान ने रविचंद्रन अश्विन (19 गेंद में 29 रन) के साथ चौथे विकेट के लिए 37 गेंद में 54 और पांचवें विकेट के लिए ध्रुव जुरेल (12 गेंद में 20 रन) के साथ 23 गेंद में 52 रन की आक्रामक साझेदारी कर मैच में टीम की वापसी कराई। उन्होंने शिमरोन हेटमायर (सात गेंद में नाबाद 14 रन) के साथ 16 गेंद में 43 रन की अटूट साझेदारी के दौरान आखिरी ओवर में एनरिच नोर्किया के खिलाफ तीन चौके और दो छक्के लगाकर 25 रन बटोरे।दिल्ली कैपिटल्स के पांचों गेंदबाजों को एक-एक सफलता मिली। खलील अहमद ने 24 और अक्षर पटेल ने 21 रन दिए तो वहीं कुलदीप यादव ने 41, नोर्किया ने 48 और मुकेश कुमार ने 49 रन लुटाए। दिल्ली के तेज गेंदबाजों ने शुरूआत में कसी हुई गेंदबाजी की। मुकेश ने पारी के दूसरे ओवर में यशस्वी जायसवाल को बोल्ड कर टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई। कप्तान संजू सैमसन ने इस गेंदबाज के अगले ओवर में हैट्रिक चौके जड़े लेकिन छठे ओवर में खलील अहमद की गेंद को अपना 100वां आईपीएल मैच खेल रहे ऋषभ पंत के हाथों में खेल गए। पावरप्ले में राजस्थान की टीम दो विकेट पर 31 रन ही बना सकी।दूसरे छोर से रन बनाने के लिए संघर्ष कर रहे जोस बटलर आठवें ओवर में कुलदीप यादव की गेंद पर पगबाधा हो गए। रियान ने नौवें ओवर में अक्षर के खिलाफ चौका जड़ा।

स्कोरबोर्ड

राजस्थान रॉयल्स पारीः जायसवाल बो मुकेश कुमार 05, बटलर पगबाधा कुलदीप 11, सैमसन का पंत बो खलील 15, पराग नाबाद 84,अश्विन का स्टब्स बो अक्षर 29, जुरेल बो नोर्किया 20, हेटमायर नाबाद 14, अतिरिक्तः 07 ,**कुल योगः** (20 ओवर में पांच विकेट पर) 185 रन,**विकेट पतनः**1-9, 2-30 , 3-36 , 4-90, 5-142,**गेंदबाजीः** खलील 4-0-24-1,मुकेश 4-0-49-1, नोर्किया 4-0-48-1,अक्षर 4-0-21-1, कुलदीप 4-0-41-1।

दिल्ली कैपिटल्स पारीःवार्नर का संदीप बो आवेश 49, मार्श बो बर्गर 23, भुई का सैमसन बो बर्गर 00, पंत का सैमसन बो चहल 28, स्टब्स नाबाद 44, पोरेल का बटलर बो चहल 09,पटेल नाबाद 15, अतिरिक्तः 05, **कुल योगः** (20 ओवर में पांच विकेट पर 173 रन),**विकेट पतनः**1-30, 2-30, 3-97, 4-105, 5-122,**गेंदबाजी** बोल्ट 3-0-29-0,बर्गर 3-0-29-2,अश्विन 3-0-30-0,आवेश 4-0-29-1,चहल 3-0-19-2,संदीप 4-0-36-0

जीत की लय बरकरार रखने उतरेंगे आरसीबी और केकेआर

आज होंगे आमने-सामने

भाषा। बेंगलुरू

पिछले मैच में मिली जीत से उनका हौसला बढ़ा है लेकिन प्रदर्शन में परिपक्वता लाना बाकी है और शुक्रवार को आईपीएल 2024 के मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर तथा कोलकाता नाइट राइडर्स अपेक्षा के अनुरूप खेल दिखाने के इरादे से उतरेंगी। आरसीबी ने पिछले मैच में पंजाब किंग्स को चार विकेट से हराया जबकि केकेआर ने सनराइजर्स हैदराबाद को चार रन से मात दी। इसके बावजूद दोनों टीमों की शीर्ष और मध्यक्रम की बल्लेबाजी की समस्याएं बनी हुई हैं। पंजाब के खिलाफ 177 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए स्टार बल्लेबाज विराट कोहली के अर्धशतक से आरसीबी खेमे ने राहत की सांस ली होगी। कप्तान फाफ डु प्लेसी, ग्लेन मैक्सवेल, कैमरन ग्रीन और रजत पाटीदार से अभी अच्छी पारी की उम्मीद है। पंजाब के खिलाफ आखिरी क्षणों में दिनेश कार्तिक का अनुभव और इंपैक्ट खिलाड़ी महिपाल लोमरोर की उपयोगी पारी उनके काम आई। केकेआर के पास अच्छा गेंदबाजी आक्रमण है और एक ईकाई के रूप में अच्छा प्रदर्शन करने पर वे आरसीबी के बल्लेबाजों की परेशानी का सबब बन सकते हैं। आरसीबी के लिए तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज और यश दयाल ने पंजाब के खिलाफ अच्छी गेंदबाजी की लेकिन बाकी गेंदबाजों को बेहतर प्रदर्शन करना होगा। तेज गेंदबाज अलजारी जोसेफ ने पहले मैच में 38 रन दिए और उन्हें कोई विकेट नहीं मिला जबकि दूसरे मैच में 43 रन देकर एक विकेट लिया। ऐसे में आरसीबी खेमा इंग्लैंड के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज रीसे टॉपली को उतार सकता है।

रसेल ने बेहद सख्त कोच करार दिए गए पंडित का बचाव किया

बेंगलुरु। अनुभवी हरफनमौला आंद्रे रसेल ने गुरुवार को कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के मुख्य कोच चंद्रकांत पंडित का समर्थन किया, जिनकी कोचिंग शैली को टीम के पूर्व हरफनमौला डेविड विसे ने बेहद सख्त करार दिया था। विसे अब नामीबिया का प्रतिनिधित्व करते है। उन्होंने दावा किया कि केकेआर टीम के ज्यादातर विदेशी खिलाड़ी पिछले साल आईपीएल के दौरान पंडित की कठिन कार्यशैली से नाराज थे। केकेआर के कोर समूह का अभिन्न हिस्सा जमैका के रसेल की राय हालांकि विसे से अलग है।

सितवाला दूसरी जीत के साथ प्री-क्वार्टर फाइनल में

मुंबई। राष्ट्रीय चैंपियन ध्रुव सितवाल ने गुरुवार को यहां ग्रुप ई मुकाबले में कमल चावला को 667-250 से हराकर ऑल इंडिया सीसीआई बिलियर्ड्स क्लासिक 2024 के प्री-क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। सितवाल की यह लगातार दूसरी जीत है। मुंबई के चैलेंजर रोहन जंबूसरिया ने ग्रुप एफ मैच में पूर्व विश्व चैंपियन कोलकाता के सौरव कोठारी पर 520-403 की शानदार जीत दर्ज की। रेयान रज्मी ने ग्रुप ए मुकाबले में रोविन डिसूजा को 820-234 से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की।

चोपड़ा डायमंड लीग से करेंगे सत्र का आगाज

नई दिल्ली। मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा 10 मई को दिग्गज खिलाड़ियों के बीच प्रतिष्ठित डायमंड लीग सीरीज के दोहा चरण में अपने सत्र की शुरुआत करेंगे। छब्बीस साल के चोपड़ा ने पिछले सत्र का समापन चीन के हांगझोउ में एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक के साथ किया था। इस साल उनका लक्ष्य पेरिस में अपने ओलंपिक स्वर्ण का बचाव करने का होगा। चोपड़ा के अलावा भारतीय खिलाड़ी किशोर जेना भी कतर की राजधानी में होने वाले डायमंड लीग चरण में पदार्पण करेंगे। जेना 2023 बुडापेस्ट विश्व चैंपियनशिप में पांचवे स्थान पर रहे और उन्होने हांगझोउ मे 87.54 मीटर के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ के साथ रजत पदक जीता था।

एसीए ने हनुमा को कारण बताओ नोटिस दिया

बेंगलुरू। आंध्र क्रिकेट संघ ने हनुमा विहारी को कारण बताओ नोटिस जारी किया है जिन्होंने महीना भर पहले प्रदेश संघ पर विवादित ढंग से उन्हें कप्तानी से हटाए जाने का आरोप लगाने के बाद प्रदेश के लिए दोबारा नही खेलने की बात कही थी। कुछ दिन पहले एसीए की शीर्ष परिषद की बैठक के बाद जारी किए गए नोटिस का विहारी ने जवाब नही दिया है। एसीए के एक अधिकारी ने बताया , हमने कुछ दिन पहले उसे नोटिस जारी किया है और जवाब का इंतजार है। उन्होने कहा , हम सिर्फ यह जानना चाहते है कि उन्होने ऐसी प्रतिक्रिया क्यो दी थी।

वॉर्नर, स्टोइनिस, एगर सीए के केंद्रीय अनुबंध से बाहर

मेलबर्न। वनडे और टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह चुके अनुभवी सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर, हरफनमौला एश्टोन एगर और मार्कस स्टोइनिस को वर्ष 2024- 25 के लिए क्रिकेट आस्ट्रेलिया के केंद्रीय अनुबंध से बाहर रखा गया है। विक्टोरिया के सलामी बल्लेबाज मार्कस हैरिस और तेज गेदबाज माइकल नासिर को भी अनुबंध नही मिल सका है। क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू के अनुसार 23 खिलाड़ियो को अनुबंध दिए गए है।

मैं पिछले साल विफलता के बारे में सोच रहा था: रसेल

बेंगलुरु। आंद्रे रसेल ने आईपीएल के शुरुआती मैच मे सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ कोलकाता नाइटराइडर्स के लिए 25 गेद मे 64 रन बनाकर विरोधियो को चेतावनी दे दी है और इस अनुभवी बल्लेबाज ने इस शानदार शुरुआत का श्रेय बदली हुई मानसिकता को दिया। रसेल आईपीएल 2023 मे 14 मैच मे सिर्फ 227 रन बना पाए थे और उन्हे सिर्फ सात विकेट मिले थे। रसेल ने यहां रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के खिलाफ मैच की पूर्व संध्या पर कहा, मेरी मानसिकता सही नही थी (2023 मे)। मै मैदान पर उतरकर जो मै सबसे अच्छा करता हू उसे करने के बारे मे सोचने से अधिक असफलता के बारे मे सोच रहा था। जब आपकी मानसिकता यह होती है कि मै आउट नही होना चाहता, तो मुझे लगता है कि यह मेरे लिए नकारात्मक मानसिकता है। इस ऑलराउंडर ने कहा, मुझे लगता है कि मै खुद को दबाव मे रहने दे रहा था क्योकि मै बहुत ज्यादा सोच रहा था।

सुपरजाइंट्स व किंग्स इलेवन की टीमों ने जमकर बहाया पसीना

● इकाना में तैयारी जोरो पर, सज रहा स्टेडियम

● मैदान के बाहरी रास्ते भी किए जा रहे तैयार

लखनऊ। अब लखनऊ के लोगों को आईपीएल देखने का जुनून चढ़ने लगा है। ऐसा इसलिए क्योंकि अब आन लाइन से लेकर आफलाइन तक लोग टिकट पाने की जुगत लगाने लगे हैं। इकाना स्टेडियम की ओर अब टिकट और मैचों की शेड्यूल की जानकारी करने आने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। ज्ञात हो कि इसबार लखनऊ में सात मैच होने हैं। सात में से छह मैच शनिवार व रविवार को खेले जाएंगे। उधर लखनऊ की अपनी टीम लखनऊ सुपरजाइंट्स ने अपने 30 मार्च को होने वाले मैच के लिए तैयारियां शुरू कर दी है। टीम के सभी खिलाड़ियों ने इकाना स्टेडियम में जमकर पसीना बहाया। वहीं बुधवार कोकिंग्स इलेवन पंजाब की टीम भी नवाबों के शहर पहुंच चुकी वह भी अभ्यास के जरिये अपने को माझेगी। वंही स्टेडियम को सजानें संवराने का काम भी जोरो पर चल रहा है। बैनर व पोस्टरों से पूरे स्टेडियम को संवारा जा रहा है। सुरक्षा व ट्रैफिक को सूचारु रुप से चलानें के लिए जिला व स्टेडियम प्रशासन ने कमर कस लिया है। आम दर्शकों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो इसकी भी व्यवस्था की जा रही है।

इकाना में विशाल हेलमेट का अनावरण

एलएसजी व एसबीआई ने सुरक्षा के महत्व बताया

लखनऊ। एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, देश के सबसे भरोसेमंद निजी जीवन बीमाकर्ताओं में से एक, ने लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के साथ, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी एकाना क्रिकेट स्टेडियम में शानदार विशाल (लार्जर-दैन-लाइफ) हेलमेट इंस्टॉलेशन का उद्घाटन किया। यह स्टेडियम, लखनऊ में टीम का घरेलू मैदान है। इस हेलमेट इंस्टॉलेशन की ऊंचाई 27 फुट और चौड़ाई 34 फुट है और इसे स्टेडियम के मुख्य प्रवेश द्वार पर प्रमुखता से रखा गया है, जो यहां आने वाले क्रिकेट प्रेमियों और शहर की बड़ी आबादी के लिए खूबसूरत नजारे जैसा है। ऐसे भव्य पैमाने पर हेलमेट का ढांचे तैयार करने का उद्देश्य है, मैदान के भीतर और बाहर सुरक्षा के महत्व के बारे में प्रगतिशील संवाद को बढ़ावा देकर जीवन बीमा की जरूरत और महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना। क्रिकेट प्रेमियों का ध्यान आकर्षित करते हुए, इस अनूठी संरचना का उद्देश्य लखनऊ शहर के निवासियों को यह बताना है कि लाइफ की प्रोटेक्शन से बड़ा कुछ नहीं। इस विशाल हेलमेट के अनावरण के अवसर पर एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस के ब्रांड, कॉरपोरेट कम्युनिकेशन और सीएसआर प्रमुख, रवींद्र शर्मा, डीसीपी ट्रैफिक, लखनऊ सलमानताज जफर ताज पाटिल, कमलेश कुमार दीक्षित, डीसीपी महिला अपराध सुरक्षा, लखनऊ, राहुल राही, क्षेत्रीय निदेशक-लखनऊ, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस और केशव महाराज, एलएसजी के खिलाड़ी तथा अन्य सम्मानित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस पहल के बारे में, सीएसआर प्रमुख, रवींद्र शर्मा ने कहा, कि एकाना क्रिकेट स्टेडियम में विशाल (लार्जर-दैन-लाइफ) हेलमेट इंस्टॉलेशन क्रि केट प्रेमियों को सुरक्षा की अवधारणा से रू-ब-रू कराता है और यह लखनऊ में महत्वपूर्ण संवाद की शुरुआत करने में मदद करेगा।

कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या आईपीएल क्रिकेट है : अश्विन

भाषा। नई दिल्ली

भारत के शीर्ष स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का मानना है कि आईपीएल इतना विशाल हो गया है कि कभी-कभी क्रिकेट पीछे चला जाता है और खिलाड़ियों के लिए ट्रेनिंग और विज्ञापन शूटिंग के बीच तालमेल बैठाना मुश्किल हो जाता है।

अश्विन ने 2008 में शुरुआत के बाद से आईपीएल की जबरदस्त प्रगति और दो महीने तक चलने वाली प्रतियोगिता के दौरान एक खिलाड़ी के जीवन की कठिनाई पर बात की। अश्विन ने क्लब प्रेयरी फायर पॉडकास्ट पर कहा, आईपीएल में आने वाले एक युवा खिलाड़ी के रूप में मैं केवल बड़े सितारों से सीखना चाहता था। मैंने यह नहीं सोचा था कि आईपीएल अगले 10 वर्षों में कैसा दिखेगा।

रॉयल्स ने प्रसिद्ध कृष्णा की जगह केशव महाराज को टीम में शामिल किया

नई दिल्ली। राजस्थान रॉयल्स ने गुरुवार को मौजूदा इंडियन प्रीमियर लीग के लिए तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा के स्थान पर दक्षिण अफ्रीका के बाएं हाथ के सीनियर स्पिनर केशव महाराज को अपनी टीम में शामिल किया। आईपीएल ने गुरुवार को कहा कि कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने भी चोटिल मुजीब उर रहमान के विकल्प के तौर पर अफगानिस्तान के 16 वर्षीय ऑफ स्पिनर अल्लाह गजनफर को टीम में शामिल किया है। गजनफर ने दो एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में अफगानिस्तान का प्रतिनिधित्व किया है। इस युवा खिलाड़ी ने तीन टी20 और छह लिस्ट ए मैच खेले है और उनके नाम क्रमशः पांच और चार विकेट है। वह अपने आधार मूल्य 20 लाख रुपए में केकेआर में शामिल हुए। प्रसिद्ध की हाल में जांघ की सर्जरी हुई है और वह अभी इससे उबर रहे हैं। उनके स्थान पर रॉयल्स की टीम में आए महाराज ने 27 टी20, 44 वनडे और 50 टेस्ट खेले है और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मे 237 विकेट लिए है।

लय की तलाश में हार्दिक पंड्या

नई दिल्ली। हार्दिक पंड्या के दूसरी बार मुंबई इंडियन्स से जुड़ने के बाद टीम ने टूर्नामेंट में अब तक सिर्फ दो मैच खेले हैं लेकिन ऐसा लगता है कि उनके सामने काफी समस्याएं हैं और अब तक वह कप्तानी में भी सहज नजर नहीं आए हैं। मौजूदा राष्ट्रीय टीम में सबसे बड़े मैच विजेताओं में से एक ऑलराउंडर हार्दिक उन्हें निखारने वाली टीम से दोबारा जुड़ने के बावजूद आईपीएल में असहज नजर आ रहे हैं। हार्दिक को मुंबई में सबके चहेते रोहित शर्मा की जगह कप्तान बनाया गया है जिससे लोगों में उनके प्रति नाराजगी भी है। नतीजों ने चीजों को और बदतर बना दिया है। दो मैच, दो हार और कुछ साधारण रणनीति ने हार्दिक को मुश्किल में डाल दिया है जबकि उनकी स्वयं की खराब फॉर्म ने मुसीबत बढ़ा दी है। तीस साल के हार्दिक की कप्तानी को हालांकि फिलहाल कोई खतरा नहीं है क्योंकि आईपीएल की सबसे अधिक स्थानांतरण राशि पर उन्हें टीम में लाने के बाद मुंबई इंडियन्स के मालिक जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं करना चाहते। मुंबई की टीम टूर्नामेंट में धीमी शुरूआत करती रही है और लय हासिल करने में समय लेती है तथा ऐसे में हार्दिक को टूर्नामेंट की शुरुआत में ही चुका हुआ मान लेना सही नहीं होगा क्योंकि आखिरकार वह पांच बार की चैंपियन टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। पिछले तीन सत्र में चूकने के बाद मुंबई सफलता के लिए बेताब है लेकिन टीम इस तथ्य से भी मुंह नहीं मोड़ सकती कि हार्दिक गलतियां कर रहे हैं और उनके पास ऐसा कोई नहीं है जो इसमें सुधार कर सके। गुजरात टाइटंस का कप्तान रहने के दौरान उनके पास आशीष नेहरा थे जो ठोस रणनीतियां बनाने के लिए जाने जाते हैं।

सूर्यकुमार को मैच फिट होने में कुछ और दिन का समय लग सकता है: बीसीसीआई सूत्र

नई दिल्ली। दुनिया के नंबर एक टी20 बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव स्पोर्ट्स हर्निया की सर्जरी से पूरी तरह नही उबर पाए है और आईपीएल के कुछ और मैचो मे नही खेल पाएंगे। राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) उनकी प्रगति पर नजर रखे हुए है। मुंबई इंडियन्स के लिए खेलने वाले सूर्यकुमार मौजूदा सत्र मे अब तक कोई मैच नही खेल पाए है और उनकी टीम को दोनो मुकाबलों मे हार का सामना करना पड़ा है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सूत्र ने कहा, सूर्या (सूर्यकुमार) काफी अच्छी प्रगति कर रहा है और काफी जल्द मुंबई इंडियन्स की ओर से वापसी करेगा। शुरुआती दो मैच मे नही खेल पाने के बाद हालांकि उसे कुछ और मुकाबलों से बाहर रहना पड़ सकता है। मुंबई इंडियन्स को सूर्यकुमार की कमी खल रही है लेकिन बीसीसीआई इस आक्रामक बल्लेबाज की फिटनेस को लेकर कोई जोखिम नही उठाना चाहता क्योंकि जून मे वेस्टइंडीज और अमेरिका मे होने वाले टी20 विश्व कप मे उनके बड़ी भूमिका निभाने की उम्मीद है। सूत्र ने कहा, बीसीसीआई के लिए मुख्य चिंता यह है कि वह टी20 विश्व कप मे खेलने की राह पर है या नही और वह इस स्थिति मे है।

मेनन लगातार पांचवें साल आईसीसी एलीट पैनल के अंपायर बने रहेंगे, ब्रॉड एलीट रेफरी पैनल से बाहर

दुबई। भारत के नितिन मेनन लगातार पांचवी बार अंपायरो के आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) एलीट पैनल मे शामिल हुए जबकि बांग्लादेश के शरफुद्दौला इब्ने शाहिद इस सूची मे जगह बनाने वाले अपने देश के पहले अंपायर बने। इंदौर के मेनन 2020 मे कोविड-19 महामारी के दौरान मे एलीट पैनल मे शामिल हुए थे। वह गुरुवार को 2024-25 सत्र के लिए जारी आईसीसी की 12-सदस्ईय अंपायरो की सूची मे एकमात्र भारतीय बने हुए है। एस रवि और पूर्व स्पिनर एस वेंकटराघवन के बाद एलीट पैनल का हिस्सा बनने वाले वह केवल तीसरे भारतीय है। रवि ने 33 जबकि वेंकटराघवन ने 73 टेस्ट मे मैदानी अंपायर की भूमिका निभाई है। मेनन 23 टेस्ट, 58 वनडे और 41 टी20 (कुल मिलाकर 122 मैच) मे मैदानी अंपायर रहे है। उम्मीद है कि वह अमेरिका और वेस्टइंडीज मे टी20 विश्व कप के दौरान वेंकटराघवन के 125 मैचों मे अंपायरिंग करने के भारतीय रिकॉर्ड को पीछे छोड़ देंगे। मेनन ने पिछले साल एशेज मे अंपायरिंग करने का अपना सपना भी साकार किया था। संन्यास ले चुके मराइस इरासमस की जगह बांग्लादेश के शारफुद्दौला को आईसीसी अंतरराष्ट्रीय अंपायर पैनल से पदोन्नत किया गया है। शारफुद्दौला 2006 से अंतरराष्ट्रीय पैनल मे है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनवरी 2010 मे बांग्लादेश और श्रीलंका के बीच वनडे मैच से अंपायरिंग पदार्पण किया था। वह अब तक 10 टेस्ट, 63 वनडे और 44 टी20 अंतरराष्ट्रीय मे मैदानी अंपायर की भूमिका निभा चुके है।

दुबई वाटर स्पोर्ट्स को भी देगा बढ़ावा

मुंबई। दुबई पर्यटकों के लिए ढेरों संभावनाएं लेकर आया है और आपके स्प्रिंग-समर को यादगार बनाने के लिए तैयार है। दुबई अपने बीचों पर वाटर स्पोर्ट्स का आनंद देगा। सूरज की धूप और काईट बीच के क्रिस्टल-क्लीयर पानी तथा दूर तक फैली सुनहरी रेत के नजारों का आनंद उठा सकते हैं। इस बीच पर रिलेक्स करना आनंददायी अनुभव होगा और रोमांचक वॉटर स्पोर्ट्स आपको तरोताजा कर आपके दिन को यादगार बना देंगे। आप रोमांच प्रेमी है या खाने के शौकीन या प्रकृति प्रेमी, दुबई में हर किसी के लिए कुछ न कुछ जरूर है। तो दुबई के जादू में खो जाने के लिए तैयार हो जाएं क्योंकि हम आपके लिए लेकर आए हैं शानदार स्प्रिंग-समर गाईड जो आपकी छुट्टियों को यादगार बना देगी। रेगिस्तान के टीलों पर अनूठी हॉट एयर बैलून राईड आपकी दुबई की यात्रा को यादगार बना देगी। तो बैलून के साथ एडवेंचर की सवारी पर निकल जाएं और बादलों के बीच उड़ान भरते हुए धरती के आकर्षक नजारों का लुत्फ उठाएं। बाचिर में आप ताजी चर्न्ड आईसक्रीम के स्कूप का आनंद उठा सकते हैं। हट्टा फोर्ट होटल और जीवंत हट्ट वाडी हब के नजदीक, हट्टा डैम दुबई के लिए आकर्षक गेटवे है। पहाड़ों के खूबसूरत नजारों से घिरा और पानी से सुशोभित यह स्थान रास्ते में आने वाले रेगिस्तानी नजारों से एकदम विपरीत है। एक्वावेंचर दुबई का प्रमुख वॉटरपार्क है जहां आप एक्वेटिक रोमांच का अनुभव पा सकते हैं! 105 स्लाईड्स और राईड्स के साथ यहां आप पानी में खूब मस्ती कर सकेंगे। दुबई के रेगिस्तान के सुनहरे टीलों पर आप इस अनूठे रोमांच का अनुभव पा सकते हैं।

आरसीबी के बल्लेबाजी कोच मैकेंजी को उम्मीद, जल्द लय हासिल करेंगे मैक्सवेल

बेंगलुरु। ग्लेन मैक्सवेल ने इस आईपीएल के मौजूदा सत्र मे दो मैचो मे सिर्फ छह गेंदो का सामना करते हुए तीन रन बनाए है लेकिन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बल्लेबाजी कोच नील मैकेंजी ने गुरुवार को उम्मीद जताई कि ऑस्ट्रेलिया का यह ऑलराउंडर जल्द ही अपनी लय हासिल कर लेगा।मैक्सवेल चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ पहली ही गेंद पर शून्य पर आउट हो गए, जबकि वह अपने पसंदीदा चिन्नास्वामी स्टेडियम मे भी प्रभावित नही कर सके।मैकेंजी ने केकेआर के खिलाफ शुक्रवार को होने वाले मैच की पूर्व संध्या पर कहा, आप जानते है, यह क्रिकेट है। यहां उतार-चढाव होता रहता है। अभी सिर्फ दो मैच हुए है।

कभी सोचा नहीं था कि क्रिकेटर बनूंगा, मुफ्त पढाई के लिए खेल से जुड़ा : बर्गर

जयपुर। दक्षिण अफ्रीका के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज नांद्रे बर्गर कभी क्रिकेटर बनना नही चाहते थे बल्कि मुफ्त पढाई के लिए उन्होंने खेल को चुना। उन्हे 2014 मे क्रिकेट ट्रायल के जरिए विटवाटर्सरेंड यूनिवर्सिटी मे दाखिला और पूरी स्कॉलरशिप मिली। उसके बाद से उन्होने मुड़कर नही देखा। दक्षिण अफ्रीका के 28 वर्ष के तेज गेंदबाज बर्गर ने पिछले साल दिसंबर मे राष्ट्रीय टीम मे पदार्पण किया। राजस्थान रॉयल्स ने उन्हे 50 लाख रूपए मे खरीदा जबकि उन्होंने पिछले महीने एसए20 मे भी जोहानिसबर्ग सुपर किंग्स के लिए खेला था। बर्गर ने ईएसपीएन क्रिकइन्फो से कहा , अजीब लगता है ना।

सचिन ने किया ल्युमिनस फैक्ट्री का उद्घाटन

रूद्रपुर। स्थायित एवं सोलर समाधानों को सशक्त बनाने की दिशा में बड़ा कदम बढ़ाते हुए भारत की प्रमुख उर्जा समाधान कंपनी ल्युमिनस पावर टेक्नोलॉजीज़ ने उद्योग जगत में पहली बार उत्तराखण्ड के रूद्रपुर में सोलर पैनल फैक्ट्री का उद्घाटन किया। इस अवसर सचिन भी उपस्थित रहे। सकारात्मक बदलावों में योगदान देने के प्रयास में कंपनी का यह कदम माननीय प्रधानमंत्री द्वारा पीएम सूर्योदय योजना के लॉन्च के दौरान संरेखित सोलर दृष्टिकोण एवं स्थायित्व के उद्देश्यों के अनुरूप है। सोलर पैनल निर्माण में नई प्रगति से युक्त इस युनिट की आधुनिक टेक्नोलॉजी और बुनियादी सुविधाओं को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि ये अधिकतम प्रभाविता एवं पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव को सुनिश्चित करेगी। ल्युमिनस के ब्राण्ड अम्बेसडर और क्रिकेट के दिग्गज सचिन तेंदुलकर ल्युमिनस पावर टेक्नोलॉजीज़ की सीईओ एवं एमडी प्रीती बजाज तथा ल्युमिनस बोर्ड के चेयरमैन एवं श्नाइडर इलेक्ट्रिक में इंटरनेशनल ऑपरेशन्स के वाईस प्रेज़ीडेन्ट मनीष पंत मौजूद रहे। इस अवसर पर मिस प्रीति बजाजए एमडी एवं सीईओए ल्युमिनस पावर टेक्नोलॉजीज़ ने कहा कि रूद्रपुर में ग्रीन सोलर पैनल फैक्ट्री भारत के शुद्ध शून्य उद्देश्यों में ल्युमिनस की बड़ी भूमिका की दिशा में उल्लेखनीय कदम है।

लखनऊ के थ्रो बॉल खिलाड़ियों का सम्मान

लखनऊ। 44वीं सीनियर नेशनल थ्रो बॉल चैंपियनशिप में हिस्सा लेने वाली उत्तर प्रदेश टीम में शामिल रहे लखनऊ के थ्रो बॉल खिलाड़ियों को थ्रो बॉल एसोसिएशन ने सम्मानित किया। लखनऊ के इन खिलाड़ियों को बुधवार को केडी सिंह बाबू स्टेडियम में लखनऊ मंडल के क्षेत्रीय क्रीड़ाधिकारी अजय कुमार सेठी ने सम्मानित किया। उन्होंने खिलाड़ियों को कहा कि आपको इस चैंपियनशिप से सबक लेते हुए आगे की तैयारी करनी है ताकि अगली चैंपियनशिप में आप के प्रदर्शन में सुधार हो सके। लखनऊ थ्रो बॉल एसोसिएशन के सचिव मो तौहीद ने बताया कि 44वीं सीनियर नेशनल थ्रो बॉल चैंपियनशिप आरा बिहार में गत 14 से 16 मार्चए 2024 तक हुई थी।इसमें प्रतिभाग करने वाली यूपी टीम में बालकों में लखनऊ के निखिल कुमार सिंह रानाए आदर्श बाजपेयी जबकि बालिकाओं में लखनऊ की स्नेहा वर्मा, शुभी त्रिवेदी, कर्तव्य त्रिपाठी व आंचल विश्वकर्मा शामिल थे। इस अवसर पर क्रीड़ाधिकारी आनंद श्रीवास्तव एवं उपक्रीड़ाधिकारी निशीथ दीक्षित भी मौजूद थे।

धारा की शतकीय पारी से पूर्वी क्षेत्र का दबदबा

पुणे। धारा गुज्जर की 140 रन की शानदार पारी से पूर्वी क्षेत्र गुरुवार को यहां सीनियर वुमेन इंटर-जोनल मल्टी-डे ट्रॉफी के पहले दिन पूर्वोत्तर क्षेत्र के खिलाफ आठ विकेट पर 385 रन बनाए। महिला घरेलू क्रिकेट में छह साल के बाद लाल गेंद प्रारूप की वापसी हो रही है। पूर्वी क्षेत्र की कप्तान दीप्ति शर्मा ने इस तीन दिवसीय मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। धारा और विकेटकीपर-बल्लेबाज उमा छेत्री ने पहले विकेट के लिए 97 रन की साझेदारी कर टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई। उमा तीन रन से अर्धशतक से चूक गई।

सिंधू मैड्रिड मास्टर्स के क्वार्टर फाइनल में

● युगल में भारतीय जोड़ियां सफल

भाषा। मैड्रिड

भारत की दिग्गज बैडमिंटन खिलाड़ी पी वी सिंधू ने मैड्रिड स्पेन मास्टर्स में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए गुरुवार को यहां चीनी ताइपे की हुआंग यू-हसुन पर सीधे गेम में आसान जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। इस मुकाबले में पूरी तरह से सिंधू का दबदबा दिखा जिन्हें विश्व रैंकिंग में 63वें स्थान पर काबिज ताइवान की क्वालीफायर खिलाड़ी से कोई चुनौती नहीं मिली। पूर्व विश्व चैम्पियन सिंधू ने 36 मिनट तक चले मैच को 21-14, 21-12 से अपने नाम किया। पिछले सत्र की उपविजेता सिंधू के सामने अब थाईलैंड की छठी वरीयता प्राप्त सुपानिदा केटथोंग या जापान की नात्सुकी निदाइरा में से किसी एक की चुनौती होगी। भारत के एमआर अर्जुन और ध्रुव कपिला का भी दिन अच्छा रहा और उन्होंने स्कॉटलैंड के क्रिस्टोफर ग्रिमली और मैथ्यू ग्रिमली पर 21-17 21-19 से जीत के साथ पुरुष युगल क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। बी सुमीथ रेड्डी और एन सिक्की रेड्डी की मिश्रित युगल जोड़ी ने अमेरिका के प्रेस्ली स्मिथ और एलीसन ली पर 22-20 21-18 से जीत के साथ अंतिम आठ में जगह पक्की की। तीसरी वरीयता प्राप्त तनीषा क्रैस्टो और अश्विनी पोनप्पा की जोड़ी ने महिला युगल में ऑस्ट्रेलिया की टिफनी हो और ग्रोन्या सोमरविले पर 21-14, 21-8 से जीत दर्ज कर अंतिम आठ में जगह बनाई। कृष्ण प्रसाद गारगा और साई प्रतीक की पुरुष युगल को हालांकि निराशा का सामना करना पड़ा। इस जोड़ी को पोपोव बंधुओं (क्रिस्टो और टोमा जूनियर) से 16-21, 21-15, 16-21 से हार का सामना करना पड़ा। सिंधू ने शुरुआती गेम में 3-0 की बढ़त बनाई लेकिन इसके बाद उन्होंने कुछ समय के लिए लय गंवा दी। वह लगातार शटल को नेट पर खेल रही थी जिससे उनकी बढ़त घट कर 7-6 हो गई। भारतीय खिलाड़ी ने हालांकि इसके बाद अपने खेल के स्तर को उंचा किया और प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी की गलतियों का फायदा उठाते हुए अपनी बढ़त को 18-12 करने में सफल रही। सिंधू ने इसके बाद आठ गेम प्वाइंट हासिल किए और तीसरे प्रयास में उसे भुना कर पहला गेम जीत लिया। छोर बदलने के बाद भी यू-हसुन का संघर्ष जारी रही।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाषः 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5,बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाषः011-69342500।